

THE TRUE KNOWLEDGE OF GOD
HAQIQI IRFAN

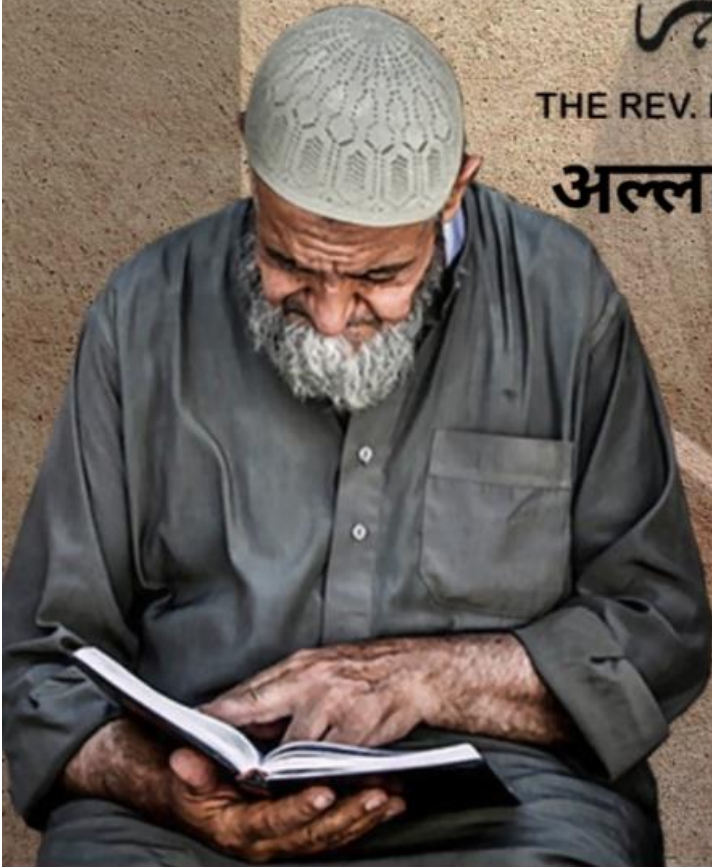
حَقِيقَةُ الْإِرْفَانِ

हकीकी इफ़ान

عَلَمَةُ عَمَّاخَالِدٍ مِّنَ الْأَمْرَةِ

THE REV. MAWLAWI DR. IMAD UD-DIN LAHIZ

अल्लामा इमादुद्दीन लाहिज़



1869

Haqiqi Irfan

The True Knowledge of God

The Rev. Mawlawi Dr. Imad ud-Din Lahiz

Contains Twelve Essays in which Christ and Christ's Religion are unfolded; and it is a guide for inquirers after Truth.

हकीकी इफ़ान

अल्लामा मौलवी पादरी इमाद-उद्दीन लाहिज़ साहब

1869



REV. MAULVIE IMADUDDIN LAHIZ, D.D.

1830-1900

फेहरिस्त मज़ामीन

फेहरिस्त मज़ामीन	4
रिसाला अद्वल (1)	6
आदम-ए-सानी	6
आदमे अद्वल आदम सानी	8
रिसाला दोम (2)	14
आदम-ए-सानी से पैवस्त होना.....	14
रिसाला सोम (3)	25
आदम-ए-सानी यानी मसीह खुदावन्द के फ़ज़ाइल में.....	25
रिसाला चहारुम (4)	35
54 पेशीन गोइयों के ज़िक्र में.....	35
रिसाला पंजुम (5)	47
खुदावन्द मसीह के मोअजज़ात के बयान में	47
रिसाला शश्म (6)	55
हज़रत मसीह की बहुत सी पेशीन गोइयों में से 14 पेशीन गोइयों को ज़िक्र.....	55
रिसाला हफ़्तुम (7)	65
मसीह की तक्ररि का ग़लबा	65
रिसाला हश्तम (8)	74
मौत के बयान में	74
पहला मज़मून.....	74
मौत के बयान में	74
जिस्मानी मौत का बयान.....	77
दूसरी मौत.....	80
रिसाला नहम (9)	86
ईमान के बयान में.....	86
रिसाला दहुम (10)	97
इस अम्र के बयान में कि नजात क्या चीज़ है?.....	97
मसीही नजात का बयान.....	100

रिसाला याज़दहुम (11)	107
आस्मानी मुहब्बत के बयान में.....	107
रिसाला दवाज़दहुम (12)	118
खुदा की बुजुर्गी और जलाल के बयान में.....	118

रिसाला अक्वल (1)

आदम-ए-सानी

जब हमारे मुनज्जी ने अपनी इस मुफ़्त्विज़ा (सुप्रद की हुई) खिदमत को जिसके अंजाम देने के लिए आप मबऊस (नबी का भेजा जाना) हुए थे। पूरा किया तो अपने सऊद (आस्मान पर जाना) से पहले अपने शागिर्दों को ये हुकम दिया कि:-

“आस्मान और ज़मीन का कुल इख्तियार मुझे दिया गया है। पस तुम जा कर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ और उन्हें बाप और बेटे और रूह-उल-कुद्स के नाम पर बपतिस्मा दो। और उन्हें ये ताअलीम दो कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुमको हुकम दिया है। और देखो मैं दुनिया के आखिर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।” (मत्ती 28:18-20)

इस हुकम को सुनते ही आपके शागिर्द जो खुदा के सच्चे और बर्गुज़ीदा (चुने हुए) रसूल थे। मसीहियत की तब्लीग (खुदा का हुकम पहुंचाना) के लिए अतराफ़ व इकनाफ़ आलम (दुनिया के किनारे) में जा पहुंचे। और इस हुकम की तामील में इस क़द्र सरगर्म थे, कि क़रीबन सब के सब इसी राह में शहीद हुए लेकिन तब्लीग का काम कभी बंद ना रहा बल्कि ताबईन (रसूलों के शागिर्द) और तबा ताबईन (रसूलों की फ़ित्रत वाले शागिर्द) ने इस खिदमत को अपना अक्वलीन फ़र्ज़ समझा और इन्जील जलील की बशारत सुनाते सुनाते हिंदुस्तान तक आ पहुंचे। यूं तो जिस मुल्क में उनका क़दम पहुंचा वहीं खैरो बरकत उनकी हम-रकाब (हमसफ़र) है लेकिन हिन्दुस्तान में उनकी बशारत से जो असर हुआ। इस का अंदाज़ा इस से सच्च हो सकता है, कि सैंकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों खानदान मसीहियत के हल्का-ब-गोश (फरमाबरदार) हो चुके हैं।

ताहम हमारे हिंदुस्तान में बक़स्रत ऐसे अशखास मौजूद हैं जो इस दौलत-ए-लाज़वाल से अभी तक महरूम हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि उन अहबाब (दोस्तों) के लिए जवाब तक इस नेअमते अज़मा (बड़ी नेअमत) से महरूम हैं एक ऐसा रिसाला लिखूँ जो बिल-खुसूस रब्बना अल-मसीह की तकदीम (फ़ज़ीलत) का खुलासा और बाईस मुक़द्दस मुतालिब के समझने का आला हो। और नीज़ सब नाज़रीन पर बात वाज़ेह हो जाये कि

हम ईसाई जो खुदा का कलाम सुना रहे हैं तरह तरह की तकलीफें और अज़ीयतें उठाते हैं और मुतअस्सिबों (मज़हब की बेजा हिमायत करने वाले) के लान व तान हर वक़्त रहते हैं आखिर क्यों और किस लिए? हम नाज़रीन की खिदमत में इन्किसारी के साथ अर्ज़ करते हैं कि हमारे मददुआ (मक्सद) समझने में उजलत (जल्दबाजी) ना करें। हम ये नहीं कहते हैं, कि बिला सोचे समझे आप हमारी बात मान लें बल्कि हमारा मुद्दआ ये है कि जो कुछ हम अर्ज़ कर रहे हैं आप उस पर गौर करें अगर माकूल (मुनासिब) हो और कुबूल करने के लायक हो तो आप उस को तस्लीम करें वरना आप मुख्तार हैं।

भाइयो हम सब ब-हैसियत इन्सान उस आदम के फ़र्ज़न्द हैं जिससे गुनाह सरज़द हुआ इसलिए हम सब विरासतन (बाप दादा से) गुनेहगार हैं और कसबन (खूद अमल करके) हमने बहुत कुछ इस पर इज़ाफ़ा किया है पस हम बिल्कुल नालायक और गुनेहगार और काबिल-ए-सज़ा हैं। हमारी इबादत, बंदगी, नमाज़, रोज़ा, ख़ैरात, वगैरह भी इस लायक नहीं कि खुदा की दरगाह में मक्बूल हो सके हमारे तमाम काम निकम्मे और गंदे हैं कोई अक़लमंद इन पर भरोसा नहीं रख सकता है। बल्कि हमारा ही दिल उन पर भरोसा कर के इत्मीनान हासिल नहीं कर सकता। अगरचे शर्त अबूदियत (इबादत) ये ही है कि इस की इताअत हत्त-उल-मक्दूर (जहां तक हो सके) की जाये तो भी हमारी इबादत इस लायक नहीं जिस पर भरोसा कर के उस कुद्दूस की अदालत में जा खड़े हों चुनान्चे हज़रत दाऊद फ़र्माते हैं कि “खुदावन्द आस्मान पर से बनी-आदम पर निगाह करता है ताकि देखे कि इनमें कोई दानिशमंद खुदा का तालिब है या नहीं वो सब के सब गुमराह हैं और सब के सब बिगड़ गए हैं कोई नेको कार नहीं एक भी नहीं।” (ज़बूर 14:2-3)

चुनान्चे हज़रत पौलुस रसूल भी यही फ़र्माते हैं कि “क्या हुआ क्या हम कुछ फ़ज़ीलत रखते हैं बिल्कुल नहीं क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर पेशतर ही ये इल्ज़ाम लगा चुके हैं कि वो सब के सब गुनाह के मातहत (नीचे, ताबे) हैं। चुनान्चे लिखा है कि कोई रास्तबाज़ नहीं एक भी नहीं कोई समझदार नहीं कोई खुदा का तालिब नहीं सब गुमराह हैं सब के सब निकम्मे बन गए कोई नेको कार नहीं एक भी नहीं उनका गला खुली हुई कब्रें हैं। उन्होंने अपनी ज़बानों से फ़रेब दिया उन के होंटों में साँपो का ज़हर है। उनका मुँह लानत और कड़वाहट से भरा है उन के क़दम खून बहाने के लिए तेज़-रौ हैं। उन की राहों में तबाही और बदहाली है। और वो सलामती की राह से वाक़िफ़ ना हुए उन की आँखों में खुदा का ख़ौफ़ नहीं।” (रोमीयों 3:9, 18)

अल-गर्ज जिन पर लफ़ज़ इन्सान का इतलाक़ हो सकता है उन पर गुनाह का भी इतलाक़ हो सकता है ख़्वाह नबी हो या वली (ख़ुदा के करीब) ऋषि (ख़ुदा-परस्त, दरवेश) हो या मुनी (ज़ाहिद, परहेज़गार) सब के सब गुनेहगार हैं। अब सवाल ये है कि हमारी क्या हालत होगी, जब ख़ुदा की ज़ात पर गौर करते हैं तो वो सरासर पाक है और गुनाहों से बेहद नफ़रत करता है। और जब अपनी तरफ़ देखते हैं तो हमारी ये कैफ़ीयत है कि हम सरासर नापाक हैं और गुनाहों की तरफ़ माइल। पस हम में और ख़ुदा में किस तरह रब्त और इतिहाद, मुवाफ़िक़त और मुवासलत (पैवस्ता होना) पैदा हो।

और ये भी ख़ूब साबित हो चुका है कि इन्सान अपनी ताक़त से नजात हासिल नहीं कर सकता है अगरचे ख़ुदा बेशक़ रहीम भी है लेकिन सिर्फ़ रहमत पर भरोसा कर के बैठे रहना और उस की अदालत का लिहाज़ ना रखना भी बड़ी जहालत है पस इस मुश्किल को जो हमारे सामने आ पड़ी है हम किसी सू़रत से दफ़ाअ नहीं कर सकते हैं बजुज़ इस के कि तमाम मज़ाहिब की किताबों को पढ़ें और तमाम हादियान दीन (दीन के रहनुमा) की हिदायात पर गौर करें और देखें कि वो क्या कहते हैं और जिस मज़हब की किताब में नजात का मुकम्मल बंदो-बस्त हो और रहम व अदालत को मुताबिक़ कर दिखाए और जिसकी ताअलीम भी मुहक्किक़ाना (तहकीक़ शूदा) हो और रूह के तकाज़े को भी पूरा करे। और मिन्जानिब अल्लाह होने की दलाईल रखती हो हम उस को बसदक़ दिल इन्तिखाब करें और उस की पाबंदी में अपनी बाकी उम्र सर्फ़ कर डालें।

पस जहां तक हमारी तहकीक़ात का ताल्लुक़ है। हमने सिर्फ़ बाइबल मुक़द्दस ही को इन सिफ़ात के साथ मौसूफ़ (क्राबिल-ए-तारीफ़) पाया। और बिला तास्सुब (बग़ैर मज़हब की बेजा हमायत) और बरमला ये कह सकते हैं कि सिर्फ़ बाइबल मुक़द्दस ही ख़ुदा का सच्चा कलाम है। लिहाज़ा अब हम इस की पाक ताअलीम का ख़ुलासा लिखना शुरू करते हैं और नाज़रीन से दरख़्वास्त करते हैं कि वो ठंडे दिल से इस पर गौर करें क्योंकि हकीकी इफ़ान यही है। अब ख़ुदा का फ़ज़ल हम सब के शामिल-ए-हाल हो।

आदमे अद्वल आदम सानी

हक़ सज्जाद तआला जो अज़ली और अबदी ख़ुदा है इरादा किया कि अपनी अज़मत और कुद्रत का इज़हार करे पस उस ने ज़मीन और आस्मान को और सब कुछ

जो उन में है अपने अज़ली कलमे की वसातत (वसीले) से पैदा किया और आदम का पुतला मिट्टी से बना कर ज़िंदगी की रूह इस में फूंक दी और उस को फ़ाइल मुख्तार होने का हक़ देकर बागे अदन में रखा और उस की पसली में से एक औरत पैदा कर के उस के साथ कर दी ता कि उस की अनीसा (मुहब्बत रखने वाली) हो और हुक्म दिया कि उस दरख्त से जिसका खाना मना है। ना खाना वर्ना मर जाओगे।

शैतान लईन (लानती) ने जो रांदा दरगाह एज़दी (खुदा के हुजूरी से निकाला हुआ) और फ़ाइल मुख्तार फ़रिश्ता था वक़्त को ग़नीमत समझ कर हव्वा के पास आकर उस को फ़रेब देना चाहा चुनान्चे हव्वा उस के फ़रेब में आ गई और शजरे मम्नूआ में से खुदा भी खाया और अपने शौहर को भी खिलाया। लिहाज़ा मौत का उन पर तारी होना लाज़िमी अम्र था पस खुदा ने नाराज़ हो कर दोनों बल्कि तीनों को बाग़-ए-अदन से निकल जाने का हुक्म दिया यूं तमाम रुए-ज़मीन पर नस्ल इन्सानी फैलती गई और शैतान की शैतानियत (बदी) में भी इज़ाफ़ा होता गया यहां तक कि हर एक इन्सान के रग व रेशा में इस के खून के साथ साथ दौरा करने लगा। (मिशकात किताब-उल-ईमान फ़ील-वस्वसा) इस पर खुदा की रहमत जोश पर आई और अम्बिया का एक वसीअ सिलसिला जारी किया जिन्होंने ने ना सिर्फ़ ये ताअलीम कि खुदा की इताअत और फ़रमांबर्दारी ऐन सआदत मंदी और फ़लाहदारीन है। बल्कि नजात के इस वाअदे को जो खुदा ने आदम और हव्वा से बहिश्त से निकल जाने वक़्त किया था कि “औरत की नस्ल शैतान के सर को कुचलेगी।” (पैदाइश 3:15) लोगों के ज़हन नशीन करने में कोई कसर उठा ना रखी। लेकिन अफ़सोस है कि बहुत कम लोगों ने इनका यक़ीन किया। और अक्सर बुत-परस्ती और नफ़स परस्ती में मुब्तला हो कर शैतान के हलाकत आफ़रीन पंजे में फंस गए। इसलिए खुदा ने भी कई बार आफ़ात-ए-अर्ज़ी व समावी (ज़मीनी व आस्मानी) के ज़रीये अपने क़हर और ग़ज़ब का इज़हार किया जो सईद (खुशनसीब) हुए और मुतनब्बाह (तंबीया हासिल करना) हुए और जो शक्की थे वो हमेशा के लिए हलाक हुए। चुनान्चे यसअयाह नबी फ़र्माते हैं कि “हम सब भेड़ों की मानिंद भटक गए हम में से हर एक ने अपनी राह ली।”

इन्सान की इस क़द्र सरकशी के बावजूद खुदावन्द तआला ने एक शरीअत भी मूसा की मार्फ़त इस जहान में भेज दी जिसका मतलब ये था कि इन्सान अपनी कमज़ोरी और गुनाह आलूदगी से वाक़िफ़ हो ताकि आइंदा फ़ज़ल की क़द्र व मंजिलत

मालूम कर सके। और वो शरीरत इस तरह पर थी, कि गौर व खौज़ के बाद अच्छी तरह मालूम हो सके कि वो आइंदा फ़ज़ल का अक्स और नमूना है।

इस के बाद खुदा ने इस आदम को ज़मीन पर भेजा जिसकी बशारत तमाम अम्बिया देते आए थे। और ये नया आदम इस गर्ज़ से दुनिया में आया ताकि पहले आदम के फ़रज़न्दों को जो शैतान के कब्ज़े में गिरफ़्तार हुए थे। अपनी ज़ात पाक के साथ पैवस्त (जोड़ना) कर के मौत के कब्ज़े से निकाल ले और जितने बोझ इनकी गर्दन पर हैं सब आप उठाए और उन सबको जो इस पर ईमान लाए नजात दे ये खुदा का बड़ा रहम था जो अपने बंदों पर किया। वर्ना सब दोज़ख के वारिस हो चुके थे। इस नए आदम की पैदाइश भी उस आदमे अद्वल की मानिंद हुई फ़र्क इतना रहा कि पहला आदम शैतान से मग़्लुब (हारना) हुआ दूसरा आदम इस पर ग़ालिब आया और इस को शिकस्त देकर बिल्कुल मग़्लूब कर लिया चूँकि महज़ इन्सान की ताक़त से ये बईद (दूर, फ़ासले पर) था कि कि शैतान पर फ़त्हयाब हो सके। इसलिए इस आदम-ए-सानी में उलूहियत (खुदाई) भी थी। और इन्सानियत भी जिसका सबूत कलामे इलाही में बवज़ाहत मौजूद है।

जिस तरह एक मेहरबान बाप मुसीबत के वक़्त अपने बच्चों को गले से लगा लेता है। उसी तरह खुदा ने बशक़ल इन्सान इस जहान में आकर हमें अपने गले से लगा लिया है। और हमारे दुख दर्द को हमसे दूर कर डाला और हमारी रूहों को आराम बख़शा और हमें अपनी रास्त बाज़ी से रास्त बाज़ बनाया। ये दूसरा आदम जिसका ज़िक्र सुतूरे-बाला में हुआ रब्बना अल-मसीह है।

चुनान्चे लिखा है कि क्योंकि जब आदमी के सबब से मौत आई तो आदमी ही के सबब से मुर्दों की क्रियामत भी आई और जैसे आदम में सब मरते हैं। वैसे ही मसीह में ज़िंदा किए जाएंगे। लेकिन हर एक अपनी अपनी बारी से पहला फल मसीह फिर मसीह के आने पर उस के लोग उस के बाद आखिरत होगी। उस वक़्त वो सारी हुकूमत और सारा इख़्तियार और कुद़्रत नेस्त कर के बादशाहत को खुदा यानी बाप के हवाले कर देगा। (1 कुरिन्थियों 15:21-24)

चुनान्चे इस्लाम भी इस का काइल है कि मसीह दूसरा आदम है चुनान्चे आले-इमरान के 5 रूकूअ में कि ان مثل عيسى عند الله لمتل آدم आदम यानी खुदा के नज़दीक ईसा मसीह मिस्ल आदम के है।

अब हमारी अर्ज़ ये है कि ये नया आदम जो मौत पर फ़तहयाब हो गया है और जिसके इख्तियार में सब कुछ है और जिसने ईमान लाने वालों के लिए नजात तैयार कर ली है इस के पास आओ और नजात हासिल करो पहले आदम की फ़र्ज़दी से जो मौत का सबब है निकल कर इस आदम-ए-सानी की फ़र्ज़दी में आकर नई पैदाइश हासिल करो ता कि इस मौत के कब्ज़े से जो आदमे अक्वल की फ़र्ज़दी की वजह से तुम पर तारी है निकल कर हमेशा की ज़िंदगी में दाखिल हो जाओ। जैसे मुकद्दस यूहन्ना फ़र्माते हैं कि येसू ने जवाब में उस से कहा, मैं तुझसे सच्य सच्य कहता हूँ कि जब तक कोई नए सिरे से पैदा ना हो वो खुदा की बादशाहत को देख नहीं सकता।” (यूहन्ना 3:3)

शायद कोई ये कहे कि हम उस की फ़र्ज़दी में क्योकर शामिल हो सकते हैं? जवाब ये है कि सिदक़ दिल और नेक नीयती से अपने किए हुए से पछताओ और उसे पुकार कर कहो, कि ऐ हर गुनेहगार को नजात बख़्शने वाले हमें भी बचा और हम पर रहम कर हमें अपनी तरफ़ खींच कि हम गारे असयां (गुनाहों की गार) में डूबे जाते हैं। ऐ करीम खुदा हमारे दिलों को अपनी तरफ़ माइल कर हम किसी खास दीन या मज़हब को आप पसंद नहीं करते हैं हमें सिर्फ़ तेरी तलाश है जिधर तू है हमारे दिलों को इधर मुतवज्जोह कर। अगर खुलूस के साथ तुम ऐसी दुआ करो तो यकीनन खुदा तुम्हें भी अपनी तरफ़ खींच लेगा और तुम्हारी सारी मुश्किलें आसान हो जाएगी। और तमाम मवाक़े दूर किए जाएंगे।

इन रोज़ मर्राह दुआओं के सिवा तालिबे हक़ को ये भी लाज़िम है कि हर मज़हब की किताब को बिला-तास्सुब गौर से पढ़े और शक व शुब्हा को उस के समझने वालों से तहकीकाना तौर पर दर्याफ़्त करे ना कि मुताअस्सुबाना (मज़हब की बेजा हिमायत) तौर पर।

नाज़रीन आप जो अपने मज़हब की किताबों को गौर से पढ़ते हैं ज़रा हमारी किताबों को भी गौर से मुतालआ फ़रमाएं अगर आपको इत्मीनान हो जाये तो ठीक वर्ना आप मुख्तार हैं।

बाअज़ लोग ये कहते हैं कि इन किताबों के पढ़ने से अपने दीन के मुताल्लिक शक पैदा हो जाता है। लेकिन याद रखना चाहिए कि जो मज़हब ऐसा ज़ईफ़ (कमज़ोर) हो कि दूसरे मज़ाहिब की किताबों के देखने से इस में शक पड़ जाये तो इसके बातिल (झूटा) होने में क्या शक है? वो ही सच्चा मज़हब है कि हर मज़हब की किताब पढ़ कर इस में कायम रह सकें और इस में तरक्की कर सकें।

अल-गर्ज़ रब्बना अल-मसीह ने इस ज़मीन पर तशरीफ़ ला कर इस जुदाई को जो इन्सान और खुदा में वाक़ेअ हुई थी दूर कर के सुलह करा दी। इस तरह पर कि हम बदकारों के मुआवज़े में अपनी जान देकर खुदा की अदालत पूरी कर दी। और हमारी कमज़ोरियों को ज़ोर से बदल कर हम में नई इन्सानियत पैदा कर दी। और इस दुनिया को फिर उस की असली हालत पर ला कर रश्क फ़िर्दोस बना दिया। चुनान्चे उस के ईमानदार बंदे बजुज़ गुनाह करने के हर तरह से आज़ाद हैं। और इस दुनिया से इसी तरह फ़ायदा उठाने हैं जिस तरह हज़रत आदम बागे अदन से उठाते थे। अलबता जिस तरह शैतान बाग-ए-अदन में आदम की ताक में लगा रहता था इसी तरह मसीह के ईमानदार बंदों की ताक में भी लगा रहता है लेकिन इनको कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकता है क्योंकि खुद मसीह उन के मुहाफ़िज़ और हैं।

चुनान्चे मुक़द्दस पौलुस ने इसी मज़मून को बर्दी अल्फ़ाज़ बयान किया है कि, “रात बहुत गुज़र गई और दिन निकलने वाला है पस हम तारीकी के कामों को तर्क कर के रोशनी के हथियार बांध लें जैसा दिन को दस्तूर है शाइस्तगी से चलें ना कि नाच रंग और नशे बाज़ी से ना ज़िनाकारी और शहवत परस्ती से और ना झगड़े और हसद से बल्कि खुदावन्द येसू मसीह को पहन लो और जिस्म की ख्वाहिशों के लिए तदबीर ना करो।” (रोमीयों 13:13-14)

फिर इस रोशनी के हथियार की तफ़सील जिनके ज़रीये से हम शैतान को शिकस्त दे सकते हैं बयान करते हैं कि “पस सच्चाई से अपनी कमर कस कर और रास्त बाज़ी का बक्तर लगा कर और पांव में सुलह की खुशख़बरी की तैयारी के जूते पहन कर और इन सब के साथ ईमान की सिपर लगा कर कायम रह। जिससे तुम इस शरीर के सारे जलते हुए तीरों को बुझा सको। और नजात का खुद और रूह की तल्वार जो खुदा का

कलाम है ले लो और हर वक़्त और हर तरह से रूह में दुआ और मिन्नत करते हो।”
(इफ़िसियों 6:14-18)

भाईयों खुदावन्द येसू मसीह ने उन लोगों को जिनको उस ने अपनी रास्तबाज़ी के ज़रीये असली शक़ल पर फेरा है शैतान से महफूज़ रहने के लिए सात हथियार दीए हैं ताकि उस शरीर का मुक़ाबला कर के उस फ़ज़ल को जो उस की तरफ़ से इंसानों को दिया गया है खो ना दें।

सच्चाई का कमरबंद, रास्तबाज़ी का बक्तर, खुशखबरी की तैयारी के जूते, ईमान की सिपर, नजात का खुद, कलाम-ए-इलाही की तलवार, रूह में दुआ की मदद। पस जो कोई खुदावन्द येसू मसीह में पैवस्त हुआ है। और जिस ने आदमे अक्वल की फ़र्ज़दी छोड़कर खुदा की फ़र्ज़दी का मर्तबा हासिल किया है। वो शख्स इन सात हथियारों से हर वक़्त शैतान का मुक़ाबला करता रहता है। और इन खुदा के फ़रज़न्दों का दुनिया में और आस्मान पर एक झुंड तैयार हो गया है। पस हम उन लोगों को जो इन खुदा के सिपाहीयों के झुंड का बे-खबरी से मुक़ाबला करते हैं। या मुखालिफ़ की फ़ौज के साथ मिलकर हलाक हो रहे हैं इतिला देते हैं कि भाईयों ! इस दुश्मन का साथ मत दो जो मग़्लूब हो चुका है बल्कि खुदा के लोगों में शामिल हो जाओ।

और अपनी रास्तबाज़ी पर भरोसा ना रखो बल्कि खुदा की उस रास्तबाज़ी को जो आदम-ए-सानी में पैवस्त होने से मिलती है हासिल करो। खुदा के सामने वही रास्तबाज़ी जो उसने खुद इनायत की है कार-आमद है। हमारी रास्तबाज़ी वहां कार-आमद नहीं हो सकती है।

ये खुदा का फ़ज़ल है कि दूसरा आदम ज़ाहिर हुआ जो पाक और कुददूस है और वो अपने साथ आदमीयों को पैवस्त करता है। इसलिए वो पहले आदम की नजासत (गंदगी) और अपनी शरारत की नजासत से पाक होते हैं और आदम-ए-सानी की ख़ूबी में से हिस्सा पाते हैं इसलिए वो खुदा के मक़बूल फ़र्ज़न्द बन जाते हैं। जो कुछ हम कह रहे हैं वो सरसरी नहीं बल्कि गहरी और हकीक़ी बातें हैं।

रिसाला दोम (2)

आदम-ए-सानी से पैवस्त होना

रिसाला अक्वल में आदम-ए-अक्वल और आदम-ए-सानी का ज़िक्र किया गया और ये बयान हुआ कि आदमे अक्वल के सबब से सब आदमी खुदा की रहमत से महरूम हुए और मौरिद-ए-गज़बे इलाही (जिस पर खुदा का गज़ब हो) बन गए लेकिन दूसरे आदम यानी हज़रत ईसा के साथ पैवंद (लगाया जाना) होने की वजह से फिर हालत-ए-असली पर आ जाते हैं। इस रिसाले में इस बात का सबूत देना ज़रूर है कि हम उस की रास्तबाज़ी से क्योकर रास्तबाज़ बन जाते हैं और क्यो उस के साथ पैवस्त हो सकते हैं।

वाज़ेह रहे कि हम लोग जो आदमे अक्वल के सबब से गुनेहगार ठहरते हैं इस का क्या सबब है? बादियुन्नज़र (सरसरी नज़र) में ये बात बईद अज़ क्रियास (वो बात जो खयाल में भी ना आ सके) मालूम होती है कि एक शख्स की खता से दूसरा शख्स खताकार ठहरे। मगर गौर व खोज़ के बाद ऐसा मालूम होता है कि यकीनन ये बात लायक़ तस्लीम और बरहक़ है कि आदमे अक्वल के सबब से सब लोग बिगड़ गए और उस की खता की वजह से सब मुजरिम बन गए। दलील इस दावे की ये है कि आदमे अक्वल सब आदमीयो का मब्दा (इब्तिदा) था या वो हकीकी तुख्म (बीज) था कि जिस पर हर फ़र्द बशर का सिलसिला जा कर खत्म होता है। या यूँ समझना चाहे कि आदमे अक्वल कुल इन्सानियत का मजमूआ था हर आदम की इन्सानियत इस में मौजूद थी। मसलन एक आम की गुठली में उस के तमाम शाख व बार बा-क़वाह (कुव्वत) मौजूद होते हैं। इसी तरह जब आदमे अक्वल बाग-ए-अदन में था तो ये सब आदमी जो अब ज़मीन पर चलते फिरते हैं या वो जो मर गए हैं या वो जो पैदा होंगे। सब के सब बा-क़वाह (कुव्वत) उस में मौजूद थे। उस का जिस्म सब के जिस्मों का साँचा था उस की रूह सबकी रूहों का मखज़न (जखीरा, स्टोर) था चुनान्चे तौरैत में लफ़ज़ फलो और बढ़ो का खिताब इस की दलील है। पस जब उसने खता की तो उस के साथ सब ने खता की और जब उस पर खुदा का क़हर नाज़िल हुआ तो उन सभी पर भी हुआ जो उस में बा-क़वाह (कुव्वत) मौजूद थे। ज़ाहिर में आदम की खता है हकीकत में हम सबकी खता है क्योकि वो हम सभी का मजमूआ था जो गज़ब का सज़ावार हुआ। पस हर फ़र्द इस

मजमूए का मफ़ज़ूब अलैह ठहरा। इसलिए ये कहना कि एक की ख़ता से हम सब क्यों खाती (ख़ताकार) हुए। महज़ नादानी है। अब अगर कोई शख्स कोई कसूर करता है, तो इस से वही खुद कसूरवार ठहरता है कि ये शख्स बज़ात-ए-खुद दूसरे कसूरवारों का मजमूआ नहीं है। बरअक्स इस के आदम तमाम नस्ल-ए-इन्सानी का मजमूआ था। चुनान्चे तौरात मुकद्दस में लिखा है कि 'तू उनके आगे अपने तई मत झुका और ना उनकी इबादत कर क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा गय्यूर खुदा हूँ और बाप दादों की बदकारीयाँ उन की औलाद पर जो मुझसे अदावत रखते हैं तीसरी और चौथी पुश्त तक पहुँचाता हूँ। उन में से हज़ारों पर जो मुझे प्यार करते हैं और मेरे हुक्मों को हिफ़ज़ करते हैं रहम करता हूँ।' (खुरूज 20:6-5)

शायद कोई ये कहे कि इस ज़माने का शख्स अगरचे कुल इन्सानियत का मजमूआ नहीं तो भी अपनी औलाद का मजमूआ तो है लिहाज़ा लाज़िम है कि इस की बदी उस की औलाद में भी असर करे। जवाब ये कि बेशक अगर कोई ऐसा शख्स हो जो बदकार और ना खुदातरस हो तो उस की औलाद भी जो बाक़वाह (कुव्वत) इस में मौजूद है तीसरी चौथी पुश्त तक सज़ावार ठहरती है। उस वक़्त तक जब तक कि इस बदकार बाप की रूह का असर औलाद से मुंदफ़ा (दफ़ाअ दूर) नहीं हो जाता। अब साफ़ ज़ाहिर है कि अगर बदकार बाप का असर औलाद में सरायत करे तो वो भी ग़ज़ब के मातहत (नीचे) रहते हैं। और जब वो बद असर जाता रहे तो खुदा भी मेहरबानी करता है। इसी तरह अगर आदमे अक्वल की बिगड़ी हुई तबीयत का असर हम में रहे तो हम ग़ज़ब में रहते हैं अगर वो असर जाता रहे तो रहमत के साये में आ जाते हैं पस ये बात वाज़ेह हो गई कि आदमे अक्वल के सबब से हम सब गुनेहगार हो चुके हैं। इसी तरह आदम-ए-सानी की रास्तबाज़ी से हम रास्तबाज़ ठहरते हैं और उस के ज़रीये से पाक हो जाते हैं क्योंकि हक़ तआला ने जब देखा कि "आदमे अक्वल बिगड़ गया और इस के सबब से उस की तमाम औलाद ग़ज़ब की सज़ावार हुई और जब आदम ने इस मंशा इलाही (खुदा की मर्ज़ी) के बरख़िलाफ़ कि आदम उस का ख़लीफ़ा हो कर अबदुल-आबाद तक ज़मीन पर हुक्मत करे और ज़िंदा रहे।" काम किया तब खुदा ने एक दूसरे आदम को जिसमें पहले आदम की तबीयत का कुछ भी नहीं था। बल्कि ज़ाते इलाही से मुत्सिफ़ (सिफ़त रखने वाला) और उस की ऐन ज़ात का अक्स और परतू था भेजा ताकि अबद-उल-आबाद तक ज़मीन पर हुक्मत करे और उस के रूहानी फ़र्ज़न्द हमेशा उस के साथ हयात-ए-अबदी के वारिस बन जाएं और सनदे ख़िलाफ़त पर हुक्मरान रहें।

अगर ये आदम-ए-सानी भी आदमे अद्वल की तरह अपनी औलाद का सिलसिला जिस्मानी तौर पर अलेहदा (अलग) जारी करता तो आदमे अद्वल की तमाम जुरियत (तुख्म) दोज़खी हो कर हमेशा के अज़ाब में गिरफ़्तार रहती और खुदा की रहमत में उनका हिस्सा ना रहता बल्कि हम सब के सब दोज़ख में जाते इसलिए खुदा ने हम पर ये फ़ज़ल किया कि आदमे अद्वल की औलाद को उस की फ़र्ज़दी से निकाल कर आदम-ए-सानी की फ़र्ज़न्दी में इस तरह शामिल किया कि उस पर ईमान लाने की वजह से उस की फ़र्ज़दी में उनका शुमार हो ना कि आदमे अद्वल की में।

और जैसे आदमे अद्वल ने अपनी औलाद के ज़हूर से पेशतर तमाम और को जिमनन (इशारतन) और बा-क़वाह अपने और (तरफ़) लेकर मौत के साये में कर दिया था इसी तरह इस आदम-ए-सानी ने अपने तमाम फ़रज़न्दों को यानी अपनी तमाम कलीसिया को जिमनन और बा-क़वाह अपने अंदर लेकर सब रास्तबाज़ियां पूरी कर दीं। और अपने तमाम कलीसिया के लोगों के गुनाहों को आप उठा कर सज़ायाब हुआ ताकि वो लोग मौत के साये से निकल कर और आदमे अद्वल की फ़र्ज़दी से छुट कर उस के फ़र्ज़न्द हो जाएं और हमेशा उस के साथ रहें।

शायद कोई ये कहे कि आदमे अद्वल अगर खुदा का गुनाह ना करता तो हरगिज़ ना मरता ना तो जिस्म की निस्बत से और ना रूह की निस्बत बल्कि हमेशा वो और उस की औलाद जिंदा रहते लेकिन अब गुनाह की वजह से वो और उस के फ़र्ज़न्द दोनों मर गए। लेकिन इस आदम-ए-सानी के फ़र्ज़न्द भी तो जिस्म के एतबार से मरते हैं पस उनके मरने का क्या सबब है?

इस का जवाब ये है कि आदमे अद्वल के सबब से हर इन्सान का जिस्म और रूह दोनों बिगड़ गए और दोनों पर मौत का फ़तवा लग गया लेकिन आदम-ए-सानी ने सिर्फ़ रूह को जो बेशक्रीमत जोहर है अपने साथ पैवस्त कर के बचा लिया और इस हकीर जिस्म को जो आदमे अद्वल के साँचे में ढला हुआ और ख़ाली पुतला है इस काबिल ना समझा कि इस पुराने चीथड़े को धो कर फिर उस पाक रूह को पहना दे इसलिए इस को काबिले इल्तफ़ात (तवज्जोह के लायक़) ना समझा क्योंकि उस का मंशा (मर्ज़ी) ये है कि मैं उन रूहों को जिन्हें मैंने बचाया है नया लिबास यानी और ही बदन इनायत करूँ बल्कि इस ज़मीन को भी जो आदम के सबब से लानती हुई है और जिससे

ये खाकी जिस्म बनाए गए हैं और इस आस्मान को भी तब्दील कर के नई ज़मीन और नया आस्मान बनाऊँ और अपने मुकद्दसों को इस में रखूँ। चुनांचे लिखा है कि “वो अपनी इस कुव्वत की तासीर के मुवाफ़िक़ जिससे सब चीज़ें अपने ताबे कर सकता है हमारी पस्त हाली के बदन की शक़ल बदल कर अपने जलाल की सूरत पर बनाएगा।” (फिलिप्पियों 3:21)

मुकद्दस पतरस लिखते हैं कि “लेकिन उस के वाअदे के मुवाफ़िक़ हम नए आस्मान और नई ज़मीन का इंतिज़ार कर रहे हैं जिनमें रास्तबाज़ बसी रहेगी।” (2 पतरस 13)

यसअयाह नबी लिखते हैं कि “देखो मैं नए आस्मान और नई ज़मीन पैदा करता हूँ और जो आगे थे उनका फिर ज़िक्र ना होगा।” (यसअयाह 65:17)

फिर लिखते हैं कि क्योंकि जिस तरह से नए आस्मान और नई ज़मीन जो मैं बनाऊँगा, मेरे हुज़ूर कायम रहेंगे इसी तरह तुम्हारी नस्ल और तुम्हारा नाम बाकी रहेगा। खुदावन्द फ़रमाता है।” (यसअयाह 66:22) पस हमारा खुदावन्द इस ज़मीन को जो सरासर फ़ानी है नेस्त (खत्म) करना चाहता है इसलिए वो बदन जो इस से बना है ज़रूर है कि नेस्त हो मगर रूह जो बेशक़ीमत शैय है और जो इस ज़मीन से नहीं बनी है सिर्फ़ उसी की हिफ़ाज़त दरकार है। बशर्ते के उस के फ़र्ज़न्द बन जाएं इसलिए अब इस अम्र का बयान मुनासिब मालूम होता है कि हम लोग आदम-ए-सानी यानी हज़रत मसीह के फ़र्ज़न्द क्योकर बन जाते हैं और अलाइक़ (ताल्लुकात) फ़र्ज़दी किस तरह मुतहक्किक़ (दुरुस्त) हो जाते हैं। यूहन्ना 3:3, में है कि हज़रत ईसा निकुदेमुस से जो एक यहूदी आलिम था यूँ फ़र्माते हैं कि, “मैं तुझसे सच्च सच्च कहता हूँ कि जब तक कोई नए सिरे से पैदा ना हो वो खुदा की बादशाहत को देख नहीं सकता। निकुदेमुस ने उस से कहा आदमी जब बूढ़ा हो गया तो क्योकर पैदा हो सकता है? क्या वो दुबारा अपनी माँ के पेट में दाख़िल हो कर पैदा हो सकता है? येसू ने जवाब दिया मैं तुझसे सच्च सच्च कहता हूँ कि जब तक कोई आदमी पानी और रूह से पैदा ना हो खुदा की बादशाहत में दाख़िल नहीं हो सकता।” (यूहन्ना 3:3-5)

इन आयतों से साफ़ ज़ाहिर है कि खुदा के फ़र्ज़न्द बनने और बहिश्त में दाख़िल होने के लिए नया जन्म लेना ज़रूर है पस जो कोई नया जन्म लेता है वो आदम-ए-सानी

का फ़र्ज़न्द बन जाता है लेकिन इस नए जन्म के मअनी हमारे खुदावन्द ने ये बतलाए हैं कि पानी और रूह से पैदा होना यानी पानी से इस्तिबाग़ (बपतिस्मा) लेना जो ज़ाहिरी इकरार का नमूना है और खुदा की रूह का दिल में आ जाना।

मगर ये जब ही हो सकता है कि आदम-ए-सानी की रूह से हमारी रूह को ताकत मिले यानी रूह-उल-कुद्स या खुदा की रूह जो बाप और बेटे से निकलती है हमारे अंदर आ जाए तो ज़रूर हम उस के फ़र्ज़न्द ठहरते हैं गोया कि हम बातिनी तौर पर खुदा से पैदा हो गए और इसी लिए हम खुदा के बेटे कहलाते हैं। मुकद्दस यूहन्ना लिखते हैं कि “जितनों ने उसे क़बूल किया उसने उन्हें खुदा के फ़रजंद बनने का हक़ बख़्शा यानी उन्हें जो उस के नाम पर ईमान लाते हैं।” (यूहन्ना 1:12)

इस आयत का लुत्फ़ उस वक़्त-ए-मालूम होता है जब कि हम खुदा की रूह से रूहानी तौर पर पैदा हो कर उस के फ़र्ज़न्द बन जाते हैं।

अब ये मालूम करना बाक़ी है कि मसीह की रूह उस के लोगों में क्यौंकर आ जाती है जिसके सबब से खुदा के फ़र्ज़न्द बन कर आदमे अव्वल की फ़र्ज़दी से निकल जाते हैं और हमेशा की ज़िंदगी में दाख़िल हो जाते हैं।

वाज़ेह रहे कि जब कोई शख्स अपने गुनाहों से शर्मिदा और बेज़ार हो कर खुदा की तरफ़ रुजू करता है और रूहानी तौर पर मुज़्तरिब (परेशान) रहता है और खुदावन्द येसू मसीह से इमदाद तलब करता है तब खुदावन्द तआला इस पर फ़ज़ल करता है और इस की तौबा कुबूल फ़रमाता है। इस सूरत में खुदावन्द येसू मसीह की रूह इस शख्स की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाती है। और जिस क़द्र ये शख्स ख़ालिस नीयत से अपनी रूह में दुरुस्त तौर पर दुआ करता है और मुनाजात के ज़रीये खुदा की तरफ़ तकरूब (नज़दीकी) ढूंढता है और कलामे इलाही में गौर करता है।

उसी क़द्र रूह-उल-कुद्स का फ़ैज़ान (बड़ी बख़िश) और इस का नुज़ूल इस के दिल पर ज़्यादा होता रहता है। और ये शख्स अपने दिल में आराम और तसल्ली पाता है खुदा की मुहब्बत और दुआ का शौक़ और नेकी में सरगर्मी और तहम्मूल व बर्दाश्त। सब व क़नाअत उस के दिल में पैदा होना शुरू हो जाता है और घमंड, गुरूर, हीला-साज़ी, हसद, लालच, तमल्लुक (खुशामद) नफ़स पर्वरी, शहवत परस्ती वगैरह उयूब (ऐब की

जमा) जो हर आदमी में पाए जाते हैं रफा होने शुरू हो जाते हैं यहां तक कि इस की रूह मुहब्बत मौरिद अनवारे इलाही (खुदा का नूर उतरने की जगह) बन जाती है इस वक़्त इस की बातिनी आँखें टिमटिमा (जगमगा) उठती हैं फिर ये शख्स कलाम-ए-इलाही के ज़रीये से अपने बातिनी उयूब और खुदा की कुददुसियत और इस जहां की नापाइदारी और आइंदा जहां की क़द्रो मंजिलत रूहानी आँखों से देखने लगता है और इस का ज़मीर रोशन होता जाता है। ये सब कुछ खुदा की रूह की बरकत से होता है उस के रूह के बग़ैर हरगिज़ कोई आदमी राह-ए-रास्त पर नहीं आ सकता। जब मैं खुदावन्द येसू मसीह के पास हाज़िर ना हुआ था और उस की रूहानी बरकतों से वाकिफ़ ना था तो उस वक़्त कई एक दुनियावी आलिम लाहौर में रूह-उल-कुदस की बाबत गुफ़्तगु करते थे, कि रूह-उल-कुदस क्या चीज़ है? मैं भी चुप-चाप सुनता था मगर उनकी बातों को मेरी तमीज़ कुबूल नहीं करती थी वो कहते थे कि ईसाई लोग जो रूह-उल-कुदस का फैज़ान (फ़ायदा, बड़ी बख़्शिश) और इस का नुज़ूल आदमीयों के दिलों में तस्लीम करते हैं। शायद इन्किशाफ़-ए-ज़हनी या फैज़ान-ए-इल्मी का तबीयत पर असर करना मुराद लेते हैं और उनका ये भी खयाल था कि ये फैज़ान-ए-इल्मी अक्सर ज़हीन लोगों में होता है कुछ ईसाईयों को खुसूसीयत नहीं अगरचे इस की बाबत उस वक़्त में कुछ ना कह सका लेकिन अब मैं कहता हूँ कि रूह-उल-कुदस तो और ही चीज़ है और इस के कुछ और ही खास्से हैं तमाम जहान के ज़हन इस के बग़ैर नादान हैं वो लोग सरासर ग़लती पर थे रूह-उल-कुदस का लुत्फ़ जब तक कि वो हासिल ना हो कोई नहीं जानता जब किसी के अन्दर वो रूह आती है तो वह आदमी अपने अंदर हमेशा की ज़िंदगी बैयाना (पूरी रक़म की अदायगी से पहले पहली किस्त) देखकर बहुत बड़ी खुशी और आराम और एक ऐसी अलवा लाज़मी (साबित क़दमी) जो अक़ल से बालातर है पाता है तमाम मसाइब और तकालीफ़ को बड़ी खुशी के साथ बर्दाश्त करता है वो अपनी मौत में ऐन ज़िंदगी पाता है अपने और खुदा में एक खास ताल्लुक़ देखता है दक्क़ाइक़ (बारीक़ निकात) और रमूज़ इलाहिया (खुदा के भेद) इस पर मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) होते हैं एक अजीब किस्म की रोशनी जो ज़हन की रोशनी से बालातर है इस में पैदा हो जाती है। दीनदारी में सरगर्म और गुनाहों के बोझ से (अपने) आपको सुबुक (हल्का) पाता है तेज़ी ज़हन और फैज़ाने इल्मी से ये बातें हरगिज़ नसीब नहीं होतीं पस ज़रूर रूह-उल-कुदस और चीज़ है और ज़हीन होना और चीज़ है। एक मुहम्मदी आलिम ने मुझ से कहा कि मैं भी इन्जील को तहकीकात की नीयत से आजकल देख रहा हूँ मेरी ज़बान से निकला कि खुदा करे कि

आपकी समझ में आजाए वो साहब खफ़ा हो कर कहने लगे क्या मैं ऐसा ग़बी (कुंद ज़हन) हूँ कि इन्जील के तर्जुमे को ना समझ सकूँगा। मुद्दत के बाद मुझको मालूम हुआ कि हर ज़हन रूह-उल-कुद्स के बग़ैर ज़रूर ग़बी होता है कोई शख्स रूह-उल-कुद्स के बग़ैर कलामे इलाही को नहीं समझ सकता है अगरचे वो कैसा ही बड़ा आलिम क्यों ना हो रूह-उल-कुद्स दुआ और तिलावत-ए-बाइबल और फ़ज़ल-ए-इलाही से मिलती है। मैं ये भी कहता हूँ कि अशरफ़-उल-मख़लूक़ात का इतलाक़ हर एक इन्सान पर दुरुस्त नहीं है क्योंकि इन्सान कैसा ही बड़ा अक़लमंद क्यों ना हो जब तक इस में रूह-उल-कुद्स नहीं है ज़रूर वो शराफ़त इंसानी से गिरा हुआ होता है। आदमे अक्वल उस वक़्त तक अशरफ़ था जब तक उसने खुदा की इस रूह को जो उसे मिली थी ना बुझाया जब बुझाया तो शराफ़त से गिर गया।

पस रूह-उल-कुद्स क्या है आदम-ए-सानी की रूह है जो मुक़द्दसों में आ बस्ती है इस के सबब हम लोग खुदावन्द येसू मसीह के फ़र्ज़न्द और उस के उजू बन जाते हैं इस इज्माल (इख़्तिसार) की तफ़सील ये है कि आदमे अक्वल जिसने हर फ़र्द इन्सान को जिमनन और बाक़वाह अपने अंदर लेकर लानत उठाई तो जिस क़द्र इन्सान इस से पैदा हुए ख़्वाह वो मरे हों या ज़िंदा या जो पैदा होंगे। वो सब के सब आदमे अक्वल के हुक़म में हैं क्योंकि आदमे अक्वल इन सब का एक मजमूआ है लिहाज़ा उस की लानत में वो सब हैं।

अगर कोई कहे कि इस का क्या सबब है कि तमाम शरीर आदमे अक्वल के आज़ा हैं? जवाब ये है कि आदमे अक्वल की रूह उनमें बस्ती है मसलन ज़ैद एक आदमी है कि जिसकी रूह उस के हर उजू पर यानी हाथ, कान, नाक वग़ैरह पर सल्तनत करती है अगर वो किसी को क़त्ल करे तो उस का सारा बदन खूनी ठहरता है क्योंकि उसी की रूह से उस का सारा बदन है।

शनाख़्त इस की यूँ है कि आदमे अक्वल लालची था पस अगर हमारे अंदर लालच है तो उसी की रूह हम में बस्ती है। वो हीला-साज़ था उसने खुदा से कहा कि “इस औरत ने जिसे तू ने मेरे साथ कर दिया है मुझसे गुनाह कराया।” अगर हम भी हीला-साज़ हैं और गुनाह कर के उस के उज़्र पेश करते हैं तो उसी आदम की रूह हम में है। वो आक्रिबत अंदेश (दुर की सोचने वाला) ना था उसने बेताम्मुल (बग़ैर सोचे समझे) उस

दरख्त में से जिससे खुदा ने मना किया था खा लिया अगर हम भी आक्रिबत अंदेशी नहीं करते और बेताम्मुल हर एक बात मान लेते हैं तो हम में उस की रूह बस्ती है। वो खुदा के हुक्म को छोड़ कर दूसरों की बात मान गया अगर हम भी खुदा के हुक्म को छोड़कर दुनिया के लोगों की बातें मान लेते हैं तो बेशक उस की रूह हम में है। और हम में से हर एक अपने दर्जे पर उस का उज़ू है। इसी तरह अगर इस दूसरे आदम की रूह हम में बसे तो हम उस के आज्ञा बन जाते हैं क्योंकि जैसे तमाम शरीरों (बेदीनों) के मजमूए का सर आदमे अक्वल है इसी तरह तमाम मुक़द्दसों के मजमूए का सर ईसा मसीह है।

चुनान्चे कुरिन्थियों में लिखा है कि “मैं चाहता हूँ कि तुम जानों कि हर मर्द का सर मसीह और औरत का सर मर्द और मसीह का सर खुदा है।” (1 कुरिन्थियों 11:2)

“क्योंकि शौहर बीवी का सर है जैसे कि मसीह कलीसिया का है और वो खुद बदन का बचाने वाला है।” (इफ़िसियों 5:23)

यानी तमाम मुक़द्दसों की जमाअत गोया यक बदन है जिसका सर हज़रत ईसा मसीह है।

इस का सबूत कि सब आदमी जो मसीह के हैं हर एक उस का उज़ू है ये है कि “इसी तरह तुम मिलकर मसीह का बदन हो और फ़र्दन फ़र्दन आज्ञा।” (कुरिन्थियों 12:27) रोमीयों में है कि “इसी तरह हम भी बहुत से हैं। मसीह में शामिल हो कर एक बदन हैं और आपस में एक दूसरे के आज्ञा।” (रोमीयों 12:5)

इफ़िसियों में लिखा है कि “और सब कुछ उस के पांव तले कर दिया और उस को सब चीज़ों का सरदार बना कर कलीसिया को दे दिया।” (1:22, 23) गरज़ कि ये मज़मून इन्जील शरीफ़ में हर एक जगह पर मज़कूर है कि हम सब मसीह के आज्ञा और वो हमारा सर है इसलिए मसीह की रूह उस के सब आज्ञा में सलतनत करती है और ये वजह है कि उस के सज़ा उठाने से हम सब बच गए क्योंकि अगर सर ने बोझ उठा कर फेंक दिया तो पैर जो उस के मुताल्लिक थे खुद बखुद सुबुक (हल्के) होंगे पस जाहिलों का वो एतराज़ कि एक की सज़ा से दूसरा क्यों पाक हो जाता है रफ़ा हुआ क्योंकि वो एक दूसरों से जुदा नहीं है और इस का ताल्लुक इस तरह साबित है कि किसी को शक

की गुंजाइश बाकी नहीं यानी ये कि उसी की रूह हम में आ गई लेकिन जो उस से जुदा हैं वो इस लुत्फ से महरूम हैं।

और ये सबब है कि ईसा मसीह की रास्तबाज़ी से हम रास्तबाज़ हुए क्योंकि जब सर पर ताज रखा जाता है तो तमाम बदन की ज़ीनत हो जाती है यानी जब उसने शरीअत के तमाम अहकाम और सब सदाकतें पाक और बेगुनाह हो कर पूरी कर दीं और आदमे अद्वल के फ़रज़न्दों को अपनी रूह देकर उस की फ़र्ज़दी से निकाल लिया और अपना उजू बना लिया तो जिस कद्र लोग उस के उजू बन गए वो सब उस की रास्तबाज़ी से रास्तबाज़ ठहर गए।

और ये भी जानना चाहिए कि आदमे अद्वल के फ़र्ज़न्द जिन पर मौत का फ़त्वा हो चुका था और अब उस की फ़र्ज़दी से भाग कर आदम-ए-सानी की फ़र्ज़दी की पनाह में आ गए हैं तो क्या खुदा का वो हुक्म यानी मौत का फ़त्वा उन पर पूरा हुए बग़ैर टल गया? हरगिज़ नहीं क्योंकि खुदा का हुक्म पूरा हुए बग़ैर टल नहीं सकता कि वो जलती आग की मानिंद है पस खुदावन्द येसू मसीह ने सबकी मौत अपने ऊपर उठा ली यानी सब के बदला में फिदया हुआ।

ये ऐसी बात है जैसे पांव हाथ ने खता की लेकिन सज़ा सर पर आ पड़ी इसी के सज़ा उठाए से हम अच्छे हो गए।

लेकिन चूँकि वो खुद बेगुनाह और पाक था और उस की रूह जैसी कि खुदा में से निकली थी वैसी ही मुबर्रा और बेऐब थी इसलिए अगरचे मौत ने हमारे गुनाहों के सबब से थोड़ी देर के लिए उस को दबा लिया लेकिन हमेशा तक उस को अपने क़ब्ज़े में ना रख सकी क्योंकि एक पाक रूह उस के क़ब्ज़े में हरगिज़ नहीं रह सकती इसलिए वो उस के क़ब्ज़े से निकल आया। लिहाज़ा हम भी उस के आज़ा होने के बाइस से मौत के पंजे से छुट गए इस से ज़ाहिर है कि मसीह की रास्तबाज़ी की वजह से हम किस तरह रास्तबाज़ ठहरते हैं।

मगर ये नेअमत उस वक़्त हासिल होती है जब कि उस की रूह हम में हो अगर उस की रूह हम में नहीं है तो हम लाख इकरार करें कि हम मसीह के हैं हमें कुछ फ़ायदा नहीं बल्कि हम मौत के साये में रहते हैं।

अब ये बयान करना ज़रूरी है कि आया खुदा की रूह आदमीयों को भी मिलती है या नहीं जिसके सबब से उस के उजू बन सकते हैं।

सो जानना चाहिए कि मसीह की रूह ज़रूर उस के सच्चे ईसाईयों को मर्हमत होती है बगैर उस के कोई शख्स ईसाई नहीं हो सकता और वो रूह हर ज़माने में मुकद्दसों को मिलती रही है। उस के वसीले से वो भी मसीह का उजू हो कर नजात पाते रहे हैं और जिन्हें नहीं मिली है वो जहन्नमी हुए और होते हैं।

यूहन्ना के पहले खत में लिखा है कि “चूँकि उसने अपने रूह में से हमें दिया है उसी से हम जानते हैं कि हम उस में कायम रहते हैं और वो हम में।” (4:13)

इसी खत के 2:24 में है “और जो उस के हुकमों पर अमल करता है वो इस में और ये उस में कायम रहता है और इसी से यानी उस रूह से जो उसने हमें दी है हम जानते हैं कि वो हम में कायम रहता है।”

नीज़ यूहन्ना की इन्जील में लिखा है कि “उस रोज़ तुम जानोगे कि मैं अपने बाप में हूँ और तुम मुझमें और मैं तुम में।” (14:20)

इसी तरह रोमीयों में लिखा है कि “लेकिन तुम जिस्मानी नहीं बल्कि रूहानी हो बशर्ते के खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है मगर जिसमें मसीह का रूह नहीं वो उस का नहीं और अगर मसीह तुम में है। तो जान गुनाह के सबब से मुर्दा है मगर रूह रास्त बाज़ी के सबब से ज़िंदा है।” (रोमीयों 8:9)

पहला कुरिन्थियों में लिखा है, “क्या तुम नहीं जानते कि तुम खुदा का मुकद्दस हो और खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है अगर कोई खुदा के मुकद्दस को बर्बाद करेगा खुदा उस को बर्बाद करेगा क्योंकि खुदा का मुकद्दस पाक है और वो तुम हो।” (3:16)

आमाल में लिखा है कि “पतरस ने उनसे कहा कि तौबा करो और तुम में से हर एक अपने गुनाहों की माफ़ी के लिए येसू मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले तो तुम रूह-उल-कुद्स इनाम में पाओगा।” (2:38) देखो इन आयतों से साफ़ ज़ाहिर है कि खुदा का रूह उन आदमीयों को जो मसीह पर ईमान लाते हैं ज़रूर मिलता है और ये बात ना सिर्फ़ इन्जील से बल्कि तमाम नबियों के पाक नविशतों से बहुत ही अच्छी तरह साबित है।

शायद कोई ना-समझ ये कहे कि अगर तुम में ईसा मसीह का रूह रहता है, तो तुम मोअजज़ात क्यों नहीं दिखला सकते। इस का जवाब ये है कि मोअतरिज़ को कुरिन्थियों का पहला खत 12 बाब देखना चाहिए कि रूह के क्या-क्या काम हैं वहां लिखा है कि “नेअमर्ते तो तरह तरह की हैं रूह एक ही है और खिदमर्ते भी तरह तरह की हैं मगर खुदावन्द एक ही है। और तासीरें भी तरह तरह की हैं मगर खुदा एक ही है जो सब में हर तरह का असर पैदा करता है लेकिन हर शख्स में रूह का ज़हूर फ़ायदा पहुंचाने के लिए होता है क्योंकि एक को रूह के वसीले से हिक्मत का कलाम इनायत होता है और दूसरे को इस रूह की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ इल्मीयत का कलाम। किसी को इसी रूह से ईमान और किसी को इसी से रूह का इम्तियाज़ किसी को तरह तरह की ज़बानें। किसी को ज़बानों का तर्जुमा। लेकिन ये सब तासीरें वही एक रूह करता है और जिसको चाहता है बाटता है।

पस इस बात के देखने और इस पर गौर करने से भी साफ़ ज़ाहिर होता है कि हर रूहानी आदमी को मोअजज़ात करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि जब तमाम कलीसिया एक बदन ठहरा जिसका सर खुद हज़रत मसीह है और जिसकी ज़िंदगी मसीह की रूह है तो अब एक शख्स जो इस बदन का एक नाखुन या इस से भी छोटा एक उजू हो और अगरचे इसी रूह से जिसके सबब से तमाम बदन ज़िंदा है वो भी जीता हो तो भी जो उस का काम है वही कर सकता है कोई नाखुन से ये नहीं कह सकता कि तू ज़बान का काम या आँख या नाक का काम क्यों नहीं करता क्योंकि ज़रूर है कि हर उजू अपना अपना काम करे बई-हमा इस शख्स में भी वही रूह है जो बदन पर हुक्मत करता है। फ़क़त

अब गौर कीजिए कलाम-ए-इलाही की ये कैसी साफ़ ताअलीम है जिस पर तमाम कुतुबे अम्बिया गवाही देती हैं और जिससे हम अपने बदनो में ज़िंदगी महसूस करते हैं लेकिन दुनियावी मज़हब जो आदमीयों ने बनाए हैं क्या सिखलाते हैं ज़रा गौर तो कीजिए मसीह के पास आओ ताकि हमेशा की ज़िंदगी का रूह तुम्हें भी मिल जाये वर्ना मुफ़्त आपकी रूह बर्बाद हो जाएगी खुदावन्द आप सब पर अपना फ़ज़ल करे।

रिसाला सोम (3)

आदम-ए-सानी यानी मसीह खुदावन्द के फ़ज़ाइल में

अगरचे खुदावन्द ईसा मसीह के फ़ज़ाइल में से कुछ पहले ज़िम्नन (इशारतन) मज़कूर हो चुका है ताहम ज़रूर है कि एक रिसाला मुस्तक़िल तौर पर उनके फ़ज़ाइल में लिखा जाये ता कि उन लोगों को जो उनके हाल से नावाक़िफ़ हो कर दोज़ख की तरफ़ चले जाते हैं और उनको भी मिस्ल और हादियों (रहनुमाओं) के एक हादी खयाल कर के गुमराही के जंगल में भटकते फिरते हैं फ़ायदा पहुंचे। वाज़ेह रहे कि हमारे खुदावन्द येसू मसीह के ख़साइस (आदात) और फ़ज़ाइल (खूबियां) इस क़द्र हैं कि इस मुख्तसर रिसाले में इनकी गुंजाइश नहीं है मगर में उन ख़साइस को जो निहायत रोशन और वाज़ेह हैं बयान करता हूँ जिनका जानना उन तालिबाने हक़ के लिए जो उनका उज़ू (हिस्सा) बनना चाहते हैं वाज़िब और लाज़िम है पोशीदा ना रहे कि बीस फ़ज़ीलतें खुदावन्द येसू मसीह में ऐसी हैं जो किसी दूसरे हादी और मुर्शिद में नहीं पाई जाती हैं।

(1) फ़ज़ीलत अक्वल : कि वो बाइस ईजादे आलम हैं यानी उसी के वसीले से तमाम कायनात और सब चीज़ें पैदा हुईं। चुनान्चे लिखा है, कि “खुदा ने कहा कि उजाला हो और उजाला हो गया।” (पैदाइश 1:3) “खुदावन्द के कलाम से आस्मान बने और उन के सारे लश्कर उस के मुँह के दम से।” (ज़बूर 6:33) इन आयतों से ज़ाहिर होता है कि खुदा के हुक़म या कलाम से सब चीज़ें उस के वसीले से पैदा हुईं हैं। मगर यूहन्ना की इन्जील में लिखा है कि “इब्तिदा में कलाम था और कलाम खुदा के साथ था और कलाम खुदा था यही इब्तिदा में खुदा के साथ था। सारी चीज़ें उस के वसीले से पैदा हुईं और जो कुछ पैदा हुआ है इस में से कोई चीज़ भी उस के बग़ैर नहीं हुई उस में ज़िंदगी थी और वो ज़िंदगी आदमीयों का नूर था।” (यूहन्ना 1:1-4) फिर आयत 13 में है कि “कलाम मुजस्सम हुआ और फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर हो कर हमारे दर्मियान रहा और हमने उस का ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल।” (1:14)

कुलस्सियों में लिखा है कि “क्योंकि उसी में सारी चीज़ें पैदा की गईं आस्मान की हों या ज़मीन की देखी हों या अनदेखी। तख़्त हों या रियासतें या हुकूमतें या इख्तियारात सारी चीज़ें उसी के वसीले से और उसी के वास्ते पैदा हुईं हैं।” (1:16)

अगर आप इन आयतों पर और उन दीगर आयात पर जिनको हमने पेश नहीं किया है इन्साफ़ के साथ गौर करें तो ब-वज़ाहत साबित होता है कि हज़रत मसीह बाइसे ईजादे आलम हैं। और हमारे लिए कैसी खुशी का मुक़ाम है कि हमने उनको जो बाइसे ईजादे आलम हैं पा लिया है। मुसलमानों का गुमान (खयाल) है कि सारा जहान मुहम्मद साहब के सबब से पैदा हुआ है मगर इस दावे का सबूत उनके पास कुछ नहीं है। और ना वो खुदा के कलाम से इस का सबूत दे सकते हैं। अलबत्ता एक अरबी फ़िक्रह यानी **لو كلبا خلقنا لافلاك** सुनाते हैं, जिसका तर्जुमा ये है कि “ऐ मुहम्मद तू ना होता तो मैं आसमानों को पैदा ना करता” हालाँकि ये फ़िक्रह बिल्कुल बे-बुनियाद है। ये कुरआन की आयत है और ना ये कोई मोअतबर हदीस है बल्कि सूफ़ियों ने घड़ कर मशहूर कर दिया है। मौलवी रहमत-उल्लाह साहब जो मुसलमानों में बड़े मौलवी हैं। उनको भी तस्लीम (कुबूल करना) है कि ये फ़िक्रह किसी हदीस की मोअतबर किताब में पाया नहीं जाता है। चुनान्चे उन्होंने कई बार अपने वाअज़ में बमुक़ाम कराना इस का ज़िक्र किया है। अलबत्ता फ़ारसी की उन ग़ैर-मोअतबर किताबों में जो शाइरों की बनाई हुई हैं। मौजूद है पस ऐसी किताबों का क्या एतबार है। हम तो खुदा के कलाम से खुदावन्द येसू मसीह की निस्बत इस का सबूत देते हैं बल्कि कुरआन में भी मसीह खुदा का कलमा कहलाता है। गर्ज़ की ये दावा मुहम्मद साहब की निस्बत हरगिज़ दुरुस्त नहीं हो सकता क्योंकि कलामे इलाही तो अलग रहा कुरआन से भी ये दावा उन की निस्बत साबित नहीं है। इस के सिवा खुदा का कलाम क़दीम है और मसीह भी क़दीम हैं मगर मुहम्मद साहब मिस्ल और आदमीयों के हादिस (फ़ानी) हैं ना उन्होंने क़दामत का दावा किया है। और ना कुरआन में इस का ज़िक्र है। कलाम अक़ानीम सलासा (तस्लीस के तीन अक़ानीम) में से एक उक़नूम है। मुहम्मद साहब कोई उक़नूम ना थे बल्कि वो अक़ानीम ही के मुन्किर थे। यही सबब है कि मसीह ब-इख़्तयार खुद कुद़त दिखलाता रहा। बहर-हाल मसीह के सिवा और किसी की निस्बत ये दावा पाया सबूत को नहीं पहुंच सकता है।

(2) फ़ज़ीलत दोम : वो रूह-उल-कुद़स की कुद़त से बग़ैर बाप के पैदा हुए चुनान्चे लिखा है कि “उन के इकट्ठे होने से पहले वो रूह-उल-कुद़स से हामिला पाई गई।” (मती 1:18)

यसअयाह नबी इस की ख़बर मसीह से 742 बरस पेशतर दे गया था चुनान्चे उस के 7 बाब आयत 14 में मर्कूम है कि “खुदा आप तुमको एक निशान देगा। देखो कुँवारी

हामिला होगी। और बेटा जनेगी और उस का नाम इम्मानूएल रखेगी।” अगर वो किसी आदमी के नुत्फे से होता तो वो भी और इन्सानों की तरह मौरूसी गुनेहगार होता और शफी (शफाअत करने वाला) भी नहीं हो सकता था इसलिए वो बिला-तवस्त गैरी खुदा से सादिर (निकलने वाला) हुआ चुनान्चे यूहन्ना की इन्जील में मर्कूम है कि, “और उन्होंने उस को कुबूल किया और सच्च सच्च जान लिया कि मैं तेरी तरफ से निकला हूँ और वो ईमान लाए कि तू ही ने मुझे भेजा।” (17:8) मसीह सिर्फ औरत से बगैर बाप के इसलिए पैदा हुआ कि अक्वल शैतान ने औरत ही को जईफ (कमजोर) जान कर बहकाया था। खुदा ने उसी के वसीले से इस का सर कुचलवाना चाहा जैसे (पैदाइश 3:15) में पहले से खबर दी थी, कि वो तेरे सर को कुचलेगा। पस हज़रत मसीह के सिवा किसी ने शैतान पर फ़्तह नहीं पाई।

(3) फ़ज़ीलत सोइम : कि वो खुदा का बेटा ना जिस्मानी तौर पर बल्कि रूहानी तौर पर वो बाप से निकला और दुनिया में आया और सब लोग खुदा के हुक्म से पैदा हुए लेकिन वो ज़ात पाक से अज़ल से है। चुनान्चे यूहन्ना की इन्जील में मज़कूर है कि “और अब ऐ बाप तू उस जलाल से जो मैं दुनिया की पैदाइश से पेशतर तेरे साथ रखता था मुझे अपने साथ जलाली बना दे।” (17:5) और चूँकि वो खुदा से निकला है इसी लिए खुदा का बेटा कहलाता है मगर इस मज़मून को बगैर इमदाद गैबी (गायब) के कोई नहीं समझ सकता है। चुनान्चे (मती 16:13) तक का यही मतलब है कि ऐ पतरस तू जो मुझे ज़िंदा खुदा का बेटा कहता है ये बात जिस्म और खून से नहीं बल्कि मेरे बाप ने तुझ पर ज़ाहिर की है।” और (1 कुरिन्थियों 2:11) में है कि “इसी तरह खुदा की रूह के सिवा कोई खुदा की बातें नहीं जानता इस भेद को रूहानी आदमी ही अच्छी तरह समझ जाते हैं मगर मसीह की निस्बत साफ़ लिखा हुआ है कि “आस्मान से ये आवाज़ आई कि ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।” (मती 3:17)

फिर पतरस के दूसरे खत में लिखा है कि “उस ने खुदा बाप से उस वक़्त इज़ज़त और जलाल पाया जब इस अफ़ज़ल जलाल में से उसे ये आवाज़ आई कि ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ और जब हम उस के साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो आस्मान से यही आवाज़ आती सुनी।” (मती 17:5) और दाऊद नबी 520 बरस पेशतर कहता है कि “मैं हुक्म को आशकारा करूँगा, कि खुदावन्द ने मेरे हक़ में फ़रमाया तू मेरा बेटा है मैं आज के दिन तेरा बाप हुआ।” (ज़बूर 3:7) इस ज़बूर की आयत 12 में है कि “बेटे को

चूमो ऐसा ना हो कि वो बेज़ार हो और तुम राह में हलाक हो जाओ जब उस का क्रहर यकायक भड़के।” नीज़ आयत 3, 4 में है कि “आओ हम उनके बंद खोल डालें और उनकी रस्सियाँ अपने से तोड़ फेंकें वो जो आस्मान पर तख्त नशीन हैं हँसेगा।” यानी जो लोग उस के बेटे को कुबूल नहीं करते और उस के बरखिलाफ़ बातें करते हैं खुदा उनसे इस कद्र नाराज़ है फिर ये कि मसीह ने खुद कहा है कि “मैं खुदा का बेटा हूँ।” चुनांचे यूहन्ना 9:35, 36 का यही मतलब है कि मसीह ने उसे कहा कि “तू खुदा के बेटे पर ईमान लाता है उसने जवाब दिया कि ऐ खुदावन्द वो कौन है ईसा ने कहा जो तुझसे बोलता है वही है।” भाइयो जब खुदा का बेटा हमें मिल गया और हमारा हादी हुआ तो अब हमें और क्या चाहिए। अफ़सोस है कि अगर मसीह पर गौर नहीं करते और ये जो इन्जील शरीफ़ में कहीं इब्ने आदम या नबी या रसूल या सरदार काहिन या इब्ने दाऊद वगैरह उनके नाम मज़कूर हैं ये नाम उनके एक एक काम और खासियत ज़ाहिर करते हैं सिर्फ़ गौर करने की ज़रूरत है।

(4) फ़ज़ीलत चहारुम : वो कादिर-ए-मुतलक था यानी एतबारे उलूहियत वो हर तरह साहिबे कुद़त था अपने इख्तियार से सब कुछ करता था क्योंकि उसने ब-इख्तियार खुद हर तरह के अजीब व गरीब काम दिखलाए और कहा कि “मेरा बाप अब तक काम करता है मैं भी करता हूँ।” चुनान्चे यूहन्ना 5:18 में है कि उसने अपने आपको खुदा के बराबर कहा। यही सबब था कि यहूदी उस के ज़्यादा दुश्मन बन गए। (मुकाशफ़ा 1:17, 18) में है कि जब मैंने उसे देखा तो उस के पांव पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उसने ये कह कर मुझ पर अपना दहिना हाथ रखा कि खौफ़ ना कर मैं अक्वल और आखिर और जिंदा हूँ मैं मर गया था और देख मैं अबद-उल-आबाद जिंदा रहूँगा।

(5) फ़ज़ीलत पंजुम : कि वो आलिमुल-गैब भी था चुनान्चे इन्जील के बहुत से वाक़ियात हैं फ़ज़ीलत पर दलालत करते हैं मसलन, “उसने उनके खयालों को जान कर उनसे कहा।” (मती 12:25)

“येसू ने उनके खयाल मालूम करके कहा कि तुम क्यों अपने दिलों में बुरे खयाल लाते हो।” (मती 9:4) “और इस की हाजत ना रखता था कि कोई इन्सान के हक़ में गवाही दे क्योंकि वो आप जानता था कि इन्सान के दिल में क्या-क्या है।” (यूहन्ना 2:25) और उस के फ़रज़न्दों को जान से मारूँगा और सारी कलीसियाओं को मालूम होगा

कि गुर्दों और दिलों का जांचने वाला मैं ही हूँ। (मुकाशफ़ा 2:23) अब हम जान गए कि तू सब कुछ जानता है और इस का मुहताज नहीं कि कोई तुझसे पूछे इस सबब से हम ईमान लाते हैं कि तू खुदा से निकला है। (यूहन्ना 16:30) पस अब गौर कीजिए कि कोई नबी ग़ैब दान नहीं होता है नबियों को इसी क़द्र ग़ैब की बात मालूम होती है, जिस क़द्र खुदा-ए-तआला उनको बतलाता है मगर हमारा खुदावन्द येसू मसीह जो खुदा से निकला है आलिमुल-ग़ैब भी है।

(6) फ़ज़ीलत शश्म : कि उस की ताअलीम तमाम जहान के मुअल्लिमों की ताअलीम से अफ़ज़ल और आला बल्कि अक़ल से बुलंद और बाला है खुदा के बग़ैर कोई शख्स ऐसी ताअलीम नहीं दे सकता है जो लोग अहदे-अतीक़ व जदीद से वाकिफ़ हैं और कुशादा-दिल हैं वो इस फ़ज़ीलत से ख़ूब वाकिफ़ हैं और कोई अक़लमंद इस फ़ज़ीलत से इन्कार नहीं कर सकता है। मुसलमान जो ये कहते हैं कि हमारा कुरआन बहुत फ़सीह (शिरी) कलाम है वो सिर्फ़ लफ़्ज़ी फ़साहत पर नाज़ाँ हैं इस के मुताल्लिक़ हमने हिदायत-उल-मुस्लिमीन के बाब हफ़्तुम व हशतम के आठ फसलों में लिखा है। हम लोग तौरैत व इन्जील की लफ़्ज़ी फ़साहत पर नाज़ाँ नहीं बल्कि उस के मज़ामीन आलीया पर नाज़ और फ़ख़्र करते हैं लफ़्ज़ी फ़साहत खुद कितनी ही आला हो इस काबिल नहीं कि इस पर फ़ख़्र किया जाये।

(7) फ़ज़ीलत हफ़्तुम : कि वो पाक और बेऐब और मासूम था। खुदा के कलाम से ज़ाहिर है, कि सब जहां के लोग ख़्वाह नबी हों या रसूल ख़्वाह आम हों या खास सब के सब गुनेहगार हैं सिवाए खुदावन्द ईसा मसीह के मसलन, “क्योंकि उसने किसी तरह का जुल्म ना किया और उस के मुँह में हरगिज़ छल ना था।” (यसअयाह 53:9)

“कि उसने गुनाह किया और ना उस के मुँह से कोई मक्र की बात निकली।” (1 पतरस 2:22)

“तुम जानते हो कि वो इसलिए ज़ाहिर हुआ था ता कि गुनाहों को उठा ले जाये। और उस की ज़ात में गुनाह नहीं।” (1 यूहन्ना 3:5) “तुम में कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है अगर मैं सच्च बोलता हूँ तो मेरा यकीन क्यों नहीं करते।” (यूहन्ना 8:46) “जो

गुनाह से वाकिफ़ ना था उसी को उसने हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ता कि हम उस में हो कर खुदा की रास्तबाज़ी हो जाएं।” (2 कुरिन्थियों 5:21) “सारी बातों में हमारी तरह आजमाया गया ताहम बेगुनाह रहा।” (इब्रानियों 4:5) खुद हाकिम उस के बेगुनाह होने का इकरार करता है। चुनान्चे मती 27:24 में मज़कूर है, “जब पीलातूस ने देखा कि मुझसे कुछ बन नहीं पड़ता बल्कि हंगामा और ज़्यादा होता जाता है। तो पानी ले के लोगों के सामने अपने हाथ धोए और कहा कि मैं इस रास्तबाज़ के खून से पाक हूँ।” एक चोर जो उस के साथ मस्लूब हुआ था यूं कहता है, कि “हमारी सज़ा तो वाजिबी है क्योंकि अपने कामों का बदला पा रहे हैं लेकिन उसने कोई बेजा काम नहीं किया।” (लूका 23:41) नीज़ दाऊद नबी ज़बूर 16 की आयत 10 में मसीह को “कुददूस” कहता है। जिसके माअने बिल्कुल बेऐब और निहायत पाक के हैं उस के सिवा यूहन्ना से सब लोग गुनाहों का इकरार कर के इस्तिबाग़ (बपतिस्मा) लेते थे। लेकिन जब हज़रत मसीह इस्तिबाग़ लेने गया तो यूहन्ना ने कहा मैं खुद तुझसे इस्तिबाग़ लेने का मुहताज हूँ तू मेरे पास क्यों आया उस वक़्त मसीह ने गुनाह का इकरार नहीं किया बल्कि ये कहा कि तमाम रास्तबाज़ीयों को पूरा करने की गर्ज़ से इस्तिबाग़ लेता हूँ। मुसलमान अगरचे आँहज़रत को मासूम मानते हैं लेकिन उनके पास इसकी कोई दलील नहीं बल्कि कुरआन में आपके गुनाहों का ज़िक्र है।

(8) फ़ज़ीलत हशतम : कि वो सब आदमीयों और फ़रिशतों का मब्दा (अस्ल, बुनियाद) है। ताकि येसू के नाम पर हर एक घुटना ख्वाह आसमानियों का हो। ख्वाह ज़मीनियों का ख्वाह उनका का जो ज़मीन के नीचे हैं। (फिलिप्पियों 2:10)

“और जब पहलौठे को दुनिया में फिर लाता है तो कहता है कि खुदा के सब फ़रिशते उसे सज्दा करें।” (इब्रानियों 1:6) कुरआन में जो ये है कि आदमे अक्वल को फ़रिशतों ने सज्दा किया इस का सबूत खुदा के कलाम से नहीं मिलता है। अलबता आदम-ए-सानी यानी खुदावन्द मसीह को बेशक फ़रिशते सज्दा करते हैं जो बाप के साथ तख़्त है।

(9) फ़ज़ीलत नहम : हमारा खुदावन्द येसू मसीह हर वक़्त हाज़िर नाज़िर है। ज़ेल की आयात मुलाहिज़ा हों, “और देखो मैं ज़माने के आखिर तक हर रोज़ तुम्हारे साथ

हूँ।” (मत्ती 28:28) “मैं तेरे काम और तेरी मशक्कत और तेरा सब्र तो जानता हूँ और ये भी कि तू बंदों को देख नहीं सकता।” (मुकाशफ़ा 2:2)

(10) फ़ज़ीलत दहुम : कि वो शफ़ाअत करने वाला है। चुनान्चे वो खुद फ़रमाता है कि “मुझे गुनाह बख़्शने का इख़्तियार है।” और इस दावे को उसने अच्छी तरह साबित भी किया है। “लेकिन इसलिए कि तुम जान लो कि इब्ने-आदम को ज़मीन पर गुनाहों के माफ़ करने का इख़्तियार है।” (मत्ती 9:6) “और ऐ मेहनत उठाने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो सब मेरे पास आओ मैं तुम्हें आराम दूंगा। मेरा जूवा अपने ऊपर उठा लो। और मुझसे सीखो क्योंकि मैं हलीम हूँ और दिल का फ़रोतन। तो तुम्हारी जानें आराम पाएँगी। क्योंकि मेरा जुआ (बोझ) मुलायम है। और मेरा बोझ हल्का है। (मत्ती 11:28, 30) खुदावन्द मसीह के सिवा किसी ने दावा नहीं किया है कि मैं तुम्हारी शफ़ाअत करूँगा सब मुर्शिदों ने आदमीयों के सर पर बोझ डाला है मगर हज़रत मसीह ने खुद हमारा बोझ अपने सर पर उठा लिया है। जिसके लिए हम उस के शुक्र गुज़ार हैं।

(11) फ़ज़ीलत याज़ दहुम : कि उसने गुनेहगारों के एवज़ अपनी जान दी और सब ईमानदारों को बचा लिया वो दोस्त जिसको हम हकीकी माअनों में दोस्त कह सकें मसीह के सिवा कोई और नज़र नहीं आता मगर इस कफ़ारे का लुत्फ़ और इस के अज़मत और जलाल और ये कि वो ज़रूर ही अम्र था उस वक़्त समझ में आता है, कि जब कोई शख्स तौरात और इन्जील को समझ पढ़ता है।

(12) फ़ज़ीलत दवाज़दहुम : रहम, हुलुम, फ़िरोतनी, तवक्कुल, सब्र व कनाअत वगैरह तमाम औसाफ़-ए-हमीदा (काबिल-ए-तारीफ़ ख़ूबियां) जैसे उस की ज़ात में पाए जाते हैं। दूसरों में नज़र नहीं आते। चुनान्चे इन्जील के पढ़ने वाले इस बयान के गवाह हैं।

(13) फ़ज़ीलत सेज़दहुम : तमाम नबियों और रसूलों और सब मुक़द्दसों और सारे जहां के अक्लमंदों ने यूँ कहा है, कि हम खुदा तआला को जैसा जानना चाहिए हरगिज़ नहीं जान सकते क्योंकि वो एक राज़ है और बुजुर्गों का ये कौल भी मशहूर है कि صاعر فناءك حق معرفتك यानी जो पहचानने का हक़ है हमने इस तरह खुदा को नहीं पहचाना। इस का सबब ये है कि मुम्किन नहीं कि कोई इन्सान उस ज़ात को जो

लामहदूद और गैर-मुद्रिक (समझ ना आने वाला) कमा-हक्का (जैसा उस का हक है) मालूम कर सके इसलिए तमाम अकला (अकल-मंद) इस पर मुतफिक हैं कि कोई शख्स उस का इदराक (समझ) नहीं कर सकता है लेकिन हमारा मुनज्जी जो कामिल इन्सान और कामिल खुदा है यूं फरमाता है कि “ऐ आदिल बाप दुनिया ने तुझे नहीं जाना मगर मैंने तुझे जाना और उन्होंने भी जाना है कि तू ने मुझे भेजा है।” (यूहन्ना 17:25) में है पर “मैं उसे जानता हूँ इसलिए कि मैं उस की तरफ से हूँ। और उसी ने मुझे भेजा है।” (7:29) “तुमने उसे नहीं जाना लेकिन मैं उसे जानता हूँ।” (8:5) “जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ।” (10:15) देखो ये वो बड़ी फ़ज़ीलत है जो किसी नबी और रसूल को भी मर्हमत (मेहरबानी, अता) नहीं हुई।

(14) फ़ज़ीलत चारदहुम : ये कि हज़रत ईसा के वसीले के बग़ैर हम खुदा को राज़ी नहीं कर सकते और खुदा की मर्ज़ी उस के हाथ के वसीले बर आएगी। “क्योंकि मुझसे जुदा हो कर तुम कुछ नहीं कर सकते।” (यूहन्ना 15:5) “राह और हक और ज़िंदगी में हूँ कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आता।” (14:6)

(15) फ़ज़ीलत पांज़दहुम : ये कि क्रियामत के दिन सब मुर्दों को वही जिलाएगा सबकी ज़िंदगी उसी के हाथ में है। चुनान्चे लिखा है कि “बल्कि उसे आखिरी दिन फिर ज़िंदा करूँगा।” (यूहन्ना 6:39) “और मैं उसे आखिरी दिन फिर ज़िंदा करूँगा।” आयत 20 आयत 53 में है कि “जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है। हमेशा की ज़िंदगी उस की है और मैं उसे आखिरी दिन फिर ज़िंदा करूँगा।” (मुकाशफ़ा 2:18) में है कि “आलम-ए-अर्वाह और मौत की कुंजियाँ मेरे पास हैं। ऐ भाइयो जो हमें कब्रों से उठाए क्या हम उस की फ़रमांबर्दारी ना करें? लाज़िम है कि उस की रज़ा जोई (मर्ज़ी पूरी करने) के दरपे हों।”

(16) फ़ज़ीलत शानज़दहुम : कि वो क्रियामत का पहला फल है। चुनान्चे कुरिन्थियों में लिखा है, “लेकिन फ़िल-वाक़ेअ मसीह मुर्दों में से जी उठा और जो सो गए हैं उनमें पहला फल हुआ।” (कुरिन्थियों 15:20)

(17) फ़ज़ीलत हफ़तदहुम : कि क्रियामत के दिन वही सबकी अदालत करेगा। खुदा ने अदालत उसी के सपुर्द की है। दुश्मन और दोस्त उस के आगे हाज़िर होंगे और

वही इन्साफ़ करेगा। “क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा उस वक़्त हर एक को उस के कामों के मुवाफ़िक़ बदला देगा।” (मती 16:27) “जब इब्ने-आदम नई पैदाइश में अपने जलाल के तख़्त पर बैठेगा तो तुम भी जो मेरे पीछे हुए हो। बारह तख़्तों पर बैठ कर इस्राईल के बारह क़बीलों का इन्साफ़ करोगे।” (मती 19:28)

“और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा। जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरीयों से जुदा करता है।” (मती 25:31) “क्योंकि बाप किसी की अदालत भी नहीं करता है बल्कि उसने अदालत का सारा काम बेटे के सपुर्द किया है ताकि सब लोग बेटे की इज़ज़त करें जिस तरह बाप की इज़ज़त करते हैं।” (यूहन्ना 5:22, 23)

(18) फ़ज़ीलत यज़दहुम : ये कि वो शरीअत का पूरा करने वाला है यानी उसने शरीअत के अहकाम बेऐब हो कर कमा-हक्का (जैसा उस का हक़ हो) अदा कर दिए। इसलिए उस के सब फ़र्ज़न्द ज़ाहिरी शरीअत से आज़ाद हुए चुनान्चे लिखा है कि “क्योंकि हमें इस तरह सारी रास्तबाज़ी पूरी करनी मुनासिब है।” (मती 3:15) “जब येसू ने वो सिरका पिया तो कहा तमाम हुआ और सर झुका कर जान दे दी।” (यूहन्ना 9:30) मती 5:17 में है कि “मैं मन्सूख़ करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ।”

(19) फ़ज़ीलत नज़दहम : ये कि हमारा खुदावन्द येसू मसीह अबद-उल-आबाद (हमेशा) ज़िंदा है उस की उम्र का इतिहा नहीं वह आस्मान पर ज़िंदा है और खुदा के दहने हाथ बैठा है। यसअयाह 53:10 में है कि “उस की उम्र दारज़ होगी।” हालाँकि आयत 9 में कह चुका है कि “उस की क़ब्र दौलत मंदों के साथ हुई।” मगर अब कहता है कि “उस की उम्र दराज़ होगी” साफ़ ज़ाहिर है कि वो मर के जी उठेगा। चुनान्चे इंजीलों से खूब साबित है कि वो तीसरे दिन जी उठा और चालीस दिन तक दिखाई दिया और बहुतों ने देखा और बहुतों के साथ रहा। फिर आस्मान पर चला गया।

इब्रानियों 1:3 कि “वो गुनाहों को धो कर आलम-ए-बाला पर किबरिया (खुदा) की दाहिनी तरफ़ जा बैठा।”

हज़रत दाऊद फ़र्माते हैं कि “खुदावंद ने मेरे खुदावन्द को फ़रमाया तू मेरे दहने हाथ बैठ जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पांव की चौकी बनाऊँ।” (ज़बूर 110:1)

खुद मसीह ने कहा है कि “इस के बाद तुम इब्ने-आदम को कादिर-ए-मुतलक की दाहिनी तरफ बैठे और आस्मान के बादलों पर आते देखोगे।” (मत्ती 26:26) “देखो मैं आस्मान को खुला हुआ और इब्ने-आदम को खुदा की दाहिनी तरफ खड़ा देखता हूँ।” (आमाल 7:56)

(20) फ़ज़ीलत बीसतम : हमारे खुदावन्द की ये है कि कुतब-ए-अहदे-अतीक में सैंकड़ों बशारतें और पेशीन-गोईयाँ उस की निस्बत लिखी हैं जिनसे खुदा का जलाल ज़ाहिर होता है। और जिन पर गौर करने से मसीह की सदाकत और नीज़ ये मालूम होता है, कि अक्वलीन व आखिरी का वसीला-ए-नजात सिर्फ़ खुदावन्द ईसा मसीह है। इस के सिवा एक और किस्म की पेशीन गोईयाँ भी हैं जिनको इशारात कहते हैं जो अक्वल किस्म की पेशीन गोइयों से ज़्यादातर उस का जलाल ज़ाहिर करती हैं। जिनको अहले-इल्म और रूहानी आदमीयों के सिवा अवाम नहीं समझ सकते हैं और इस कस्रत से पाई जाती हैं कि आज तक मुहक्किकीन (तहक़ीक़ करने वाले) की अक्ल ने उनका अहाता (हदबंदी) नहीं किया है। बल्कि रोज़ बरोज़ नए नए मज़ामीन मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) होते जाते हैं। मगर ये इशारात उन लोगों को मालूम होते हैं, जो रात-दिन कलाम-ए-इलाही में गौर करते रहते हैं। पस अब हम नाज़रीन से ये इल्तिमास करते हैं कि खुदावन्द येसू मसीह की तरफ़ आप गौर करें और उस के फ़ज़ाइल पर लिहाज़ कर के तमाम जहान के हादियों को इस के साथ मुक़ाबला कर के देखें अगर वो सारे जहान के हादियों से हर बात में अफ़ज़ल साबित हो तो इस की ख़िदमत में हाज़िर हो और इस से ताअलीम पाना निहायत मुनासिब है वर्ना मुफ़्त उम्र बर्बाद कर के खुदा को नाराज़ करना अच्छा नहीं है। और ये भी याद रखना कि क्रियामत का दिन अचानक आने वाला है यका-यक मसीह आस्मान से ज़ाहिर होगा फिर उस वक़्त बजुज़ कफ़-ए-अफ़सोस मलने (अफ़सोस से हाथ मलना) के और कोई चारा ना होगा। खुदा आपको तहक़ीक़ का शौक और दूर अंदेशी (दूर की सोचना) की तौफ़ीक़ इनायत करे। आमीन

रिसाला चहारुम (4)

54 पेशीन गोइयाँ के जिक्र में

माह गुज़श्ता के रिसाले में हमारे खुदावन्द येसू मसीह के बाअज़ फ़ज़ाइल का जिक्र हुआ अब जानना चाहिए कि खुदावन्द येसू मसीह जो आदम-ए-सानी है जिसके साथ पैवंद होने से खुदा की फ़र्ज़दी का हक़ मिलता है निहायत दर्जे का मोअतबर (काबिल-ए-एतबार) और यकीनन खुदा की तरफ़ से है और ये इसलिए बयान किया जाता है कि बहुत से लोग जो नए मज़ाहिब से नाराज़ हैं ईसाई मज़हब से भी इसलिए खुश नहीं हैं कि इस के बरहक़ होने की दलाईल पर उन्होंने गौर नहीं किया और ना कलाम-ए-इलाही को तहकीक़ की निगाह से देखा बल्कि और झूटे मज़ाहिब के क्रियास पर इस को भी झूटा कहा। लिहाज़ा ज़रूरत है कि सच्चे मज़हब की चंद दलाईल पेश की जाएं ताकि इस रिसाले के समझने में दिक्कत ना हो। वाज़ेह रहे कि पहली दलील जिसको सब दलीलों से अक्वल जानना ज़रूर है ये है कि कलाम-ए-इलाही की किताबें जो मुख्तलिफ़ ज़माने में अलेहदा अलेहदा (अलग-अलग) मुतअद्दिद पैग़म्बरों की मार्फ़त इल्हाम से लिखी गई हैं और जो आज तक इसी तरह सही सालिम चले आए हैं जिनका सबूत कुछ-कुछ हिदायत-उल-मुस्लिमीन में भी हो चुका है। वो सब के सब इस बात पर गवाही देते हैं कि खुदावन्द ईसा मसीह वही नजातदिहंदा है जो खुदा की तरफ़ से सारे जहान की नजात के लिए मुकर्रर हुआ है। और ये इल्हामी किताबें मसीह की निस्बत ये ज़ाहिर करती हैं कि ईसा मसीह तमाम अम्बिया-ए-अक्वलीन व आखरीन और तमाम बनी-नूअ इन्सान का एक ही शफ़ी (शफ़ाअत करने वाला) और उम्मीद गाह है क्योंकि इन किताबों में उस की निस्बत ब-कसरत पेशीन गोइयाँ मौजूद हैं।

1. पेशीनगोई खुदा का बेटा दुनिया में आएगा। “मैं हुक्म को आशकारा करूँगा कि खुदा ने मेरे हक़ में फ़रमाया तू मेरा बेटा है मैं आज के दिन तेरा बाप हुआ।” (ज़बूर 2:7) “वो बुजुर्ग़ होगा और खुदा तआला का बेटा कहलाएगा और खुदावन्द खुदा उस के बाप दाऊद का तख़्त उसे देगा।” (लूका 2:32)

2. पेशीनगोई वो औरत की नस्ल से पैदा होगा यानी मर्द के नुत्फे से ना होगा। “वो यानी औरत की नस्ल तेरे सर को कुचलेगा और तू उस की एड़ी को काटेगा।”

(पैदाइश 3:15) “लेकिन जब वक़्त पूरा हो गया तो खुदा ने अपने बेटे को भेजा जो औरत से पैदा हुआ और शरीअत के मातहत पैदा हुआ।” (ग़लतीयों 4:4)

3. पेशीनगोई वो अबराहाम की नस्ल से होगा। (पैदाइश 22:18) “और तेरी नस्ल से ज़मीन की सारी कौमें बरकत पाएँगी क्योंकि तू ने मेरी मानी।” (पैदाइश 22:18) “पस इब्राहिम और उस की नस्ल से वाअदे किए गए वो नहीं कहता कि नसलों से जैसा कि बहुतों के वास्ते कहा जाता है बल्कि एक के वास्ते कि तेरी नस्ल को और वो मसीह है।” (ग़लतीयों 3:16)

4. पेशीनगोई वो इज़हाक की नस्ल से होगा ना इस्माईल की। (पैदाइश 21:12) “क्योंकि तेरी नस्ल इज़हाक से कहलाएगी।” (पैदाइश 21:12) “यानी इस्माईल को घर से निकाल दे क्योंकि वो वाअदे का फ़र्ज़न्द नहीं है।” इब्रानियों 11:17 से 19 तक लिखा है कि “ईमान ही से अबराहाम ने आजमाईश के वक़्त इज़हाक को नज़्र गुज़राना और जिसने वादों को सच्य मान लिया था वो इस इकलौते को नज़्र करने लगा।” और मत्ती 1:1 से ज़ाहिर है कि मसीह इज़हाक की नस्ल से पैदा हुआ।

5. पांचवीं पेशीनगोई वो दाऊद की नस्ल से होगा। “खुदावन्द ने सच्चाई से दाऊद के लिए क़सम खाई जिससे वो ना फिरेगा कि मैं तेरे पेट के फल में से किसी को तेरे लिए तेरे तख़्त पर बिठाऊंगा।” (ज़बूर 132:11) यर्मियाह 23:5 में है कि, “देख वो दिन आते हैं खुदावन्द कहता है कि मैं दाऊद के लिए सदाक़त की एक शाख़ लगाऊंगा और एक बादशाह बादशाही करेगा और इक़बालमंद होगा और अदालत सदाक़त ज़मीन पर करेगा।” यहां से ज़ाहिर होता है कि सुलेमान के सिवा कोई और शख़्स दाऊद के लिए उठने वाला है क्योंकि यर्मियाह बहुत पीछे बड़ा है। आमाल 13:23 में है कि “उसी की नस्ल में से यानी दाऊद की खुदा ने अपने वाअदे के मुवाफ़िक़ इस्राईल के पास एक मुनज्जी यानी येसू को भेज दिया।”

6. पेशीनगोई वो वक़्त मुकर्ररा पर पैदा होगा यहूदाह से रियासत नहीं छुटेगी और ना उस की नस्ल से हुकूमत का असा जुदा ना होगा और ना हाकिम उस के पांव के दरम्यान से जाता रहेगा। जब तक कि शैल्वा ना आए और कौमें उस के पास इकट्ठी होंगी।” (पैदाइश 49:10)

सत्तर (70) हफ्ते तेरे लोगों और तेरे शहर मुक़द्दस के लिए मुक़र्रर किए गए हैं ताकि इस मुद्दत में शरारत ख़त्म हो और ख़ता-कारीयां आख़िर हो जाएं और बदकारी की बाबत कफ़ारा किया जाये और अबदी रास्तबाज़ी पेश की जाये और इस रुयत (रोया) पर और नबुव्वत पर मुहर हो और इस पर जो सबसे ज़्यादा कुद्दूस है मसह किया जाये। सो तू बुझ और समझ कि जिस वक़्त से यरूशलेम का दुबारा तामीर करने का हुक्म निकले मसीह बादशाहज़ादा तक सात हफ़ते हैं और बासठ हफ़ते उस वक़्त बाज़ार फिर तामीर किए जाएंगे और दीवार बनाई जाएगी मगर तंगी के दिनों में।” (दानिएल 9:24)

लूका की इन्जील में लिखा है कि “इन दिनों में ऐसा हुआ कि कैसर ओगस्तस की तरफ़ से ये हुक्म-जारी हुआ कि सारी दुनिया के लोगों के नाम लिखे जाएं।” (2:1)

7. पेशीनगोई वो कुँवारी से पैदा होगा। “देखो कुँवारी हामिला होगी और बेटा जनेगी।” (यसअयाह 7:14) मती में है “उनके इकट्ठा होने से पहले वो रूह-उल-कुद्स की कुद्दत से हामिला पाई गई।” (मती 1:18)

8. पेशीनगोई वो इम्मानुएल कहलाएगा यानी खुदा हमारे साथ। “और उस का नाम इम्मानुएल रखेगी।” (यसअयाह 7:14) ये भी मसीह में पूरी हुई चुनान्चे इस का ज़िक्र मती 1:22, 23 में है और सब जहान के ईसाई उसे अपना इम्मानुएल कहते हैं।

9. पेशीनगोई वो बैत-अल-लहम की बस्ती में पैदा होगा। “ऐ बैत-अल-लहम अफराता हर चंद कि तू यहूदा ह के हज़ारों में शामिल होने के लिए छोटा है तो भी तुझमें से एक शख्स निकल के मेरे पास आएगा। जो इस्राईल में हाकिम होगा और उस का निकलना कदीम-उल-अय्याम-उल-अज़ल से है।” (मीकाह 5:2) चुनान्चे मती 2:1 में है कि “जब येसू हेरोदेस बादशाह के ज़माने में यहूदिया के बैत-अल-लहम में पैदा हुआ।”

10. पेशीनगोई वो बुजुर्गों से इज़ज़त पाएगा। “और तर्सुस और जज़ीरों के सलातीन नज़े लाएँगे। और सीबा और सबा के बादशाह हदीए गुजारेंगे।” (ज़बूर 72:10)

चुनान्चे मती 2:1 से 11 तक इस इज़ज़त का ज़िक्र मौजूद है।

11. पेशीनगोई उस वक़्त बच्चे क़त्ल किए जाएंगे। चुनान्चे यर्मियाह के सहीफे में है कि, “खुदावन्द यूँ कहता है कि रामा में एक आवाज़ सुनी गई है। नोहा और ज़ार ज़ार

रुने की। राखिल अपने लड़कों पर रूती है। और अपने लड़कों की बाबत तसल्ली नहीं पाती क्यूँकि वो नहीं हैं।” (यर्मियाह 3:15) मत्ती 2:16 से 18 तक में लिखा है कि, “जब हेरोदेस ने देखा कि मजूसियों ने मेरे साथ हंसी की तो निहायत गुस्सा हुआ और आदमी भेज कर बैत-लहम और उस की सारी सरहदों के अंदर के सब लड़कों को क़त्ल करवा दिया जो दो बरस के या उस से छोटे थे। उस वक़्त के हिसाब से जो उसने मजूसियों से तहकीक़ किया था। मख़्फ़ी (छुपा) ना रहे कि राखिल जो याक़ूब की ज़ौजा (बीवी) और यूसुफ़ की माँ थी उस का मज़ार बैत-लहम में है।

12. पेशीनगोई वो मिस्र से बुलाया जाएगा। चुनान्चे होसेअ 11:1 में है कि “जब इस्राईल लड़का था मैंने उस को अज़ीज़ रखा और अपने बेटे को मिस्र से बुलाया।” मत्ती 2:15 में है कि “हेरोदेस मरने तक वहीं रहा ताकि जो खुदावन्द ने नबी की मारफ़त कहा था पूरा हो कि मिस्र में से मैंने अपने बेटे को बुलाया।”

13. पेशीनगोई उस के आगे यहया (यूहन्ना) पैग़म्बर मुनादी करेगा। चुनान्चे यसअयाह 40:3 में है कि “ब्याबान में एक मुनादी करने वाले की आवाज़ तुम खुदावन्द की राह तैयार करो सहारा में हमारे खुदा के लिए एक सीधी शाराह तैयार करो।” और देखो में अपना रसूल भेजता हूँ। और वो मेरी आगे मेरी राह को दुरुस्त करेगा। और वो खुदावन्द जिसकी तलाश में तुम हो हाँ अहद का रसूल जिससे तुम खुश हो और अपनी हैकल में नागहां आएगा। देखो वो यक़ीनन आएगा। रब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है।” मलाकी 3:1) मत्ती 3:1,2 में है कि, “उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आया और यहूदिया के ब्याबान में ये मुनादी करने लगा कि तौबा करो क्यूँकि आस्मान की बादशाहत नज़दीक आ गई है।”

14. पेशीनगोई वो रूह-उल-कुद्स से मसह किया जाये। चुनान्चे 45 ज़बूर 7 में है कि “तू सदाक़त का दोस्त और शरारत का दुश्मन है इसलिए खुदा तेरे खुदा ने तुझको खुशी के तेल से तेरे हम-सरों से ज़्यादा मसह किया।” यसअयाह 5:4 में है कि “और खुदावन्द की रूह उस पर ठहरेगी हिक्मत और ख़िर्द (अक़ल) की रूह मस्लिहत और कुद्रत की रूह मारफ़त और खुदावन्द के ख़ौफ़ की रूह। नीज़ यसअयाह 61:1 में है “खुदावन्द खुदा की रूह मुझ पर है क्यूँकि खुदावन्द ने मुझे मसह किया ताकि मुसीबत ज़दों को खुशख़बरीयाँ दूँ। उसने मुझे भेजा है, कि मैं टूटे दिलों को दुरुस्त करूँ और क़ैदीयों के

लिए रिहाई और बन्धुओं के लिए कैद से निकलने की मुनादी करूँ।” मत्ती 3:16 में है कि “देखो उस के लिए आस्मान खुल गया और उसने खुदा की रूह को कबूतर की मानिंद उतरते और अपने ऊपर आते देखा।” आमाल 10:38 में है कि “येसू नासरी को किस तरह खुदा ने रूह-उल-कुद्स और कुद्रत से ममसूह किया।”

15. पेशीनगोई वो खुदा का बेटा और मूसा की मानिंद पैगम्बर भी होगा। “खुदावन्द तेरा खुदा तेरे लिए तेरे ही दर्मियान से तेरे ही भाईयों में से मेरी मानिंद एक नबी बरपा करेगा। तुम उस की तरफ कान धरो।” (इस्तिस्ना 18:15) “और इस मसीह को जो तुम्हारे वास्ते मुकर्रर हुआ है। यानी येसू को भेजना जरूर है कि वो आस्मान में उस वक़्त तक रहे जब तक कि वो सब चीज़ें बहाल ना की जाएं जिनका ज़िक्र खुदा ने अपने पाक नबियों की ज़बानी किया है जो दुनिया के शुरू से होते आए हैं। चुनान्चे मूसा ने कहा कि खुदावन्द खुदा तुम्हारे भाईयों में से तुम्हारे लिए मुझसा एक नबी पैदा करेगा। जो कुछ वो तुमसे कहे उस की सुनना।” (आमाल 3:20-22)

16. पेशीनगोई वो मलक-ए-सिदक़ की तरह काहिन अबद तक काहिन है। (ज़बूर 110:4) नीज़ इब्रानियों 5:5, 6 में है कि “इसी तरह मसीह ने भी सरदार काहिन होने की बुजुर्गी अपने तई नहीं दी बल्कि उसी ने दी जिसने उसे कहा कि तू मेरा बेटा है आज तू मुझसे पैदा हुआ।” चुनान्चे दूसरे मुक़ाम में भी लिखा है कि तू मलक-ए-सिदक़ की तौर पर अबद तक काहिन है।

17. पेशीनगोई वो मुनादी करेगा। “खुदावन्द खुदा की रूह मुझ पर है क्योंकि खुदावन्द ने मुझे मसह किया ताकि मुसीबत ज़दों को खुशखबरीयाँ दूँ उसने मुझे भेजा है कि मैं टूटे दिलों को तंदुरुस्त करूँ और कैदीयों के लिए छूटने और बंधों के लिए कैद से निकलने की मुनादी करूँ कि खुदावन्द के साल-ए-मक़बूल का और हमारे खुदा के इंतिकाम के रोज़ का इश्तिहार दूँ।” (यसअयाह 61:1, 2) चुनान्चे लूका की इन्जील में 4:16 से 21 तक लिखा है कि “मसीह नासरी में जहां उसने परवरिश पाई थी और आया और अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ सबत के दिन इबादतखाने में गया और यसअयाह नबी की किताब खोल कर वह मुक़ाम पढ़ कर सुनाया जहां लिखा है कि और खुदावन्द का रूह मुझ पर है इसलिए कि उसने मुझे ग़रीबों को खुशखबरी देने के लिए मसह किया उसने मुझे भेजा है कि कैदीयों को रिहाई और अँधों को बीनाई पाने की खबर सुनाऊँ कुचले हुआँ को आज़ाद

करूँ और खुदावन्द के साल मक्बूल की मुनादी करूँ। फिर वो किताब बंद कर के और खादिम को वापिस देकर बैठ गया और जितने इबादत खाने में थे सबकी आँखें उस पर लगी थीं वो उनसे कहने लगा कि आज ये नविशता तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।” और 42 आयत में कि “उसने उनको कहा मुझे और शहरों में भी खुदा की बादशाहत की खुशखबरी सुनानी जरूर है कि मसीह शब व रोज़ मुनादी में मशगूल रहा करता था।”

18. पेशीनगोई उस की मुनादी का शुरू गलील से होगा। “लेकिन तीरगी (अंधेरा) वहां ना रहेगी। जहां आगे को उस पर पस्त (नीचा) पड़ी थी कि उसने पहले ज़बूलोन की सर-ज़मीन को और नफ़ताली की सर-ज़मीन को ज़िल्लत दी पर आखिरी ज़माने में गैर क्रौमों के गलील में दरिया की सिम्त यर्दन के पार बुजुर्गी देगा।” ये भी मसीह के हक़ में पूरी हुई चुनान्चे मती 4:12 से 16 तक में है कि, “जब उसने कहा कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया तो गलील को रवाना हुआ और नासरत को छोड़कर कफ़र्नहूम में जा बसा जो झील के कुंए ज़बूलोन और नफ़ताली की सरहद पर है ताकि जो यसअयाह नबी की मारफ़त कहा गया था वो पूरा हो।”

19. पेशीनगोई वो यरूशलेम में आएगा। “ऐ सिय्यून की बेटी तू निहायत खुशी कर। ऐ यरूशलेम की बेटी तू ख़ूब ललकार कि देख तेरा बादशाह तुझ पास आता है वो सादिक़ है और नजात देना उस के ज़िम्मे में है वो फ़रोतन है और गधे पर बल्कि जवान गधे पर हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।”

ये पेशीनगोई भी मसीह में पूरी हुई। चुनान्चे मती 21:1 से 5 तक में है कि “और जब वो यरूशलेम के नज़दीक़ पहुंचे और ज़ैतून के पहाड़ पर बैत फुगे के पास आए तो येसू ने दो शागिर्दों को ये कह कर भेजा कि अपने सामने के गांव में जाओ वहाँ पहुंचते ही एक गधी बंधी और उस के साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा उन्हें खोल कर मेरे पास ले आओ और अगर कोई तुमसे कुछ कहे तो कहना कि ये खुदावन्द को दरकार हैं वो फ़ील-फ़ौर उन्हें भेजेगा। और ये इसलिए हुआ कि नबी की मारफ़त कहा गया था वो पूरा हो।”

20. पेशीनगोई वो हैकल में आएगा। हज्जी 2:7 में है कि “बल्कि मैं सारी क्रौमों को हिला दूंगा। और सारी क्रौमों की मर्गूब (पसंदीदा) चीज़ें हाथ में आयेंगी और मैं घर को जलाल से भर दूंगा।” चुनान्चे मती 21:12 में है कि और येसू ने खुदा की हैकल में दाखिल हो कर उन सबको निकाल दिया जो हैकल में खरीद व फ़रोख्त कर रहे थे। और

सर्पाफों (मालदार, साहूकार) के तख्त और कबूतर फ़रोशों की चौकियां उलट दीं और उनसे कहा, लिखा है कि मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा तुम उसे डाकूओं की खोह बनाते हो।”

21. पेशीनगोई यसअयाह 53:2 में है कि “वो उस के आगे कोन्पल की तरह फूट निकला है और उस जड़ की मानिंद जो खुशक ज़मीन से पनपती हो उस की डीलडौल की कुछ खूबी ना थी और ना कुछ रौनक कि हम उस पर निगाह करें और कोई नुमाइश भी नहीं कि हम उस के मुश्ताक हों।” चुनान्चे मर्कुस 6:3 में है, “क्या ये वही बढहई नहीं जो मर्यम का बेटा है।”

लूका 9:58 में है कि “येसू ने उस से कहा कि लोमड़ियों के भट्ट होते हैं मगर इब्ने-आदम के लिए सर धरने की भी जगह नहीं।” और लूका 2:7 में है कि “उस को कपड़े में लपेट कर चरनी में रखा क्योंकि उनके वास्ते सराय में जगह ना थी।”

ये सब आयतें उस के इफ़लास (गरीबी) (गुर्बत के गवाह हैं।

22. पेशीनगोई वो हलीम और फ़रोतन होगा। यसअयाह 42:3 में है कि “वो मसले हुए सरकंडे को ना तोड़ेगा।” चुनान्चे मती 12:16 में है कि “और उन्हें ताकीद की कि मुझे ज़ाहिर ना करना।”

23. पेशीनगोई वो रहीम और शफ़ीक़ होगा। यसअयाह 40:5 में है कि वो चौपान की मानिंद अपना गल्ला चराएगा वो बरों को अपने हाथ से फ़राहम करेगा और अपनी गोद में उठा कर ले चलेगा और उनको जो दूध पिलाती हैं आहिस्ता ले जाएगा। चुनान्चे मती 14:14 में है कि “उसने निकल कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उन पर तरस आया।” तमाम इन्जील में मसीह की रहमत और शफ़क़त का इस कस्रत से ज़िक्र है कि इस मुख्तसर बयान में उनकी गुंजाइश नहीं है।

24. पेशीनगोई वो बे ज़िया (नुक्सान ना पहुंचाने वाला) होगा। यसअयाह 53:9 में है कि “क्योंकि उसने किसी तरह का जुल्म ना किया और उस के मुँह में हरगिज़ छल ना था।” मुक़्ाबला करो। 1 पतरस 1:22 से जहाँ मर्कूम है कि, “ना उसने गुनाह किया और ना उस के मुँह से कोई मक्र की बात निकली।”

25. पेशीनगोई वो गैरत-मंद होगा। 69 ज़बूर 9 में है कि “तेरे घर की गैरत ने मुझको खा लिया और उनकी मलामतें जो तुझको मलामत करते हैं मुझ पर पड़ीं।” मुकाबला करो, यूहन्ना 2:17 में है कि “और उस के शागिर्दों को याद आया कि लिखा है कि तेरे घर की गैरत मुझको खा जाएगी।”

26. पेशीनगोई वो तम्सीलों में मुनादी करेगा। 78 ज़बूर 2 में है कि “मैं अपना मुँह खोल के एक तम्सील कहूँगा और मैं राज़ की बातों को जो क़दीम से हैं ज़ाहिर करूँगा।” मुकाबला करो, मती 13:34 में है कि “ये सब बातें येसू ने भीड़ से तम्सीलों में कहीं और बगैर तम्सील के उनसे कुछ ना कहता था।” चुनान्चे इन्जील मुक़द्दस में बहुत सी तम्सीलें खुदा की मज़कूर हैं।

27. पेशीनगोई वो मोअजिज़ा भी दिखलाएगा। यसअयाह 35:5, 6 में है कि “उस वक़्त अँधों की आँखें खोली जाएगी और बहरों के कान खोले जाएं तब लंगड़े हिरन की मानिंद चौकड़ीयां भरेंगे और गूँगे की ज़बान गाएगी क्योंकि ब्याबान में पानी और दशत में नदियाँ फूट निकलेगी।” मुकाबला करो मती 11:2 में है कि “और येसू ने जवाब में उनसे कहा कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो जा कर यूहन्ना से बयान करो कि अंधे देखते और चलते फिरते हैं कोड़ी पाक साफ़ किए जाते और बहरे सुनते हैं और मुर्दे ज़िंदा किए जाते हैं और ग़रीबों को खुशखबरी सुनाई जाती है।” और यूहन्ना 11:47 में है कि “पस सरदार काहिनों और फ़रीसियों ने सदर-ए-अदालत से लोगों को जमा कर के कहा हम करते क्या हैं ये आदमी तो बहुत मोअजिज़े दिखाता है।”

28. पेशीनगोई वो मलामत उठाएगा। 22 ज़बूर 6 में है कि “पर मैं कीड़ा हूँ ना इन्सान, आदमीयों का नंग हूँ और क़ौम की आर।” और 69 ज़बूर 7 में है कि “तेरे लिए मैंने मलामत उठाई और शर्मिंदगी ने मेरे मुँह को ढाँपा।” आयत 20 में है कि “मलामत ने मेरा दिल तोड़ा मैं बीमारी में गिरफ़्तार हूँ मैंने देखा कि कोई मुझसे हम्द हो पर कोई नहीं और कोई मुझे तसल्ली दे पर ना मिला।” यसअयाह 53:3 में है कि “वो आदमीयों में निहायत ज़लील और हक़ीर था वो मर्द-ए-ग़मनाक और रंज का आशना हुआ लोग उस से गोया रूपोश थे उस की तहक़ीर की गई और हम ने उस की कुछ क़द्र ना जानी।” मुकाबला करो, रोमीयों 15:3 से “क्योंकि मसीह ने भी अपनी खुशी ना की बल्कि यूं लिखा है कि तेरे लाअन तअन करने वालों के लाअन तअन मुझ पर आ पड़े।” इन्जील से

जाहिर है कि मसीह ने बड़ी सख्त मलामत उठाई और जिसमें उस की शौकत और जलाल का राज था, कि ज़िल्लत का मगर इस के समझने के लिए मग़ज़ (दिमाग, अक्ल) दर कार है।

29. पेशीनगोई भाई भी इस को तर्क करेंगे। 69 ज़बूर 8 में है कि “मैं अपने भाईयों के नज़दीक परदेसी बना और अपनी माँ के फ़रज़न्दों के बीच अजनबी ठहरा।” मुकाबला करो, यूहन्ना 1:11 से “और वो अपने घर आया और उस के अपनों ने उसे कुबूल ना किया। इसी इन्जील के 7:5 में है, “क्योंकि उस के भाई भी उस पर ईमान ना लाए थे।

30. पेशीनगोई वो ठोकर का पत्थर होगा। यसअयाह 8:14 में है कि “वो तुम्हारे लिए एक मुक़द्दस होगा पर इस्राईल के घरानों के लिए निकर (कोने) का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान और यरूशलेम के बाशिंदों के लिए फंदा और दाम होगा।” मुकाबला करो, रोमीयों 9:32 में है, “उन्होंने इस ठोकर खाने के पत्थर से ठोकर खाई।” 1 पतरस 2:8 में है, “और ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हुआ क्योंकि वो नाफ़र्मान हो कर कलाम से ठोकर खाते हैं और इसी के लिए मुक़रर भी हुए थे।”

31. पेशीनगोई वो इस से अदावत करेंगे। 69 ज़बूर 4 में है कि “वो जो बेसबब मेरा कीना रखते हैं शुमार में मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं वो जो मुझे हलाक करना चाहते हैं और नाहक मेरे दुश्मन हैं ज़बरदस्त हैं जो कुछ कि मैंने नहीं छीना सो मैं फेरदूंगा। मुकाबला करो, यूहन्ना 15:24, 25 से, “अगर मैं उनमें वो काम ना करता जो किसी दूसरे ने नहीं किए तो वो गुनेहगार ना ठहरते मगर अब तो उन्होंने मुझे और मेरे बाप दोनों को देखा और दोनों से अदावत की लेकिन ये इसलिए हुआ कि वो क़ौल पूरा हो जो उनकी शरीअत में लिखा है कि उन्होंने मुझसे मुफ़्त अदावत की।”

32. पेशीनगोई उस को यहूदीयों के बुज़ुर्ग रद्द करेंगे। 118 ज़बूर 22 में है कि “वो पत्थर जिसे मुअम्मरों ने रद्द किया कोने का सिरा हुआ। चुनान्चे चुनान्चे मती 20 में है कि “येसू ने उन से कहा क्या तुमने किताब-ए-मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को मुअम्मरों ने रद्द किया वही कोने का पत्थर हो गया।”

33. पेशीनगोई यहूदी और गैर-क्रौम भी उस के बरखिलाफ़ इतिफ़ाक़ करेंगे। 2 ज़बूर 2 आयत में है कि “ज़मीन के बादशाह सामना करते हैं और सरदार आपस में खुदावन्द के और उस के मसीह के मुखालिफ़ मंसूबे बाँधते हैं।” चुनान्चे लूका 23:2 में है कि और “इसी दिन हेरोदेस और पिलातूस आपस में दोस्त हो गए क्योंकि पहले उनमें दुश्मनी थी। और आमाल 4:27 में है कि “क्योंकि वाक़ई तेरे पाक खादिम येसू के बरखिलाफ़ जिसे तू ने मसह किया हेरोदेस और पितुस पीलातूस गैर क्रौमों और इस्राईलियों के साथ इसी शहर में जमा हुए।”

34. पेशीनगोई उस का एक दोस्त उस को फ़रेब देगा। 41 ज़बूर में है कि “मेरे हम दम ने भी जिस पर मुझे भरोसा था और जो मेरे साथ रोटी खाता था मुझ पर लात उठाई।” मुक़ाबला करो, यूहन्ना 13:21 “से तुम में एक शख्स मुझ पकड़वाएगा।” यहूदा ने उसे पकड़वा दिया।

35. पेशीनगोई उस के शागिर्द भी उसे छोड़ देंगे। ज़करीयाह 13:7 में है कि गल्ला परागंदा हो जाये। मुक़ाबला करो, मत्ती 26:31 से “तुम सब इसी रात मेरी बाबत ठोकर खाओगे।”

36. पेशीनगोई वो तीस रूपयों की कीमत पर फ़रोख्त होगा। ज़करीयाह 11:12 में है कि “और उन्होंने मेरे मोल की बाबत तीस रूपये तौल कर दिए।” मुक़ाबला करो मत्ती 26:15 से “उन्होंने उसे तीस रूपये तौल कर दिए।”

37. पेशीनगोई इन रूपयों से कुम्हार का खेत मोल लिया जाएगा। ज़करीयाह 11:13 में है कि “और खुदावन्द ने मुझे हुक़म दिया कि उसे कुम्हार पास फेंक दे उस अच्छी कीमत को जो उन्होंने मेरी ठहराई थी।” मुक़ाबला करो मत्ती 27:6, 7 से “तब उन्होंने सलाह कर के इन रूपयों से कुम्हार का खेत परदेसीयों के दफ़न करने के लिए खरीदा।”

38. पेशीनगोई वो औरों के दुख आप उठाएगा। यसअयाह 53:4 “यक़ीनन उसने हमारी मशक्कतें उठालीं और हमारे ग़मों का बोझ अपने ऊपर चढ़ाया।” दानयाल 9:26 में है कि मसीह औरों के लिए मारा जाएगा ना अपने लिए। चुनान्चे मत्ती 20:28, में है कि “और अपनी जान बहुतेरों के फ़िदया में दे।”

39. पेशीनगोई वो बड़ा साबिर होगा। यसअयाह 53:7 “वो तो निहायत सताया गया और गम-ज़दा हुआ तो भी उसने अपना मुँह ना खोला।” चुनान्चे मती 27:12 में है कि “उसने कुछ जवाब ना दिया।” आयत 14 में है कि “एक बात का जवाब ना दिया।”

40. पेशीनगोई उस के मुँह पर छड़ी मारेंगे। मीकाह 5:1 में है कि “उन्होंने इस्राईल के हाकिम के गाल पर छड़ी मारी है।” चुनान्चे मती 27:30 में है कि “उस पर थूका और वही सरकंडा ले कर उस के सर पर मारने लगे।”

41. पेशीनगोई उस की शकल बिगाड़ी जाएगी। यसअयाह 52:14 में है कि “उस की पैकर (शकल) बनी-आदम से ज़्यादा बिगड़ गई।” चुनान्चे यूहन्ना 19:5 में है कि “येसू कांटों का ताज रखे और अर्गवानी पोशाक पहने बाहर आया और पीलातूस ने उनसे कहा देखो ये आदमी।”

42. पेशीनगोई उस के हाथ पांव में मेखें (कील) गाड़ी जाएँगी। 22 ज़बूर 16 में है कि “उन्होंने मेरे हाथ और पांव छेदे।” चुनान्चे यूहन्ना 20:27 में है कि “अपनी उंगली पास ला कर मेरे हाथों को देख।”

43. पेशीनगोई उस को खुदा थोड़ी देर के लिए अदालत पूरी करने की खातिर छोड़ देगा। 22 ज़बूर में है, कि “मसीह ने चिल्ला के कहा ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है।”

44. पेशीनगोई उस को सिरका पिलाया जाएगा। 69 ज़बूर 21 में है कि “उन्होंने मुझे खाने के एवज़ पित दिया और मेरी प्यास बुझाने को सिरका पिलाया।” मती 27:34 में है कि “पित मिला हुआ सिरका उसे पीने को दिया।”

45. पेशीनगोई उस के कपड़े बाँटे जाएँगे। 22 ज़बूर 18 में है कि “वो मेरे कपड़े आपस में बाँटते हैं और मेरे लिबास पर कुरआ डालते हैं।” मती 27:35 में है कि “और उस के कपड़े कुरआ डाल कर बांट लिए।”

46. पेशीनगोई वो गुनेहगारों में शुमार होगा। यसअयाह 53:12 में है कि “वो गुनेहगारों के दर्मियान शुमार किया गया।” मर्कुस 15:27 में है कि “और उन्होंने उस के साथ दो डाकू एक उस की दाहिनी और एक उस की बाएं तरफ सलीब पर चढ़ाए।”

47. पेशीनगोई वो अपने कातिलों की सिफ़ारिश करेगा। यसअयाह 53:12 में है कि “उसने गुनेहगारों की शफ़ाअत की।” लूका 22:34 में है कि “येसू ने कहा ऐ बाप इनको माफ़ कर क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या करते हैं।”

48. पेशीनगोई उस की हड्डी तोड़ी ना जाएगी। खुरूज 12:46 में है कि “उस की हड्डी ना तोड़ी जाये।” 34 ज़बूर 20 में है कि “वो उस की सारी हड्डीयों का निगहबान है।” यूहन्ना 19:33 में है कि “उस की पिसली छेदी और फ़ील-फ़ौर उस से खून और पानी बह निकला।” ये एक ऐसी अजीब बात है जिसकी तश्रीह के लिए ये किताब काफ़ी नहीं है आयत 36 में है कि “ये बातें इसलिए हुई कि नविश्ता पूरा हो कि उस की कोई हड्डी ना तोड़ी जाएगी।”

49. पेशीनगोई कि “वो दौलतमंदों शुमार किया जाएगा। यसअयाह 53:9 में है कि “पर अपने मरने के बाद दौलतमंदों के साथ वो हुआ।” मती 27:60 में है कि “और अपनी नई क़ब्र में रख दिया जो उसने चट्टानों में खुदवाई थी।”

50. पेशीनगोई वो फिर जी उठेगा। 16 ज़बूर 10 में है कि “तू अपने कुद्दूस को सड़ने ना देगा।” लूका 24:6 में है कि “वो यहां नहीं है बल्कि जी उठा है।”

51. पेशीनगोई वो आस्मान पर चढ़ जाएगा। 68 ज़बूर 18 में है कि “तू ऊँचे पर चढ़ा।” लूका 24:51 में है कि “उनसे जुदा हुआ और आस्मान पर उठाया गया।”

52. पेशीनगोई वो खुदा के दहने जा बैठेगा। 110 ज़बूर में है कि “तू मेरे दहने हाथ बैठा।” इब्रानियों 1:3 में है कि “और खुदा तआला के दहने जा बैठा।”

53. पेशीनगोई आस्मान पर जा कर कहानत करेगा। ज़क्रयाह 6:13 में है कि “वो अपनी कुर्सी पर काहिन होगा।” रोमियों 8:24 में है कि “खुदा की दाहिनी तरफ़ है और हमारी शफ़ाअत भी करता है।”

54. पेशीनगोई ग़ैर-अक्वाम उस की तरफ़ रुजू करेंगे। यसअयाह 11:1 में है कि “जो कौमों के लिए झंडे की तरह खड़ी होगी।” मती 12:21 में है कि “और उस के नाम से ग़ैर कौमें उम्मीद रखेंगी।” इस तरह की दूसरी आमद के मुताल्लिक भी बहुत सी पेशीन गोईयाँ हैं जिनको बख़ोफ़ तवालत हम-नज़र अंदाज़ करते हैं। जब कि इस क़द्र

पेशीन गोईयाँ आप पर सादिक आ गई हैं तो और वाकियात भी जो आपके मुताल्लिक हैं बिल-ज़रूर आप पर सादिक आयेंगी। हमने इस बयान में निहायत इखितसार (खुलासा) से काम लिया है ताहम मुसलमानों को इस मुकाम पर बहुत गौर व खोज करना लाज़िमी अम्र है ता कि जिस धोके में वो मुब्तला हैं उस से रिहाई हासिल करें।

रिसाला पंजुम (5)

खुदावन्द मसीह के मोअजज़ात के बयान में

दूसरी दलील (वजह, सबूत) खुदावन्द की सदाकत (सच्चाई) पर ये है कि आपने ऐसे ऐसे मोअजज़ात दिखलाए कि तावक्ते के कोई शख्स मिन-जानिब अल्लाह ना हो हरगिज़ नहीं दिखा सकता है। अगरचे दीगर अदयान (दीन की जमा) में भी बकसत ऐसे लोग मौजूद हैं जो अपने अपने हादियों के मुताल्लिक कुछ इस किस्म का दावा करते हैं और कहते हैं कि हमारे बुजुर्गों ने भी ये कुछ किया मगर उनके बयानात मेयार-ए-सदाकत से कोसों दूर हैं। इसलिए कि मोअजज़ात की सदाकत या वकूअ के लिए जिन शराइत की ज़रूरत है वो शराइत उनमें बिल्कुल मफ़कूद (गायब) हैं चुनान्चे हम इन शराइत में से चंद बतौर इखितसार ज़ेल में लिखते हैं ताकि हर एक शख्स को सच्चे व झूटे मोअजज़ात के पहचानने में सहूलत हो।

शर्त अठ्ठल : ये कि वकूअ मोअजज़ात पर गवाही देने वाले अशखास मोअतबर हों यानी दीनदार खुदा परस्त, खुदा-तरस बेतास्सुब दीन के लिए जान पर खेलने वाले हों। ज़र दोस्त खुशामदी ऐश व इशरत के तालिब, गर्जमंद ना हों। अगर आप खुदावन्द के मोअजज़ात पर गवाही देने वाले अशखास की ज़िंदगी पर गौर करें। तो आप पर ज़ाहिर हो जाएगा कि दीनदारी परहेज़गारी, रास्त-गोई और खुदा तरसी में वो अपनी नज़ीर (मिसाल) आप ही थे। दीन के मुआमले में वो जान पर खेलने वाले और दुनियावी अगराज़ की तरफ़ से बिल्कुल बेनियाज़ (लापर्वाह) थे।

शर्त दोम : ये कि चश्मदीद गवाह हों ना मुसलमान मुहद्दिसीन (हदीस के जानने वाले) की तरह जो दूसरी तीसरी पुश्त में सुनी सुनाई बे-ठिकाना बातों का ज़िक्र करें।

शर्त सोइम : ये कि वो मोअजज़ात जो चश्मदीद शख्सों के ज़रीये बयान हों उनकी शौहरत उसी वक़्त हुई हो जब कि उन वाक़ियात के देखने वाले बहुत लोग मौजूद हों। चुनान्चे हमारे खुदावन्द के मोअजज़ात जो इंजीलों में मज़कूर हैं उसी वक़्त मुश्तहिर (मशहूरी करना) हुए जब कि सदहा मर्द व ज़न मसीह के देखने वाले मौजूद थे। और किसी ने भी उनका इन्कार नहीं किया। मुखालिफ़ीन में से किसी ने कुछ एतराज़ किया तो ये कि बाअल ज़बूल के ज़रीये से करता है। जिनसे इकरार साबित होता है। आँहज़रत के मोअजज़ात उस वक़्त मशहूर हुए जब कि मुस्लिम व बुखारी वगैरह मुहद्दिस (हदीस लिखने वाले) पैदा हुए या मौलवी जामी ने पैदा हो के मुल्क फ़ारस में शवाहिद-उल-नबुवह लिखी खुद आँहज़रत के अहद में कोई मोअजिज़ा कुरआन में मज़कूर हो कर मशहूर नहीं हुआ अलबता आँहज़रत के अहद में फ़साहत के मोअजिज़ा कामिल मजानिसा सूरह ग़लतफ़हमी पर मबनी था क्योंकि अगर कुरआन फ़सीह भी हो तो भी फ़साहत मोअजिज़ा नहीं हो सकता क्योंकि खुद आँहज़रत ने कुरआन में मोअजिज़ों का इन्कार किया है लिहाज़ा वो सब मोअजज़ात भी जो हदीस में मज़कूर हैं ग़लत साबित होते हैं क्योंकि उनका तवातर (सिलसिला, तसलसुल) ना रहा। बख़िलाफ़ बाइबल के मोअजिज़ों के कि उनकी मानिंद कोई अहले मज़हब अपने मज़हब के मोअजज़ात का तवातर नहीं दे सकता।

शर्त चहारुम : ये कि इन गवाहों की तकारीर मुबालगा (बढ़ा चढ़ा कर) और रंग आमेज़ी (ज़ाहिरी ख़ूबसूरती) से बिल्कुल ख़ाली हों बल्कि उनके बयानात वाक़ियात पर मबनी हों जैसा कि मुसलमान मुहद्दिसीन के मुबालगे और हवारियों (शागिर्दों) की बेरिया (मुख़िलसाना) गुफ़्तगु से ज़ाहिर है।

शर्त पंजुम : ये कि जिस शख्स की निस्बत मोअजज़ात का दावा है वो शख्स अपने चाल चलन और अपनी ताअलीम से भी मिन-जानिब अल्लाह होना साबित करे तब तो उस के मोअजज़ात खुदा की तरफ़ से ख़याल किए जा सकते हैं वर्ना शोबदे-बाज़ी (जादू के मुताल्लिक़ हुनर) और फ़रेब होगा। पस शराइत बाला को मद्द-ए-नज़र रखकर अगर आप बाइबल के मोअजज़ात की जांच पड़ताल कर लें तो आप पर रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर होगा कि बाइबल का हर एक मोअजिज़ा खुदा की तरफ़ से है। अब देखना ये है कि मसीह के मोअजज़ात वो इस मज़हब की सदाक़त के सबूत दूसरी दलील हैं। किस क़द्र और क्या-क्या हैं। पहले अम्र की निस्बत कि मसीह ने किस क़द्र मोअजज़ात दिख़लाएइ यूहन्ना 20:3 में है कि “और येसू ने और बहुत से मोअजिज़े शागिर्दों के

सामने दिखाए जो इस किताब में लिखे नहीं गए।” इस आयत से कस्रत-ए-मोअजज़ात जाहिर है लेकिन हम उन बाअज़ मोअजज़ात की फ़ेहरिस्त जिनका ज़िक्र कलाम-अल्लाह में है बयान करते हैं। ताकि नाज़रीन उन पर गौर करें।

(1) पहला मोअजिज़ा मसीह ने पानी को मेय बना दिया। यूहन्ना 2:6 से 11 वहां पत्थर के छः मटके यहूदीयों की तहारत (सफ़ाई) के लिए रखे हुए थे। और हर एक में दो या तीन मन की गुंजाइश थी येसू ने उनसे कहा मटकों में पानी भर दो उन्होंने ने उन को लबालब भर दिया। और फिर येसू ने कहा अब निकालो और मीर मज्लिस (महफ़िल का सरबराह) के पास ले जाओ और वो ले गए जब मीर मज्लिस ने वो पानी जो अंगूरी मेय बन गया था चखा तब दुल्हे को बुलाया और कहा हर आदमी पहले अच्छी मेय देता है और नाकिस उस वक़्त जब पी चुकते हैं लेकिन तू ने अच्छी मेय अब तक रख छोड़ी है ये इसलिए कहा कि उस को मालूम ना था कि ये मसीह के मोअजिज़े का असर है।

(2) दूसरा मोअजिज़ा (यूहन्ना 4:46 से 53) येसू फिर काना-ए-गलील में जहां उसने पानी को अंगूरी मेय बना दिया था आया और बादशाह का कोई मुलाज़िम जिसका बेटा कफरनहूम में बीमार था सुनकर कि येसू यहूदिया से गलील में आया है उस के पास गया और उस की मिन्नत की कि आकर उस के बेटे को अच्छा करे क्योंकि वो करीब उल-मर्ग (मरने को) था तब येसू ने उस कहा जा तेरा बेटा जीता है। चुनान्चे उसी वक़्त उस लड़के को आराम हो गया।

(3) तीसरा मोअजिज़ा (मती 8:5 से 13) जब येसू कफरनहूम में दाख़िल हुआ तो एक सूबेदार उस के पास आया और उस की मिन्नत करके कहा, ऐ खुदावन्द मेरा लड़का फ़ालिज का मारा घर में पड़ा है और निहायत तकलीफ़ में है। येसू ने उसे कहा मैं आके उसे अच्छा करूंगा चुनान्चे उसी घड़ी उस का लड़का चंगा हो गया।

(4) चौथा मोअजिज़ा (लूका 5:4 से 6) जब मसीह कलाम करने से फ़ारिग हुआ तो शमऊन को कहा गहरे में जाल डाल दो। शमऊन ने कहा, ऐ उस्ताद हमने सारी रात मेहनत की लेकिन कुछ ना पकड़ सके लेकिन तेरे कहने से जाल डालता हूँ और जब उन्होंने ये किया तो मछलीयों का बड़ा गोल उनके जाल में फंस गया। यूहन्ना 21:6 में है कि उस ने उन्हें कहा कशती की दाहिनी तरफ़ जाल डालो तो पकड़ोगे। पस उन्होंने डाला और मछलीयों की कस्रत से फिर खींच ना सके।

(5) पांचवां मोअजिज़ा (मत्ती 8:28 से 34) और जब मसीह उस पार गदरीनियों के मुल्क में आया दो दीवाने उसे मिले जो क़ब्रों से निकलते थे। और चिल्ला के कहा ऐ येसू खुदा के बेटे हमें तुझसे क्या काम क्या तू यहां इसलिए आया है, कि वक़्त से पहले हमें हलाक करे तू हमें सूअरों के ग़ोल में भेज उसने उन्हें कहा जाओ और वो निकल के सूअरों के ग़ोल में दाखिल हो गए और सूअरों का ग़ोल कड़ाड़े पर से दरिया में कूदा और पानी में हलाक हुआ और चराने वाले भागे और शहर में जा के सब माजरा और दीवानों का अहवाल बयान किया। और 9:22, 33 में है कि लोग इस माजरे को देखकर एक गूँगा दीवाना उस के पास लाए और जब बदरूह निकाली गई तो गूँगा बोलने लगा और लोगों ने ताज्जुब कर के कहा ऐसा कभी इस्राईल में ना हुआ था। और 15:22 से 28 में है कि एक कनआनी औरत की लड़की को अच्छा किया। मुहम्मद साहब ने कभी नापाक रूहों को नहीं निकाला बल्कि नापाक रूहों ने बड़करार कुरआन उन पर असर किया जैसा कि मऊज़तैन (सूरह फलक़ और नास) में ज़िक्र है।

(6) छटा मोअजिज़ा (मत्ती 8:14-15) येसू ने पतरस के घर में आ के देखा कि उस की सास तप में पड़ी है उसने उस का हाथ छुआ तप उतर गई और वो उठ के उस की खिदमत करने लगी।

(7) सातवां मोअजिज़ा (मत्ती 8:2) में है कि येसू ने एक कौड़ी को अच्छा किया।

(8) आठवां मोअजिज़ा (लूका 5:17, 26) एक मफ़लूज को चार आदमी उठा कर उस के पास लाए लेकिन भीड़ के सबब नज़दीक ना आ सकते थे तब छत को तोड़ कर मफ़लूज को उस के सामने लटकाया ईसा ने उनका ईमान देखकर कहा ऐ फ़र्ज़न्द तेरे गुनाह माफ़ हुए मैं तुझे कहता हूँ उठ अपना खटोला उठा और अपने घर चला जा वो फ़ौरन उठा और अपना खटोला उठा कर सब के सामने निकल गया।

(9) नौवां मोअजिज़ा (मत्ती 12:10 से 13) वहां एक आदमी था जिसका हाथ सूख गया था और मसीह ने उस के हाथ को अच्छा किया।

(10) दसवां मोअजिज़ा (यूहन्ना 5:5 से 9) वहां एक आदमी था जो अड़तीस बरस बीमार था जब येसू ने उस को पड़ा हुआ देखा तो उसे कहा, क्या तू चाहता है कि अच्छा हो जाये बीमार ने जवाब दिया, ऐ खुदावन्द मेरे पास कोई आदमी नहीं है कि जब पानी

हिले मुझे हौज़ में डाल दे और जब तक मैं आऊँ दूसरा मुझसे पहले उतरता है ईसा ने उसे कहा, उठ अपना खटोला उठा कर चला जा उसी वक्त वो आदमी अच्छा हुआ और अपना खटोला उठा कर चला गया। और वो सबत का दिन था।

(11) ग्यारवाँ मोअजिज़ा (मत्ती 9:18, 19, 23, 25) मसीह ने एक सरदार की मरी हुई लड़की को ज़िंदा किया।

और लूका 7:12 से 15 में लिखा है कि मसीह ने नाईन शहर के फाटक पर एक बेवा औरत के बेटे का जनाज़ा देखा और रहम कर के कहा ऐ जवान मैं तुझे कहता हूँ उठ और वो मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा। और यूहन्ना 11:11 से 44 में लिखा है कि एक शख्स लाज़र नाम का जो चार दिन तक मर कर गुर (कब्र) में रहा था ज़िंदा किया।

(12) बाहरवां मोअजिज़ा (मत्ती 9:27 से 30) जब मसीह घर में पहुंचा तो दो अंधे उस के पास आए और येसू ने कहा क्या तुम्हें एतिकाद है कि मैं ये कर सकता हूँ वो बोले हाँ ऐ खुदावन्द तब उसने उनकी आँखों को छुवा और कहा कि तुम्हारे ईमान के मुवाफिक़ तुम्हारे लिए हो और उनकी आँखें खुल गईं। और मर्कुस 8:22 से 25 में लिखा है कि उसने एक अंधे को आँखें दीं। और यूहन्ना 9:1 से 7 में लिखा है कि उसने एक जन्म के अंधे को आँखें दी।

(13) इस के सिवा बहरे गूंगों को भी अच्छा किया जिनका ज़िक्र मर्कुस 7:22 से 35 तक मौजूद है।

(14) चौहदवां मोअजिज़ा (मत्ती 14:15 से 21) में लिखा है कि उसने पाँच रोटी और दो मछलीयों से औरतों और बच्चों के सिवा पाँच हज़ार मर्दों का पेट भर दिया और टुकड़ों की बारह टोकरीयां बच रहीं। और 15:32 से 38 में लिखा है कि सात रोटियों और कई छोटी मछलीयों से औरतों और बच्चों के सिवा चार हज़ार मर्दों का पेट भर दिया। और बचे हुए टुकड़ों की सात टोकरीयां भरी उठाईं।

(15) मोअजिज़ा (मत्ती 14:25 से 27) और रात के चौथे पहर येसू दरिया पर चलता हुआ उनके पास आया।

(16) मोअजिज़ा (मत्ती 14:29) मसीह ने उसे कहा और पतरस नाव (कश्ती) से उतर कर पानी पर चलने लगा कि येसू के पास आए।

(17) मोअजिज़ा (मत्ती 8:23 से 26) दरिया में एक ऐसी आंधी आई कि नाव लहरों में छिप गई और मसीह सोता था तब उस ने उठ के हवा और दरिया को डाँटा और बड़ा चैन हो गया और लोगों ने ताज्जुब किया और कहा ये कैसा आदमी है कि हवा और दरिया भी इस की मानते हैं।

(18) मोअजिज़ा (मत्ती 17:27) मसीह ने पतरस से कहा तू दरिया पर जा के बंसी डाल जो मछली पहले निकले उसे ले और उस का मुँह खोल तो एक सिक्का पाएगा। उसे लेकर मेरे और अपने वास्ते उन्हें दे।

(19) मोअजिज़ा (लूका 12:11 से 13) एक कुबड़ी औरत को जो अठारह बरस से कुबड़ी थी अच्छा किया।

(20) मोअजिज़ा (लूका 14:2 से 4) एक जलिन्द्र (पेट में पानी पड़ने का मर्ज़) के मरीज़ को अच्छा किया।

(21) मोअजिज़ा (मत्ती 21:19) एक इंजीर के दरख्त को जो बज़ाहिर सरसब्ज़ था लेकिन दरहकीकत उस में एक भी इंजीर ना था। सूखा दिया ताकि रियाकारों और धोके बाज़ों को इबरत (सबक़) हासिल हो।

(22) मोअजिज़ा (लूका 22 बाब 50-51 आयत) सरदार काहिन के मुलाज़िम के कान को जिसको पतरस ने काट दिया था दुबारा अच्छा किया।

(23) मोअजिज़ा (मत्ती 4:23, 24) येसू तमाम गलील में फिरता और लोगों के सारे दुख दर्दों को दफ़ाअ करता था। जिससे उस की शौहरत तमाम एतराफ़ में फैल गई और सब बीमारों को जो तरह-तरह की बीमारीयों में गिरफ़्तार थे। और बद-रूहों और मिर्गीयों और मफ़लूजों को जो उस के पास लाए गए थे। अच्छा किया और 15-30, में है कि और बड़ी भीड़ लंगड़ों अँधों गूंगों टून्डों और बहुत औरों को अपने साथ लेकर उस के पास आई और उन्हें येसू के पांव पर डाला और उसने अच्छा किया।

(24) मोअजिज़ा (यूहन्ना 20:19) शाम के वक़्त जब दरवाज़े चारों तरफ़ से बंद थे। मसीह उनके बीच में ज़ाहिर हुआ और कहा अस्सलामु अलैकुम यानी तुम पर सलाम हो।

(25) मोअजिज़ा (लूका 23:6) मसीह मर कर दफ़न हुआ। और फिर ज़िंदा बाहर निकला।

(26) मोअजिज़ा (आमाल 1:9) और वो कह के उनके देखते हुए आस्मान पर उठा लिया और बदली ने उस को उनकी नज़रों से छिपा लिया।

इनके इलावा और बहुत से ऐसे मोअजज़ात हैं जिनसे खुदा की कुद़त अज़मत और शान ज़ाहिर होती है मगर बख़ोफ़ तवालत हम उनकी नक़ल करने से माज़ूर हैं।

अनाजील के मुतालआ करने से जो अजीब बात मालूम होती है, वो ये है कि मोअजज़ात का सिलसिला खुद खुदावन्द की ज़ात पर ख़त्म नहीं होता है बल्कि आपके शागिर्द और शागिर्दों के शागिर्दों से ऐसे मोअजज़ात सरज़द हुए हैं जिनको पढ़ कर इस अम्र का यक़ीन हो जाता है, कि हज़रत मसीह ना सिर्फ़ मोअजिज़ा करने वाले थे। बल्कि मोअजिज़ों की कुव्वत और इक़्तदार बख़शने वाले थे। चुनान्चे मसीह के शागिर्दों की निस्बत मत्ती 10:1 में है कि और उसने अपने बारह शागिर्दों को पास बुला कर उन्हें नापाक रूहों पर इख़्तियार बख़शा ताकि उनको निकालें। और हर तरह की बीमारी और दुख दर्द को दूर करें। फिर आयत 8 में है मसीह ने शागिर्दों को कहा बीमारों को अच्छा करो मुर्दों को ज़िंदा करो कोढ़ियों को साफ़ करो बद-रूहों को निकालो तुमने मुफ़्त पाया मुफ़्त दो। चुनान्चे मर्कुस 16:20 में है कि और वो बाहर जाके हर जगह मुनादी करने लगे। और खुदावन्द उनकी मदद करता और कलाम को मोअजिज़ों के वसीले जो उस के हमराह थे। साबित करता था। आमाल 2:43 में है कि और बहुत सी करामातें और निशानीयां रसूलों से ज़ाहिर हुईं। आमाल 2:4 में है कि वो सब रूह-उल-कुद़्स से भर गए और ग़ैर-ज़बानें बोलने लगे। ये मसीह का कैसा बड़ा मोअजिज़ा है जो हवारियों के वसीले से ज़ाहिर हुआ कि अनपढ़ लोग आनन फ़ानन हर ज़बान बोलने लगे और ये इशारा था इस अम्र की तरफ़ कि खुदा का कलाम हर मुल्क के लोगों को सुनाया जाये और हर वो शख़्स जो ईमान लाए नजात पाए आँहज़रत अपने आपको सब जहान की तरफ़ एक

आखिरी रसूल बतलाते थे। मगर उनको फ़ारसी ज़बान भी बोलनी ना आई और सलमान फ़ारसी से ख़त वगैरह का तर्जुमा करवाया कर करते थे।

आमाल 3:1 से 11 तक लिखा है कि पत्रस और यूहन्ना जब हैकल में गए तो उन्होंने एक लंगड़े को कहा कि येसू मसीह नासरी के नाम से उठ और चल और उस का दहना हाथ पकड़ कर उठाया फ़ौरन उस के टखने मज़बूत हुए और वो कूद के खड़ा हुआ और चलने लगा। (आमाल 5:1 से 12) में लिखा है कि एक शख्स हननियह और उस की जोरु सफ़ीरा ने रसूलों से झूट बोला और पतरस की बददुआ से फ़ौरन मर गए और आयत 10 से 20 लिखा है, कि मर्द और औरतें गिरोह के गिरोह खुदावन्द पर ईमान ला के उनमें शामिल होते थे। यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों में चार पाइयों और खटोलों पर रखते थे, ताकि जब पतरस आए उस का साया ही उनमें से किसी पर पड़ जाये इसलिए सरदार काहिन और उसके साथी ग़ज़ब से भर गए। और रसूलों को कैद खाने आम में डाल दिया लेकिन खुदा के फ़रिश्ते ने रात को कैदखाने का दरवाज़ा खोला और उन्हें बाहर ला के कहा जाओ और हैकल में खड़े हो के इस ज़िंदगी की कलाम की बातें सुनाओ और ये कितना बड़ा मोअजिज़ा है कि वही हवारी जो बुज़दिली में ज़रब-उल-मसल (कहावत की तरह मशहूर होना) थे। और जिन्होंने जान के ख़ौफ़ से मसीह का इन्कार किया अब मसीह से ताक़त पा कर उलमा और यहूद और हाकिमों के सामने जाँनिसारी के साथ बहस कर रहे हैं और सारी मुसीबतों की बर्दाश्त करने में बेहद मज़बूत हो गए हैं और आमाल 8:4 से 13 में लिखा है, फिलिप्पुस ने सामरिया के एक शहर में बहुत से मोअजिज़े दिखलाए और बहुत लोग मसीही हो गए और 9 बाब से ज़ाहिर है कि पौलुस रसूल पर किस तरह खुदावन्द दमिश्क के नज़्दीक ज़ाहिर हुआ और क्योंकि उस का दिल तब्दील हुआ। फिर आमाल 12:11 में है कि पौलुस के मोअजिज़े से एलीमास जादू-गर फ़ौरन अंधा हो गया और 14:10 में है कि उसने लंगड़े को चलने की ताक़त दी आमाल 16:18 में है कि उसने मसीह के नाम से नापाक रूह को निकाला आमाल 19:1 में है कि खुदा पौलुस के हाथ से बड़े मोअजिज़े दिखलाता था। 20:10 में है कि उसने मसीही कुद्रत से युतिखुस मुर्दा को जिलाया। (जिंदा किया) आमाल 28:5 में है कि उस को काले साँप ने ज़रर ना पहुंचाया। और आयत 8 में है कि पब्लेस का बाप उस के हाथ रखने से दुरुस्त हो गया। और 3:7 में है कि पतरस की मार्फ़त एक लंगड़े की टांगें दुरुस्त हो गईं। इस के सिवा रसूलों के और बहुत से मोअजिज़ात आमाल की किताब में मज़कूर हैं जिससे मसीह की फ़ैज़ सानी साबित है पस अब अगर आप मसीह के

मोअजज़ात को आँहज़रत के मोअजज़ात के साथ दियानतदारी के साथ मुक़ाबला करें तो आप पर वाज़ेह हो जाएगा, कि मसीह के जितने मोअजिज़े हैं वो सब हकीकी और मबनी बर सदाक़त हैं। बरअक्स इस के आँहज़रत के जितने मोअजिज़े हैं वो सब मन घड़त और दूर अज़ हैं।

रिसाला शश्म (6)

हज़रत मसीह की बहुत सी पेशीन गोइयों में से 14 पेशीन गोइयों को ज़िक्र

तीसरी दलील उस की सदाक़त पर ये है कि हमारा खुदावन्द येसू मसीह सादिकुल-क़ौल और अपने बयान में हर तरह से सच्चा है। अगरचे वो वाक़ियात जो उस की सादिकुल-क़ौली को मुख्तलिफ़ सूरतों में ज़ाहिर करते हैं इन्जील शरीफ़ में बक़स्रत पाए जाते हैं लेकिन हम सिर्फ़ उन वाक़ियात को हदया नाज़रीन करते हैं जिनका ताल्लुक़ पेशीन गोइयों के साथ है। जिनमें से कुछ पूरे हो गए हैं और कुछ पूरे हो रहे हैं जिससे उनका आलिमुल-ग़ैब होना साबित होता है। इन पेशीन गोइयों के देखने से साफ़ तौर पर ये नतीजा निकल सकता है कि जिस तरह वो पूरी शूदा पेशीन गोइयों में सच्चा निकला है तो ज़रूर जो जो बातें उसने अपनी आमद सानी के मुताल्लिक़ बयान की हैं ज़रूर रास्त और दुरुस्त होंगी। और उसने जो वाअदे और वहीद मोमिनीन व काफ़िरीन से किए हैं बेशक़ उसी तरह वकूअ में आएँगे, जिस तरह और बातें वाक़ेअ हुई पस जब कि ये मज़ामीन ईमान की तरक्की करने वाले हैं। और मज़हब की हकीक़त पर एक कामिल दलील हैं इसलिए कुछ इनमें से हम अपने हिन्दुस्तानी भाईयों को सुनाना चाहते हैं। ताकि वो भी इन पर गौर कर के हकीकी ईमान की तरफ़ रुजू करें यूं तो मसीह की पेशीन गोइयों बक़स्रत हैं लेकिन हम सिर्फ़ चौदह (14) पेशीन गोइयों हदया नाज़रीन करते हैं। पहली पेशीनगोई उसने अपने मर के जी उठने की ख़बर पहले से दी थी। मती 16:21 उस वक़्त से येसू अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर करने लगा कि “मुझे ज़रूर है कि यरूशलेम को जाऊँ और बुजुर्गों और सरदार काहिनों और फ़िक़ीहियों की तरफ़ से बहुत दुख उठाऊँ और क़त्ल किया जाऊँ और तीसरे दिन जी उठूँ।” मसीह ने कई बार यही बयान किया और इस के मुवाफ़िक़ ज़हूर में आया। चुनान्चे मती 29 से 28 बाब तक अगर कोई पढ़े

तो उस को अच्छी तरह मालूम हो जाएगा, कि उसने कैसे-कैसे दुख यहूदियों के हाथ से उठाए और बिल-आखिर वो मारा भी गया और तीसरे दिन जी भी उठा। इस मुकाम पर कई बातें गौर तलब हैं। अक्वल ये कि अहले इस्लाम कहते हैं कि मसीह मारा नहीं गया जो बिल्कुल गलत है। हम मुसलमान भाईयों की खिदमत में अर्ज करते हैं कि वो इस मुआमले में गफलत (लापर्वाही) से काम ना लें। क्योंकि सिर्फ इसी पर नजात उखरूई मुन्हसिर है। इसलिए हमारी मुख्तसर गुज़ारिशात पर ज़रा देर के लिए ध्यान दें।

अक्वल हम मुसलमानों के इस बयान को कि मसीह नहीं मारा गया इसलिए गलत कहते हैं कि उनके पास अपने दावे के सबूत में कोई दलील मौजूद नहीं है सिर्फ आँहज़रत की हदीस है जो अपने सबूत में पेश करते हैं चूँकि वो हदीस तारीख और वाकियात के बरखिलाफ़ और कुरआन शरीफ़ के मुतज़ाद है लिहाज़ा काबिल-ए-एतिबार नहीं है।

दुवम ये कि अगले नबी गवाही दे गए हैं कि मसीह जब आएगा तो वो ईमानदारों के वास्ते अपनी जान देगा और मारा जाएगा। चुनान्चे दानीएल नबी ने मसीह से 538 बरस पेशतर बतौर पैशन गोई के ये कहा था, कि 62 हफ़्तों के बाद मसीह क़त्ल किया जाएगा। (दानीएल 9:26) और यसअयाह नबी ने मसीह से 712 बरस पेशतर ये कहा था कि वो जुल्म करके और फ़त्वा लगा कर उसे ले गए पर कौन उस के ज़माने का बयान करेगा कि वो ज़िंदों की ज़मीन से काट डाला गया मेरे गिरोह के गुनाहों के सबब उस पर मार पड़ी। (यसअयाह 53:8)

सोइम, ये कि यहूदी लोग जिन्हों ने मसीह को क़त्ल किया वो इकरार करते हैं कि हमने बेशक उसे मारा है आज तक कोई यहूदी इस बात का काइल नहीं हुआ कि हमने मसीह को क़त्ल नहीं किया खुद मुहम्मद साहब भी यहूदियों से सुनकर इकरार करते हैं कि यहूदी लोग मसीह को क़त्ल करने के काइल हैं। चुनान्चे कुरआन की सूरह निसा में लिखा है قلنا المسيح عيسى ابن مريم यानी यहूद कहते हैं कि हमने ईसा मसीह मर्यम के बेटे को क़त्ल किया है।

चहारुम, ये कि खुद हज़रत ईसा इन्जील में ज़िक्र करते हैं कि मुझे मारा जाना ज़रूर है।

पंजुम, ये कि मसीह के शागिर्द जो साहिबे मोअजिज़ात और सच्चे रसूल थे। वो गवाही देते हैं कि वो ज़रूर हमारे सामने मारा गया और जी उठा। चुनान्चे आमाल 5:30, 31 में है, कि हमारे बाप दादों के खुदा ने येसू को जिलाया जिसे तुमने सलीब पर लटका के मार डाला था उसी को खुदा ने मालिक और मुनज्जी ठहरा के अपने दहने हाथ से सरबुलंद किया ताकि इस्राईल को तौबा की तौफ़ीक और गुनाहों की माफ़ी बख़्शे और हम इन बातों के गवाह हैं।

शश्म, ये कि यहूदीयों के दर्मियान जो खेत खून का खेत कहलाता है और जो कि परदेसीयों के गाड़ने के लिए खरीदा गया था वो उन तीस रूपयों से खरीदा गया था जो मसीह की पकड़वाई की उज़्रत के तौर पर यहूदा इस्करियोती ने लिया था और उसी वक़्त से ये वाक़िया तमाम यहूदीयों में मुश्तहिर हो चुका था। और सभी ने इस माजरे को कुबूल किया था। अब इन्साफ़ कीजिए इतने गवाहों और ऐसे मोअतबर रसूलों को हम किस दलील से रद्द करें और सिर्फ़ एक ही शख्स की बात को जो छः सौ बरस बाद एक दुर ग़ैर मुल्क में पैदा हुआ और जिसकी रिसालत ही किसी तरह साबित नहीं हो सकती और जो कुतुब-ए-इलाही के बरखिलाफ़ और जहान की तवारीखों के बरअक्स हैं तस्लीम करें? पस ज़रूर मसीह मारा गया और जी उठा और आस्मान पर चढ़ गया। दूसरी बात ग़ौर के लायक़ ये है कि हमारे खुदावन्द येसू मसीह की ईज़ा कुशी और मुसीबत और बेइज़्ज़ती की बर्दाश्त और जाहिलों के हाथ से ठट्ठा में उड़ाए जाने का अहवाल सुनकर नादान बे समझ लोग जिन्होंने ने खुदा के मदरिसा में ताअलीम नहीं पाई यानी जिन्होंने ने कलाम-ए-इलाही के नूर से मुनव्वर हो कर अपनी इन्सानी अक्ल की ग़लतीयों से वाक़फ़ीयत हासिल नहीं की वो ये समझते हैं कि इन बयानों से मसीह पर ऐब लगता है और एक पैग़म्बर की बेइज़्ज़ती होती है। इसलिए ये लोग हयाते अबदी से महरूम रहते हैं ऐसे लोगों को मालूम रहना चाहिए कि इन बयानों से मसीह और खुदा पर कुछ ऐब नहीं लगता बल्कि उस की कुदूसी और मुहब्बत और उस का जलाल और अदालत रहम और इल्म हद दर्जा ज़ाहिर होता है।

अगर ये बयान मुफ़स्सिल लिखा जाये तो एक बड़ी किताब हो जाती है। इसलिए यहां पर हम सिर्फ़ एक इशारे पर किफ़ायत करते हैं कि मसीह की दुनियावी बेइज़्ज़ती उस का जलाल ज़ाहिर करती है ना कि उस की हिक़ारत। मेरी बात लायक़ ग़ौर ये है, कि इस पेशीनगोई पर बाअज़ अहले इस्लाम एतराज़ करते हैं। जो मती 12:40 में है कि जैसे

यूनुस तीन रात-दिन मछली के पेट में रहा वैसा ही इब्ने-आदम तीन रात-दिन ज़मीन के अंदर रहेगा। वो कहते हैं कि इस बयान के मुवाफ़िक़ तीन रात-दिन क़ब्र में पूरे करने ज़रूर थे हालाँकि वो जुमे को तीसरे पहर दफ़न हुआ इतवार को अलस्सुबाह जी उठा। इस का जवाब कई तौर पर दिया जा सकता है। मगर हम तहकीकी जवाब देना चाहते हैं और वो ये है कि ये इबारत आम बोल-चाल के तौर पर इस्तिमाल हुई है जैसे कोई शख्स जुमे को शाम के वक़्त अमृतसर में आए और इतवार की सुबह को कहे कि मैं तीन दिन से अमृतसर में आया हूँ और वो ज़रूर इस क़ौल में सच्चा है क्योंकि ऐसा बोलना आम मुहावरा है इसी तरह मसीह ने कहा उस की ये मुराद नहीं थी कि तुम घड़ी के तीन रात-दिन के घंटे मिनट पूरे कर लेना बल्कि ये मतलब था कि रोज़ दफ़न से तीसरे दिन उठूंगा। हमारे पास क़ौल की ताईद उमूर ज़ेल से होती है :-

अव्वल, खुद मसीह ने बार-बार हमें इस फ़िक़ह के मअनी बतलाए हैं कि रोज़ दफ़न से तीसरे दिन जी उठूंगा। चुनान्चे मती 20:19 में कि वो तीसरे दिन जी उठेगा। और मर्कुस 8:31 में है कि वो तीन रोज़ बाद जी उठे। और 9:21 में है कि वो मस्लूब जो कि तीसरे दिन फिर जी उठेगा। और 10:34 में है कि वो तीसरे दिन जी उठेगा। और लूका 9:22 में है कि वो तीसरे दिन फिर उठाया जाये। और 18:33 में है कि तीसरे दिन जी उठेगा। इन फ़िक़्रों से साफ़ ज़ाहिर है कि उस की मुराद सिर्फ़ तीसरे दिन जी उठने की है ना वो मुराद जो मोअतरिज़ समझा है।

दुवम, ये कि मसीह के शागिर्द इस फ़िक़ह के मअनी मुहावरे के तौर पर ये है समझे थे जो मसीह ने बार-बार बयान किए और जो हम बयान करते हैं। चुनान्चे लूका 24:6, 7 में है कि याद करो कि जब वो गलील में था तो उसने तुमसे कहा था ज़रूर है कि इब्ने-आदम गुनेहगारों के हाथ में हवाले किया जाए। और सलीब दिया जाये और तीसरे दिन जी उठे। इस का ये मक्सद नहीं है कि तुम घड़ी हाथ में लेकर तीन रात-दिन के तमाम घंटे और मिनट गिनते जाओ बल्कि सिर्फ़ ये मतलब था कि दफ़न होने के दिन से तीसरे दिन जी उठूंगा।

सोइम, ये कि मसीह के दुश्मनों ने भी इस फ़िक़े के मअनी वही समझे थे जो हम कह रहे हैं। चुनान्चे मती 27:63 में है कि ख़ुदावन्द हमें याद है कि इस धोके-बाज़ ने

जीते-जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। पस हुक्म दे कि तीसरे दिन तक कब्र हिफाज़त की जाये। ना ये कि तीन रात-दिन के घंटे गिने जाएं।

चहारुम, ये कि मसीह का जुमे को मस्लूब होना और इतवार को जी उठना ये साबित करता है कि उस का मतलब तीसरे दिन जी उठने से था और अल्फाज़ मुहावरे के आम बोल-चाल के तौर पर इस्तिमाल हुए हैं।

पंजुम, ये कि मती की इन्जील में मसीह का तीन दिन रात युनुस (यूनाह) की मानिंद ज़मीन में रहना मज़कूर हुआ है पहले मोअतरिज़ को चाहिए कि यूनुस का तीन दिन रात घड़ी के हिसाब के बमूजब मछली के पेट में रहना साबित करे बाद उस के फिर इस तश्बीह पर गुफ्तगु करे हम कहते हैं कि यूनुस का तीन रात-दिन मछली के पेट में रहना इसी तौर पर था जिस तौर पर मसीह तीन रात-दिन कब्र में रहा। पस अक्ल-ए-सलीम के नज़दीक ये एतराज़ बिल्कुल बातिल (झूट) है और मसीह की पेशीनगोई ज़रूर पूरी हुई।

(2) पेशीनगोई यहूदाह के हक़ में है। यूहन्ना 13:21 ये बातें कह कर येसू अपने दिल में घबराया और ये गवाही दी कि मैं तुमसे सच्च सच्च कहता हूँ कि तुम में से एक शख्स मुझे पकड़वाएगा। मती 26:25 उस के पकड़वाने वाले यहूदाह ने जवाब में कहा कि ऐ रब्बी क्या मैं हूँ? उसने इस कहा तूने खुद कह दिया। उस का ये कहना भी पूरा हुआ। चुनान्चे मती 26:47 वो ये कह ही रहा था, कि यहूदाह जो उन बारह में से एक था आया और उस के साथ एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठीयां लिए सरदार काहिनों और बुजुर्गों की तरफ़ से आ पहुंची और उस के पकड़वाने वाले ने उन्हें ये पता दिया था, कि जिसका मैं बोसा लूँ वही है उसे पकड़ लेना। और फ़ौरन येसू के पास आकर कहा कि ऐ रब्बी सलाम और उस के बोसे लिए।

(3) पेशीनगोई सब शागिर्दों के हक़ में है। मती 26:31 उस वक़्त येसू ने उन से कहा कि तुम सब इसी रात मेरी बाबत ठोकर खाओगे। क्योंकि लिखा है कि मैं चरवाहे को मारूंगा और गल्ले की भेड़ें परागंदा हो जाएँगी। नीज़ देखो मर्कुस 14:27, यूहन्ना 16:32 चुनान्चे मती 26:56 में है कि तब सब शागिर्द उसे छोड़ के भाग गए।

(4) पेशीनगोई गलील के जाने के हक़ में है। मती 26:32 में है कि मैं अपने जी उठने के बाद तुमसे पहले गलील को जाऊँगा। ये भी पूरी हुई। चुनान्चे मती 28:6 वो यहां नहीं है क्योंकि अपने कहने के मुवाफ़िक़ जी उठा है आओ ये जगह देखो जहान खुदावन्द पड़ा था।... और देखो वो तुमसे पहले गलील को जाता है। और ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ पर गए जो येसू ने उनके लिए मुकर्रर किया था।

(5) पेशीनगोई पतरस के हक़ में है। मती 26:33 में है पतरस ने जवाब देके उसे कहा गो सब तेरी बाबत ठोकर खाएं लेकिन मैं कभी ठोकर ना खाऊँगा। येसू ने उसे कहा मैं तुझसे सच्च्य कहता हूँ कि इसी रात मुर्ग के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा। ये भी पूरी हुई चुनान्चे आयत 69 में है कि पतरस बाहर सेहन में बैठा हुआ था कि एक लौंडी उस के पास आकर बोली तू भी येसू गलीली के साथ था उसने सब के सामने ये कह के इन्कार किया कि मैं नहीं जानता हूँ कि तू क्या कहती है। और जब वो डेयुद्धी में चला गया तो दूसरी ने उसे देखा और जो वहां थे उनसे कहा ये भी येसू नासरी के साथ था उसने क़सम खा कर फिर इन्कार किया कि मैं इस आदमी को नहीं जानता। थोड़ी देर के बाद जो वहां खड़े थे। उन्होंने पतरस के पास आके कहा बेशक तू भी उनमें से है क्योंकि तेरी बोली से भी ज़ाहिर होता है। इस पर वो लानत करने और क़सम खाने लगा कि मैं इस आदमी को नहीं जानता और फ़ील-फ़ौर मुर्ग ने बाँग दी पतरस को येसू की वो बात याद आई जो उसने कही थी कि मुर्ग के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वो बाहर जा के ज़ार ज़ार रोया।

(6) पेशीनगोई मसीह की सलीबी मौत के हक़ में है। यूहन्ना 3:14 में है कि और जिस तरह मूसा ने साँप को ब्याबान में ऊंचे पर चढ़ाया उसी तरह ज़रूर है कि इब्ने-आदम भी ऊँचे पर चढ़ाया जाये ताकि जो कोई ईमान लाए उस में हमेशा की ज़िन्दगी पाए।

अगर आप इस वाक़िया का बयान पढ़ना चाहते हैं कि किस तरह और किस लिए मूसा ने पीतल का साँप बना कर अपने असा पर लटकाया? तो आप गिनती 21:5-9 तक का मुतालआ करें।

हमारे मुनज्जी की पेशीनगोई भी हर्फ ब हर्फ पूरी हुई। चुनान्चे यूहन्ना 19:18 में लिखा है कि उन्होंने उस को और उस के साथ और दो शख्सों को सलीब दी एक को इधर एक को उधर और येसू को बीच में।

(7) पेशीनगोई रूह-उल-कुद्स के हक में है। यूहन्ना 14:26 में है कि लेकिन मददगार यानी रूह-उल-कुद्स जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा वही तुम्हें सब बातें सिखलाएगा। और जो कुछ मैंने तुम से कहा है वो सब तुम्हें याद दिलाएगा। चुनान्चे ये भी पूरा हुआ जैसा कि आमाल 2:1 से 4 तक मज्कूर है कि जब ईद पंतीकोस्त का दिन आया तो वो सब एक जगह जमा थे कि यका-यक आस्मान से ऐसी आवाज़ आई जैसे रोज़ की आंधी का सन्नाटा होता है और इस से सारा घर जहां वह बैठे थे। गूंज गया और उन्हें आग के शोले की सी फटती हुई ज़बानें दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं और वो सब रूह-उल-कुद्स से भर गए और गैर ज़बानें बोलने लगे जिस तरह रूह-उल-कुद्स ने उन्हें बोलने की ताकत बख़शी।

सब अहले-इल्म साहिबे शऊर अच्छी तरह जानते हैं कि ये पेशीनगोई मसीह ने रूह-उल-कुद्स के हक में बयान की थी और जब खुदावन्द की रूह हवारियों पर नाज़िल हुई तो ये पेशीनगोई पूरी हो गई। मगर बाअज़ अहले-इस्लाम यूं कहते हैं कि ये पेशीनगोई मसीह ने मुहम्मद साहब के हक में कही है और इस के मुताल्लिक कुछ चूं व चरा करते रहते हैं। लिहाज़ा ज़रूर है कि इस की निस्बत भी कुछ लिख डालें। हम कहते हैं कि ये पेशीनगोई मुहम्मद साहब के हक में हरगिज़ नहीं है बल्कि सिर्फ़ रूह-उल-कुद्स के हक में है जिसकी दलील ये है कि तमाम कलाम-ए-इलाही में कोई लफ़ज़ और कोई करीना (बहमी ताल्लुक) ऐसा नहीं है जिससे मुसलमानों का दावा साबित हो सके मुसलमान कहते हैं कि जिस लफ़ज़ का तर्जुमा “मददगार” किया गया है। वो लफ़ज़ फ़ारक़लीत (فارقليط) है और इस के सही मअनी मुहम्मद या अहमद के हैं। इन बेचारों को अगर यूनानी ज़बान से वाक़फ़ीयत होती तो वो हरगिज़ इस किस्म का बेहुदा दावा ना करते बहर-हाल ये बार-ए-सुबूत उन पर है कि वो किसी मुस्तनद यूनानी लुगत से साबित करें, कि फ़ारक़लीत (فارقليط) के मअनी मुहम्मद या अहमद के हैं। इस के सिवा आयत बाला में मसीह ने फ़रमाया है कि वो मददगार हवारियों को मसीह की सब बातें याद दिलाएगा। मुहम्मद साहब ने हवारियों को मसीह की बातें याद नहीं दिलाई बल्कि खुद छः सौ (600) बरस के बाद ज़ाहिर हुआ। फिर इसी के 14:16 में है कि वो मददगार

तुम्हारे साथ अबद तक रहेगा। मुहम्मद साहब ना कभी हवारियों और ईसाईयों के साथ रहे और ना अब साथ हैं बल्कि खुदा की रूह हमेशा उनके (शागिर्दों के) साथ रही और अब तक मसीही ईमानदारों के साथ है। आयत 17 में मसीह ने तीसरी सिफ़त उस की ये बयान की कि उसे दुनिया नहीं पा सकती क्योंकि उसे नहीं देखती और ना उसे जानती है। लेकिन तुम तो उसे जानते हो क्योंकि वो तुम्हारे साथ रहती है और तुम में मौजूद है यहाँ से ज़ाहिर होता है कि वो मददगार ग़ैर मुरई (यानी जिसका वजूद हो लेकिन दिखाई ना दे) यानी नादीदनी है। मगर मुहम्मद साहब को अरब के लोगों ने देखा वो ग़ैर मुरई नादीदनी (अन्देखी) शैय ना थे। बल्कि खुदा की रूह ये सिफ़त रखती है।

चौथी दलील ये है कि मसीह ने शागिर्दों से कहा जब तक वो मददगार ना आए तुम को यरूशलेम के शहर से बाहर ना जाना चाहिए। चुनान्चे लूका 24:49 और आमाल 1:4, 5 में भी इस का मुफ़स्सिल ज़िक्र मौजूद है पस इन आयतों की रु से लाज़िम था कि जब तक आँहज़रत ज़ाहिर ना हुए तब तक हवारी 6 सौ बर्स तक यरूशलेम में ज़िंदा मौजूद रहते हालाँकि आँहज़रत से बहुत पहले हवारी फ़ौत हुए। इस के सिवा अक्लमंद आदमी के लिए सिर्फ़ इतनी बात काफ़ी है कि इस आने वाले का नाम मसीह ने मददगार बयान किया है मुहम्मद साहब क्योंकि हो सकते हैं क्या ताअलीम के एतबार से हरगिज़ नहीं पस इन्सान की मदद करना सिर्फ़ रूह-उल-कुद्स का काम है। और वो हर लम्हा कर रहा है। पस ये पेशीनगोई भी पूरी हुई।

(8) पेशीनगोई अपने लोगों को ताक़त बख़्शने के हक़ में है। लूका 21 में है कि मैं तुम्हें ऐसी ज़बान और हिक्मत दूंगा, कि तुम्हारा कोई मुखालिफ़ सामना करने या ख़िलाफ़ कहने का मक़दूर (ताक़त) ना रखेगा। ये भी पूरा हुआ चुनान्चे रसूलों का हाल देखने से ज़ाहिर है कि वो लोग बिल्कुल जाहिल और बेपढ़े लोग थे। लेकिन मसीह ने उन को ऐसी ज़बान और हिक्मत इनायत की कि तमाम जहान के आलिम उनकी ताअलीम से दंग हैं और सब अक्वलीन व आखरीन के भेद और इलाही रमूज़ जो इब्तिदा आलम से पोशीदा थे उनके दिल और ज़बान पर जारी हैं और आज तक मसीही लोगों को खुदा की तरफ़ से वो ज़बान और हिक्मत इनायत हुई है कि कोई मुखालिफ़ उनका मुकाबला तहरीर और तक्ररीर में नहीं कर सकता। पस ये पेशीनगोई भी हम अच्छी तरह पूरी हुई देखते हैं।

(9) पेशीनगोई उस की बातें ना टलने के हक़ में है। मती 24:35 में है कि “आस्मान और ज़मीन टल जाएंगे। पर मेरी बातें ना टलेंगी।” मुराद ये है कि आस्मान और ज़मीन को भी इस क़द्र पायदारी नसीब नहीं है जिस क़द्र मेरी बातों को हासिल है वो हरगिज़ ना टलेंगी। अब हम देखते हैं कि मसीह की बातें हरगिज़ टलने वाली नहीं हैं। देखो झूटे मज़हबों की बातें कैसी टल गईं और टलती जाती हैं लेकिन मसीह की बातें जो हकीकत में सच्ची हैं आज तक नहीं टलीं और आइन्दा को हरगिज़ टलती नज़र नहीं आतीं। इब्तिदा में यहूदीयों ने मसीह की ताअलीम को नेस्त व नाबूद करना चाहा और अपनी तमाम ताक़त इस में सर्फ़ की जिस क़द्र वो लोग बर्बादी चाहते थे, उस से ज़्यादा यहां तरक़की होती जाती थी। उनके बाद बिदअतियों और गुमराहों ने बावजूद दावा ईसाईयत उस की पाक ताअलीम को छोड़कर अपनी गंदी रस्में मानना शुरू की मगर उन की मुर्दा ताअलीम से मसीह की ज़िंदा ताअलीम दब ना गई बल्कि उनकी इन्सानी ताअलीम को दबा कर खुदा का ज़िंदा कलाम ऐसा उभरा कि हमेशा से इस वक़्त तक मसीही ताअलीम बेतास्सुब हक़-परस्तों के सामने आईना की तरह मौजूद है। इस के बाद मुल्हिदों (काफ़िरों) ने खुदा के मुन्किरों ने अक़ल परस्तों ने मसीही कलाम पर अपनी बड़ी ताक़त खर्च की और चाहा कि ये ताअलीम जहां से उठ जाये और उनकी ताअलीम जारी हो मगर वो खुद बर्बाद हुए उन की किताबों को कीड़ा खा गया लेकिन मसीह की बातें अब तक कायम हैं। इस के सिवा मुहम्मद साहब ने मसीही ताअलीम के बर्बाद करने में और ही तरह से कोशिश की लोगों से कहा कि वह कलाम तो बरहक़ है लेकिन अब वो मन्सूख हुआ उस पर अमल ना करो लो ये मेरा कुरआन है इस को मान लो। मुहम्मदी आलिमों ने अपने पेशवा की ताईद में बड़े अगर मगर मिला कर किताबें तस्नीफ़ कीं पर कलाम-ए-इलाही को वो लोग हरगिज़ रद्द ना कर सके उनकी तमाम गलतीयां ज़ाहिर हो गईं चुनान्चे कोई सच्चाई से तहकीक़ करता है अपने खयालों से तौबा कर के इन्जील पर ईमान ले आता है पस ये मसीह का क़ौल कि मेरी बातें हरगिज़ ना टलेंगी कैसी दुरुस्ती से पूरा हुआ और होता है।

(10) पेशीनगोई इन्जील की मुनादी के हक़ में है। मती 24:14 में है कि “और बादशाहत की इस खुशखबरी की मुनादी तमाम दुनिया में होगी ताकि सब क़ौमों के लिए गवाही तब ख़ातिमा होगा।” अगर कोई उस वक़्त पर गौर करे जिस वक़्त ये पेशीनगोई मसीह ने सुनाई थी और आज के दिन को देखे तो उसे मालूम हो जाएगा कि उस वक़्त आस्मान की बादशाहत राई के दाना की मानिंद कैसी कमज़ोर नज़र आती थी। और अब

कैसे बड़े दरख्त की सूरत में जहान में जाहिर हुई है। और कहाँ से कहाँ तक इस की मुनादी हो गई इस पेशगोई की इस हालत को देखकर यकीन-ए-कामिल हो जाता है कि जरूर क्रियामत तक सारी दुनिया में इन्जील की मुनादी हो जाएगी।

(11) पेशीनगोई गैर क्रौमों के ईमान के हक में है। मती 8:11 में है कि “कि मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुतेरे पूरब और पक्षिम से आकर इब्राहिम और इज्हाक और याकूब के साथ आस्मान की बादशाहत की ज़ियाफत में शरीक होंगे पर बादशाहत के फ़र्ज़न्द बाहर अंधेरे में डाले जाएंगे वहां रोना और दाँतों का पीसना होगा। ये भी पूरा हो गया कि हज़ार-हा आदमी पूरब पक्षिम जुनूब शुमाल के रहने वाले ईमान ला कर मसीही जमाअत में दाखिल हो गए और हज़ार-हा आदमी ईसाई होते जाते हैं और इन ईमान लाने वालों में से सदहा हरदम ऐसे अच्छे ईसाई हुए हैं कि हम उनसे अच्छे लोग किसी क्रौम के बुजुर्गों में नहीं देखते और मसीह की ये पेश ख़बरी और गैर क्रौमों में से बाअज़ का ये हाल देखकर खुदा की सताइश करते हैं।

(12) पेशीनगोई ईसाईयों की मुसीबत के हक में है। मती 24:9 में है कि वो तुम्हें दुख में हवाले करेंगे और मार डालेंगे और मेरे नाम के सबब सब कौमों तुम से कीना (दुश्मनी) रखेंगी। ये भी पूरा हुआ क्योंकि दुनिया-दारों ने हमेशा से इन लोगों के साथ अदावत की और अब ख़ास इस क्रौम से हर शख्स अदावत रखता है।

(13) पेशीनगोई झूटे नबियों के हक में है। मती 24:11 में है कि बहुत से झूटे नबी उठ खड़े होंगे। और बहुतेरों को गुमराह करेंगे और बेदीनी के बढ़ जाने के सबब बहुतेरों की मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। मगर जो आखिर तक बर्दाश्त करेगा नजात पाएगा। ये भी पूरा हुआ और होता जाता है। बहुत से झूटे मुअल्लिम (उस्ताद) जाहिर हो गए और होते जाते हैं और आइन्दा को भी शायद हो जाएं।

(14) पेशीनगोई यरूशलेम के हक में है। मती 24:2 में है कि “मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि यहां किसी पत्थर पर पत्थर बाकी ना रहेगा, जो गिराया ना जाएगा।” ये भी पूरा हुआ और यरूशलेम की बर्बादी मसीह के फ़र्मान के मुवाफ़िक़ हुई। इस के सिवा खुदावंद येसू मसीह की और बहुत सी पेशीन गोईयाँ हैं खुसूसुन मुकाशफ़ा की किताब में जिसमें हमारे खुदावंद ने तमाम अहवाल अपने अहद से क्रियामत तक का लिखवा दिया है जिसमें से बहुत कुछ तर्तीबवार पूरा हो गया। और रोज़ बरोज़ पूरा होता जाता है। जिस

के लिखने की गुंजाइश इस मुख्तसर रिसाले में नहीं है। उन सबको छोड़कर सिर्फ इस अर्ज पर इक्तिफ़ा करते हैं कि ऐसा सादिकुल-क़ौल दुनिया में मसीह के सिवा कौन ज़ाहिर हुआ ज़रूर वो खुदा-ए-मुजस्सम था जो सब ईमानदारों की नजात के वास्ते आया उस पर इन्जील के मुवाफ़िक़ ईमान लाओ और तास्सुब (मज़हब की बेजा हिमायत) को छोड़कर इन बातों पर फ़िक्र करो जानवर की तरह बेफ़िक्र दुनिया में रहना अच्छा नहीं आखिर एक दिन अदालत का मुक़रर है खुदा से डरो और उस के इकलौते प्यारे बेटे को कुबूल करो और उस के शुक्रगुज़ार बनो जिस ने अपना बेटा तुम्हें बख़्श दिया ताकि हमेशा की ज़िंदगी उस के वसीले से हासिल करो आइंदा मुख्तार हो। **وما على الرسول الا البلاغ**

रिसाला हफ़तुम (7)

मसीह की तक़रीर का ग़लबा

गुज़श्ता तीन रिसालों में दीने ईस्वी की हकीक़त पर ऐसी तीन कामिल दलीलें मज़कूर हुईं कि एक दयानतदार शख्स के लिए काफ़ी से ज़्यादा हैं और हकीक़त ये कि इस किस्म के कामिल दलाईल कोई अहले मज़हब सिवाए ईसाईयों के अपने मज़हब पर पेश नहीं कर सकता ताहम हम बहुत सी और दलीलों में से एक और दलील बयान कर के इस बहस को चार दलीलों पर ख़त्म करना चाहते हैं ताकि दीगर मज़ामीन को बहुत जल्द नाज़रीन की ख़िदमत में पेश कर सकें।

चौथी दलील ईसाई मज़हब की हकीक़त पर ये है कि खुदावन्द येसू मसीह की तक़रीर में ऐसा ज़ोर और ऐसी ताक़त और कशिश थी जिसकी मिस्ल दुनिया के और मुक़ररों और हादियों (रहनुमाओं) की तक़रीर में नहीं मिल सकती है यानी उस की ताअलीम हर ताअलीम पर ग़ालिब आती है। इस की तफ़सील और कैफ़ीयत उस वक़्त मालूम होती है जब कोई शख्स कलाम-ए-इलाही को अद्वल से आखिर तक उस के वाक़िफ़ों से और इस की मोअतबर (काबिल-एतबार) तफ़सीरों से दर्याफ़्त कर के ग़ौर से पढ़े इन मुख्तसर रिसालों में इस की कैफ़ीयत का कमा-हक्का (जैसा उस का हक़ है) बयान करना दुशवार है। हाँ मती रसूल की इन्जील की तफ़सीर में जो लिखी जा रही है इस के मुताल्लिक़ क़द्रे तफ़सील के साथ बयान करेंगे। यहां पर सिर्फ़ इस क़द्र बयान कर

देना काफ़ी है कि मसीह की ताअलीम में कई क्रिस्म की खूबियां हैं जिसको हर शख्स बशर्ते के सलीम-उल-अक़ल (अक़लमंद) और बेतास्सुब हो कुबूल कर सकता है। पहली बात वो अपनी ताअलीम में अपने उन मुखालिफ़ों पर जो उस वक़्त उस का मुकाबला करते थे। बड़ी क़वी (मज़बूत) दलीलों से ग़ालिब आया। इस की तौज़ीह (वज़ाहत) यूं है कि दुनिया में जितने रहबर ख़्वाह झूटे या सच्चे ज़ाहिर हुए हैं उनके अहद में उनके मुखालिफ़ और उनके रद्द करने वाले उनसे मुकाबला और बहस करने को उठे हैं और उनसे हकीकत की दलीलें भी तलब की हैं और उन पर एतराज़ कर के उनको रद्द करना चाहा और ये बात तालिबाने हक़ के लिए निहायत मुफ़ीद साबित हुई है। जिससे सही अक़ल अच्छा नतीजा निकालती है। मसलन जब मुहम्मद साहब ज़ाहिर हुए और दावा-ए-नुबूव्वत का किया तो उनके मुकाबले पर अरब के बुत-परस्त और बाअज़ जाहिल यहूदी और बिद्अती ईसाई उठे और मुहम्मद साहब से बहस की जिसका ज़िक्र कहीं कहीं कुरआन में भी मिलता है इस के देखने से मालूम होता है कि मुहम्मद साहब अरब के बुत-परस्तों पर बहस में कभी-कभी ग़ालिब भी आते थे। लेकिन मोअजिज़ा ना होने के सबब ग़लबे का कमाल उन पर भी ज़ाहिर ना हो सका हालाँकि बुत-परस्ती ऐसी बातिल है कि हर शख्स जो इस को रद्द करना चाहे बाआसानी इस को बातिल कह सकता है मगर यहूद और ईसाईयों पर बावजूद सल्तनत और इक़्तदार के आप कभी ग़ालिब ना सके। (सूरह अल-हिज़्र के पहले रूकूअ में है, कि *قالوا يا ايها الذي نزل عليه الذكرا انك مجنون لوماتنا* लोग कहते ऐ शख्स जिस पर कुरआन उतरा है तू बेशक दीवाना है क्यों नहीं लाता हमारे पास फ़रिशतों को अगर तू सच्चा है इस एतराज़ का जवाब ये दिया गया, *مانزل المحكته الا بالحق وما كانوا منظرين انا نحن لانا الذكروا انا لا حافظون*)

हम नहीं भेजे फ़रिशते मगर काम फिराकर और उस वक़्त फ़ुर्सत ना मिलेगी। हमने आप कुरआन उतारा है और हम इस के निगहबान हैं। ज़ाहिर है कि इस एतराज़ का जवाब ऐसा है कि एक झूटा शख्स भी जवाब दे सकता है। इस से मोअतरिज़ का मुँह-बंद नहीं हो सकता। मती 12:24-26 से ज़ाहिर है कि जब यहूदीयों ने मसीह के मोअजज़ात पर एतराज़ किया कि जो कुछ तू करता है बाल-ज़बुल (बद रूहों के सरदार) के ज़रीये से करता है तो मसीह ने उनको ऐसा दंदाँशिकन (मुंहतोड़) जवाब दिया कि वो बिल्कुल खामोश हो गए वो जवाब ये कि जिसकी बादशाहत में फूट पड़ती है वो वीरान हो जाती है। और जिस किसी शहर या घर में फूट पड़ेगी वो कायम ना रहेगा। और अगर

शैतान ही ने शैतान को निकाला तो अपना मुखालिफ़ आप हो गया फिर उस की बादशाहत क्योंकि कायम रहेगी। देखो ये कैसा माकूल जवाब है जिसको हर मुंसिफ़ शख्स फ़ौरन कुबूल करेगा। दूसरा जवाब मसीह ने ये दिया कि अगर मैं बाल-ज़बूल की मदद से देवों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे किस की मदद से निकालते हैं? इसलिए वो ही तुम्हारे मुंसिफ़ होंगे। तीसरा ये जवाब दिया कि ज़ोर-आवर का घर लूटने को कोई बड़ा और चाहिए ताकि पहले ज़ोर-आवर को वो बाँधे फिर उस का घर लूटे पस शैतान जो ऐसा ज़ोर-आवर है कि कोई आदमी उस पर फ़तहयाब नहीं हो सकता वो बग़ैर इलाही ताक़त के क्योंकि मग़लूब है कि कोई आदमी इस पर फ़तहयाब नहीं हो सकता वो बग़ैर इलाही ताक़त के क्योंकि मग़लूब होगा और तुम देखते हो कि मैं शैतान पर ग़ालिब हूँ पस ज़रूर मैं खुदाई ताक़त से काम करता हूँ। सूरह अम्बिया के पहले रूक़अ में है, *قالواضعافالاحلام* लोग कहते हैं ये कुरआन के झूटे ख़्वाब ख़याल हैं और मुहम्मद शायर है उसने ये बातें बनाई हैं अगर चाहे तो अगले पैग़म्बरों की मानिंद कोई निशानी लाए। इस का जवाब ये दिया गया, *ماامتبتبهممنقریتهاهلکناها*, इनसे पहले भी किसी बस्ती ने नहीं माना जिन को हम ने मारा पस ये क्या मानने वाले हैं। ये ऐसा जवाब है कि हर झूटा मुद्दई नबुव्वत (नबुव्वत का दावा करने वाला) भी ये जवाब दे सकता है और इस से ये भी ज़ाहिर है, कि अगर मुहम्मद साहब ने कोई मोअजिज़ा दिखला या होता तो वो लोग ऐसा एतराज़ ना करते और ना मुहम्मद साहब ऐसा सुस्त जवाब देते। उनके सवाल से तीन बातें ज़ाहिर हैं, अक्वल ये कि कुरआन के मज़ामीन उनके सामने झूटे ख़्वाब ख़याल की तरह हैं चुनान्चे अब भी कोई अक्लमंद शख्स इन मज़ामीन को जो सिर्फ़ कुरआन के हैं उम्दा नहीं कह सकता है अलबत्ता कुतुब-ए-मुक़द्दसा से जितने मज़ामीन माख़ज़ (अख़ज़) हैं वो बिलाशक़ निहायत अच्छे हैं। इन्जील के मज़ामीन की बरतरी की निस्बत खुद यहूदीयों ने जो मसीह के जानी दुश्मन थे गवाही दी है, जिसका ज़िक्र मत्ती 13:54 में है कि अपने वतन में आकर उनके इबादत खाने में उन्हें ऐसी ताअलीम देने लगा कि वो हैरान हो कर बोले कि इस को ये हिक्मत और मोअजिज़े कहाँ से मिल गए और आज तक किसी आदमी ने इन्जील से बेहतर कोई ताअलीम नहीं दिखलाई।

दोम ये कि मुहम्मदी लोग कुरआन की इबारत मोअजिज़ा जानते हैं। और कहते हैं कि अरब को इस मोअजिज़े की ज़रूरत थी क्योंकि वो सब लोग फ़सीह (खुश-बयान) थे

मगर इस सवाल से मालूम होता है कि उन्होंने इस इबारत आराई और फ़साहत (खुश-बयानी) से मुहम्मद साहब को शायर कहा या नबी उन्होंने इस को मोअजिज़ा भी ना जाना और कुरआन से कहीं साबित नहीं होता कि अहले अरब ने इस फ़साहत से ताज्जुब कर के उनको नबी जाना हो बरखिलाफ़ इस के वो इस की फ़साहते लफ़्ज़ी की लफ़्ज़ी हंसी उड़ा कर उनको शायर बतलाते थे।

सोम यह कि अहले-अरब उनसे कहते थे, कि अगर तू नबी है तो अगले नबियों की मानिंद कोई निशानी दिखला इस से ज़ाहिर है कि कोई निशानी उनके पास ना थी। और आँहज़रत का जवाब ऐसा ज़ईफ़ (कमज़ोर) है कि इन तीनों बातों में से एक बात को भी रद्द नहीं कर सकता ना कोई माकूल उज़्र पेश करता है। सूरह बकरह के 23 रूकूअ में है, *يسلونك عن الاهله* नए चाँद का हाल तुझसे पूछते हैं लोग ऐ मुहम्मद। जलालेन में है कि सवाल ये था, कि क्या सबब है कि चाँद छोटा निकलता है और बढ़ते बढ़ते बड़ा हो जाता है। फिर घट जाता है सूरज की मानिंद एक हालत पर क्यों नहीं रहता है? ये एक इल्मी और माकूल सवाल था अब जवाब मुलाहिज़ा हो, *كفكف على مواقيت الناس والحج*, ये वक़्त ठहरे हैं लोगों के लिए और हज के। इस को कहते हैं सवाल अज़ आस्मान जवाब अज़ रेसियान। ये जवाब बईना ऐसा है कि किसी हिंदू के जवाब में कहा जाये कि सड़कें बनी हैं गंगा नहाने वालों के वास्ते। सूरह ज़ारियात में है, *يشلوندايان يوم الدين* लोग पूछते हैं इन्साफ़ का दिन कब आएगा। जवाब ये दिया गया, *يومهم على النكر يقفون*, जिस दिन आग में डाले जाएंगे। ये सवाल मसीह से भी किया गया था कि क्रियामत कब आएगी मसीह ने ऐसा माकूल जवाब दिया जिससे लोग साकित चुप (दम-ब-खुद) हो गए और कि उस दिन की बाबत कोई नहीं जानता बल्कि फ़रिश्ते भी नहीं जानते मगर तो भी उसने उस की ऐसी अलामतें बतलाएं कि वाज़ेह हो गया चुनान्चे सबसे बड़ी अलामत ये बतलाई कि जब इन्जील की मुनादी ज़मीन की इंतिहा तक हो जाये उस वक़्त क्रियामत होगी ये एक ऐसा जवाब है जो क्रियामत का यक़ीन और उस के करीब व बाद का हाल निहायत तसल्ली के साथ दिलों पर नक्श कर देता है इसलिए इस सवाल के जवाब में मसीह ग़ालिब और मुहम्मद साहब मग़्लूब (हारे हुए) है। इसी तरह कुरआन में बहुत से सवाल व जवाब मज़कूर हैं कहीं औरतों की बाबत कहीं यतीमों की बाबत कहीं हैज़ की बाबत। कहीं खैरात की बाबत कहीं शराब और किमारबाज़ी (जूवा बाज़ी) की बाबत और कहीं विरासत की बाबत मगर उनके जवाब या तो ऐसे हैं कि अदना अक़ल का आदमी भी दे सकता है।

या मुहम्मल (निकम्मा, बेकार) हैं। कोई जवाब उनका ताकत गैबी ज़ाहिर नहीं करता। बरखिलाफ़ मसीह के जो अपने मोअतरिज़ों पर अपने जवाबों में ना सिर्फ़ अक्ली ग़लबा बल्कि अक्ल से बाला गैबी इलाही ग़लबा ज़ाहिर करता है। हज़रत ईसा जब ज़ाहिर हुए बावजूद ये कि उनका दावा ना सिर्फ़ नबुव्वत व रिसालत का था बल्कि ये था कि मैं खुदा का बेटा हूँ इन्सान और खुदा दोनों हूँ। अक्लीन और आखिरीन का मैं नजातदिहंदा हूँ। क्रियामत और ज़िंदगी मैं ही हूँ। मैं जहान का नूर हूँ। बग़ैर मेरे वसीले कोई खुदा से मेल (मिलना) नहीं कर सकता। मैं ज़िंदगी की रोटी हूँ जो आस्मान से उतरी है। और मुखालिफ़ उस के ना सिर्फ़ बुत-परस्त और जंगी आदमी थे बल्कि बड़े-बड़े यहूदी फ़ाज़िल आलिम और फ़कीह और मुहद्दिस, मुअल्लिम उस्ताद और मशाइख कुब्बार (उलमा, बुजुर्ग) थे। और बयान उस का ये था कि ये कलाम इलाही जो तुम्हारे हाथ में है उसी को तुम नहीं समझते ये सब बयानात मेरे हक़ में हैं और वो लोग उस से बहस करने को उठे लेकिन वो उन पर ऐसा ग़ालिब आया कि हकीकत में सब मग़्लूब हो गए अगरचे बाअज़ ने शरारत से ना माना तो भी उस के मुबाहिसे से ज़ाहिर है कि हकीकत में उस के ना मानने वाले मुतअस्सिब (तंग-नज़र) और पाजी (ज़लील, बदमाश) थे। जिस कद्र अक्ली मुबाहिसे इस जहान में हुए हैं उनके ग़ालिबी और मग़्लूबी में हमेशा मुताख़िखरीन (बाद में आने वाले) को सुकम (खराबी, दुख) मालूम होते हैं लेकिन मसीही ग़लबा जो सिर्फ़ कुद्रते इलाही से नमूदार हुआ है। वो हमेशा अपने मुखालिफ़ों पर ग़ालिब रहा है मसीह का ये दावा सुनकर कि मैं खुदा का बेटा हूँ उलमा यहूद सख़्त नाराज़ थे। और आज तक दुनियावी लोग जो खुदा की कुद्रत से नावाकिफ़ और कलाम-ए-इलाही से बेखबर हैं इस दावे से कि मसीह खुदा का बेटा है। निहायत खफ़ा होते हैं पर उसने अपने दावे को जो नजात की बुनियाद है बहुत ही अच्छी तरह साबित कर दिया।

अक्ल कुदरत-ए-इख़्तियारी के ज़रीये से दोम तबीअत-ए-इलाही या मिज़ाज-ए-इलाही के ज़रीये से मगर वो दिल के अंधे इन भेदों को ना समझे तब उस ने उन पाक नविशतों की रु से जो अगले पैग़म्बरों ने इल्हाम से लिखवा कर उन्हें दिए थे अपनी उल्हियत को ज़ाहिर कर दिया ऐसा कि वो आलिम ला-जवाब हो गए और अब तक लाजवाब हैं। चुनान्चे मती 22:21 से 46 कि और जब फ़रीसी जमा हुए तो येसू ने उनसे ये पूछा कि तुम मसीह के हक़ में क्या समझते हो वो किस का बेटा है? उन्होंने उस से कहा दाऊद का। उसने उनसे कहा पस दाऊद रूह की हिदायत से क्योकर उसे खुदावन्द कहता है कि खुदावन्द ने मेरे खुदावन्द से कहा मेरी दाहिनी तरफ़ बैठ जब तक मैं तेरे

दुश्मनों को तेरे पांव के नीचे ना कर दूं। उस के इस जवाब की बाबत कोई एक बात ना कह सका और ना उस दिन से किसी ने उस से फिर सवाल करने की जुआत की। देखो खुदावन्द येसू ने अपनी उलूहियत के मुन्किरों का मुँह कैसी कामिल दलील से बंद कर दिया कि उलमा-ए-यहूद कुछ ना कह सके। और ना आज तक कुछ कह सकते हैं। और जो मतलब उसने इस 110 ज़बूर की पहली आयत का बयान किया इस के सिवा कोई और मतलब इस आयत का हो ही नहीं सकता है। मुहम्मद साहब ने कुरआन में एक जगह ज़िक्र किया है कि मेरी निस्बत हज़रत ईसा ने खबर दी है कि मेरे बाद एक नबी आएगा उस का नाम अहमद होगा। मगर इस दावे को ना तो उन्होंने और ना ही उलमा-ए-मुहम्मदिया ने आज तक साबित किया और ना ये मज़मून इन्जील शरीफ़ में कहीं मज़कूर है पस अब हम किस तरह कह सकते हैं कि वो अपने बयान में सच्चे और ग़ालिब हैं इसी तरह एक दफ़ा उलमा-ए-यहूद ज़ाहिरी शरीअत से बातिनी और रूहानी शरीअत का मुक़ाबला करने को और मसीह का इम्तिहान लेने को आए। यूहन्ना 8:3 से 11 और एक औरत को जो ज़िना में ऐन फ़ेअल के वक़्त पकड़ी गई थी लेकर उस के पास आए और कहा कि मूसा ने ऐसों को संगसार करने का हुक्म दिया है। तू इस की निस्बत क्या हुक्म देता है उसने जवाब दिया जो तुम में बेगुनाह है वो ही पहले इस को पत्थर मारे वो लोग दिल में काइल हो कर छोटे बड़े सब के सब चलते बने। तब हज़रत मसीह ने इस औरत से कहा जा फिर गुनाह मत कर। मसीह का ये मतलब था कि शरीअत बेशक दुरुस्त और खुदा की तरफ़ से है लेकिन तुम इस का मतलब नहीं समझे हो जिस शरीअत के रु से ये औरत गुनेहगार हुई है उसी शरीअत के रु से तुम भी गुनेहगार हुए कोई तुम में बेगुनाह नहीं है जब तक इलाही कफ़ारा ना हो शरीअत बचा नहीं सकती शरीअत एक आईना है जो तुम्हारे मुँह की स्याही तुम्हें दिखाता है पर स्याही को दूर नहीं कर सकता तुम आईने में अपने मुँह की स्याही देखकर पानी से मुँह धो लो यानी कफ़ारे के खून के बग़ैर पाक नहीं हो सकते तुम सब के सब गुनेहगार हो एक गुनेहगार दूसरे गुनेहगार को क्यों मारे बल्कि सब के सब मार खाने के लायक हैं। देखो इन्सानी सवाल का ज़इफ़ (कमज़ोरी) और इलाही जवाब की ताक़त और इसी तरह मसीह की सारी ताअलीम में इलाही ग़लबा ज़ाहिर है। जब कि ऐसे-ऐसे हकीकी और सही मज़मून जो अक़ल इंसानी से बाला हैं उस की ताअलीम में मिलते हैं तो फिर मुहम्मदी शरीअत के मुतालिब जो ज़ाहिरी और जिस्मानी हैं अक़ल पर क्यौंकर ग़ालिब हो सकते हैं और ऐसी जोर-आवर बातें जो मसीह की ताअलीम में हम पाते हैं सारे कुरआन में कहीं नहीं पाते

हैं। एक दफ़ाअ उलमा-ए-यहूद ने सलाह कि किसी तरह मसीह को गुफ़्तगु में फाँस लें। मती 22:15 से 21 चुनान्चे वो हेरोदियों को लेकर उस के पास आए और मक्कारी से कहा कि ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है सच्चाई से खुदा की राह की ताअलीम देता है हमें बतला कि शहनशाह कैसर को जज़्या देना जायज़ है या नहीं उनका मतलब ये था कि वो या तो ये कहेगा कि जायज़ है और या ये कहेगा कि जायज़ नहीं है। अगर जायज़ कहेगा तो हम अहले शराअ में इस को बदनाम करेंगे कि वो काफ़िर को जज़्या देना जायज़ बतलाता है। और अगर नाजायज़ कहा तो अदालत में इस का मुवाख़िज़ा (बाज़पुर्स) करा देंगे, कि वो बादशाह रोम को जज़्या (टैक्स) देने से मना करता है लेकिन उसने जो दिल और गुर्दों का जांचने वाला है और जो तमाम दीनी और दुनियावी इतिज़ाम का अलक है जिस पर कोई इन्सान ना फ़रिश्ते ग़ालिब आ सकते हैं यूँ जवाब दिया कि ऐ रियाकारो मुझे क्यों आज़माते हो जज़्या का सिक्का मुझे दिखाओ वो एक दीनार उस के पास लाए उसने उन्हें कहा ये सूरत और ये तहरीर किस की है वो बोले कैसर की तब उसने कहा जो कैसर का है कैसर को और जो खुदा का है खुदा को दो उन्होंने ये सुनकर ताज्जुब किया और उसे छोड़कर चले गए। एक दफ़ाअ उस के पास सदूकी लोग आए जो क्रियामत के मुन्किर थे उन्होंने उस के सामने वो सवाल किया जिसका जवाब कोई अहले शराअ ना दे सकता था और जिसके जवाब से अहले इस्लाम तो निहायत ही लाचार हैं वो सवाल वो है जिसका ज़िक्र मती 22:24 से 23 में है उन्होंने ने उसे कहा कि ऐ उस्ताद मूसा ने कहा है अगर कोई आदमी अपनी जोरु छोड़ के बेऔलाद मर जाये तो उस का भाई उस की जोरु से शादी कर लेता कि अपने मुतवफ़्फ़ी (फ़ौत हुआ) भाई के लिए औलाद जारी करे। अब हमारे दर्मियान सात भाई थे। पहला औरत छोड़कर मर गया दूसरे ने उस के साथ शादी की दूसरा भी मर गया तीसरे ने शादी की इसी तरह सातों की जोरु बन कर वो औरत भी मर गई पस क्रियामत में वो किस की जोरु होगी। उनकी गर्ज़ ये थी कि इन सातों का इस्तिहकाक (हक) उस औरत की निस्बत यकसाँ है कोई बात ऐसी नज़र नहीं आती जिससे एक दूसरे पर तर्जीह पा कर क्रियामत में इस को अपनी जोरु बनाए और इस क़बाहत (दुशवारी) के सबब उनको गुमान था कि क्रियामत भी ना होगी। मसीह ने उनको यूँ जवाब दिया कि क्रियामत में ना ब्याह करते ना ब्याहे जाते हैं बल्कि आस्मान पर खुदा के फ़रिश्तों की मानिंद रहते हैं। ये ऐसा जवाब है जिसको अक्ल भी कुबूल करती है क्योंकि वो जहान तनासुल जारी करने का नहीं है जो वहां औरत की ज़रूरत हो बल्कि वो जगह हकीकी आसाइश और तस्बीह व तहमीद की है। फिर मसीह

ने ये भी कहा कि तुम खुदा के नविशतों से नावाक़िफ़ हो इसलिए तुमको ये गुमान हुआ है कि वहां जोरु शौहर भी होंगे। देखिए कैसा आला जवाब है। फिर मसीह ने ये भी कहा कि तुमने नविशते में क्या ये नहीं पढ़ा जो खुदा तआला फ़रमाता है कि मैं अबराहाम का खुदा इज़हाक़ का खुदा याक़ूब का खुदा हूँ हालाँकि मुद्दत गुज़री कि अबराहाम और इज़हाक़ और याक़ूब सो गए हैं अगर क्रियामत नहीं है और रूहें मर कर मादूम (खत्म) हो जाती हैं तो ये अस्नाद (सबूत) कि मैं अबराहाम वगैरह का खुदा हूँ बातिल (झूट) हो जाता है। और तुम तौरैत को कलाम-उल्लाह मान कर उस को बातिल करते हो पस तुम खुदा के कलाम को नहीं समझते इसलिए क्रियामत के मुन्किर हो। लोग ये सुनकर उस की ताअलीम से दंग (हैरान) हुए और हकीकत में दंग होने की बात थी। कि उसने ऐसे उम्दा इलाही मज़मून का बयान किया। फिर लिखा है कि मसीह ने सबत के दिन कई एक काम किए जिस पर उलमा-ए-यहूद कुड़कुड़ाए (बुरा भला कहना) और कहने लगे कि ये आदमी सबत की इज़ज़त नहीं करता तौरैत के हुकम को नहीं मानता मगर मसीह ने जवाब दिया कि तुम इस हुकम का मतलब नहीं समझते हो इस का मतलब ये है कि तुम कोई दुनियावी काम सबत में नहीं कर सकते मगर नेक काम जो इबादत में शामिल है तुम कर सकते हो। दूसरी बात उस की उम्दा ताअलीम में ये है कि फ़ज़ाइल हमीदा (काबिल-ए-तारीफ़ खूबियां) यानी तवक्कुल कनाअत सब्र, बर्दाश्त, मुहब्बत खैर ख्वाही, रज़ा व तस्लीम वगैरह को जिनको सब लोग अक़लन व नक़लन अच्छा जानते हैं। और अक्सर मुअल्लिमों ने इनकी ताअलीम भी दी है इस खूबसूरती के साथ बयान किया है कि इनके दकायक खुफ़ीया (छुपे नुक्ते) और निकाले दकीका (गहरे मुआमले) और कैफ़ीयत गैर मफ़हूमा साफ़ तौर पर समझी जाती हैं जिससे मालूम होता है कि दूसरे मुअल्लिम इस गुलशन के इर्द-गिर्द फिरने वाले हैं उन्होंने इन मदरिज को अच्छी तरह दर्याफ़्त भी नहीं किया और ना इनकी तश्रीह कमा-हक्का उनसे हो सकी लेकिन मसीह ने ना सिर्फ़ इनकी तफ़सीर बतलाई बल्कि अमलन दिखला दिया और अपना ऐसा नमूना ज़ाहिर किया कि तमाम सालकीन (वो शख्स जो खुदा का कुर्ब भी चाहे और शुग़ल मआश भी रखता हो) उस का मुँह तकते रह गए अहले तसव्वुफ़ (सूफ़ी) जो इन उमूर में कामिलियत का दावा रखते हैं मसीह की तफ़सीर व तामील से दर्याफ़्त हुआ कि वो उनको समझते ही नहीं उसने सालकों (सालिक की जमा) को उनके सुलूक में आबिदों (इबादत करने वाले) को उनकी इबारत में ज़ाहिदों को उनके ज़ोहद में परहेज़गारों को उनके परहेज़ में। मुखय्यरों (खैरात करने वालों) को उनकी खैरात में। दुनियादारों को उनकी दुनियादारी

में। खानादारों को उनकी खाना-दारी में ऐसी उम्दा हिदायत की है कि सब इन्सानी व इलाही वाजिबात व फ़राइज़ ऐसे तौर पर अदा हो सकते हैं कि किसी का हक़ भी तलफ़ ना हो और इन्सान मक़बूल इलाही हो जाये। दूसरों की ताअलीम ऐसी जामेअ और मानेअ नहीं है। तीसरी बात ये है कि उस की ताअलीम जिस्म और रूह दोनों के वास्ते मुफ़ीद है इस तरह पर कि वो तमाम रूहानी अमराज़ मोहलिका की तश्रीह और दवा बतलाता हुआ इस तरह हिदायत करता है कि जिस्म भी तबअन बच जाये और गर्ज़ असली भी फ़ौत ना होने पाए जिससे मालूम होता है कि वो आलिमु-लग़ैब (ग़ैब का इल्म रखने वाले) की ताअलीम है जो हर बशर के हाल से वाक्फ़ हो कर उस का मुआलिजा (इलाज़) बताता है। यही वजह है कि उस के बयान को पाक रूहें ज़्यादा पसंद करती हैं और वो रूहें भी जो नफ़सानी ख्वाहिशों में दब कर मुर्दा सी हो गई हैं उस के कलाम से दर्जा बदर्जा ज़िंदगी हासिल करती हैं। चौथी बात ये है कि इन्सान जो बदी का खमीर आदम के सबब से अपने अंदर रखता है और बावजूद सख्त कोशिश और ऐसी उम्दा ताअलीम के फिर भी खता और ग़लती में गिर कर सज़ा का सज़ावार हो जाता है इस का तदारुक (ईलाज) भी उस की ताअलीम में ऐसा पाया जाता है कि किसी मुअल्लिम की ताअलीम में नज़र नहीं आता वो ये है कि वो हमारा कफ़ारा और गुनाहों का बदला भी है गर्ज़ कि हम उस की ताअलीम को और उस का दामन पकड़ कर किसी तरह डूब जाने का खौफ़ नहीं रखते हैं। पाँचवीं बात ये है कि उस की ताअलीम में तमाम अम्बिया-ए-साबक़ीन का नतीजा मुज़म्मिर (छिपा) है जिससे उस की सदाक़त और हकीक़त ज़ाहिर होती है और बहुत सी खुसूसीयतें हैं जो आम-फहम नहीं बल्कि गौरतलब हैं जिनकी गुंजाइश इन रिसालों में नहीं है इसलिए उन सबको इन्जील के पढ़ने पर मौकूफ़ रखकर हम यूं कहते हैं कि ऐ भाईयों दीने मसीही ज़रूर खुदा की तरफ़ से है हम आप साहिबान की ख़िदमत में अर्ज़ करते हैं कि आप गाफ़िल (लापर्वाह) ना रहें और इन सारी बातों की तहक़ीक़ कर लें वना खुदा की हुज्जत (दलील) तुम सब साहिबों पर तमाम हो चुकी है ऐसा ना हो कि मुफ़्त तुम्हारी जानें बर्बाद हो जाएं।

पाँच बातें हैं जो इन्सान को खुदा से नहीं मिलने देतीं। दुनिया की मुहब्बत, बेवकूफी, सुस्ती, गुरूर, और तास्सुब। आओ हम इन गंदी बातों को छोड़कर सच्चाई को तलाश करें झूटे मज़हबों और बातिल ख़यालों को तर्क कर के खुदा के दीन पर गौर करें। खुदा करे इस रिसाले के पढ़ने वाले और सब आदमी अपनी नजात का फ़िक़र कर के

मज़हबों का मुक़ाबला करें और उन बातों पर जो इस रिसाला में हैं ग़ौर कर के मक़सद असली को हासिल करें मसीह के वासिले से।

रिसाला हशतम (8)

मौत के बयान में

रिसालेजात गुज़श्ता में ख़ुदावन्द ईसा मसीह के फ़ज़ाइल और उस की हक़ीक़त पर कुछ इशारा किया गया है। अब हम उस की उम्दा ताअलीम में से बाअज़ ख़ास मज़मून बयान करना चाहते हैं ताकि नाज़रीन बनज़र इन्साफ़ देखें और ग़ौर करें कि ये मज़ामीन जिनको ख़ुदावन्द येसू मसीह ने अपनी ताअलीम में बयान फ़रमाया है इस बात पर साफ़ दलालत करते हैं कि उनका मुअल्लिम ज़रूर ख़ुदा-ए-बरतर है और ये मज़ामिन एक ऐसी खुसूसीयत अपने अंदर रखते हैं कि तालिब-ए-हक़ की रूह उनकी सदाक़त पर बेताम्मुल (बिला सोचे समझे) गवाही देती है। लेकिन वो शख़्स जिसने दीने मुहम्मदी यादें-हनूद वग़ैरह को ग़ौर से देखा हो और उनके दकायाक़ व निकात (पेचीदा निकात) में बखूबी ग़ौर की हो और दीनयात में फ़िक़र कर के तजुर्बेकार हो गया हो इन मज़ामीन मज़कूर बाइबल की बुलंदी और पाकीज़गी का हाल जल्द दर्याफ़्त कर के लुत्फ़ उठा सकता है। नाज़रीन के लिए बतौर नमूना चंद मज़मून कलाम-ए-इलाही के दीन-ए-मुहम्मदी से मुक़ाबला कर के दिखलाना चाहता हूँ।

पहला मज़मून

मौत के बयान में

हर एक आदमी जानता है कि ज़रूर एक रोज़ मौत आने वाली है और इस के बाद का अहवाल अक़ल से कोई दर्याफ़्त नहीं कर सकता कि क्या होगा और इस में तो शक़ नहीं है कि कुछ ना कुछ ज़रूर होगा अज़ाब या सवाब या कुछ नहीं मगर अक़ल-ए-इंसानी इन तीनों शक़कों (हिस्सों) में से किसी एक शक़ (हिस्सा) पर कामिल गवाही नहीं दे सकती अलबत्ता मज़हब की किताबों में इस का ज़िक़्र पाया जाता है और अपने-अपने

गुमान में हर एक आदमी ने मौत के तदारुक (ईलाज) के वास्ते किसी ना किसी मज्हब को इख्तियार किया है ताकि अंजाम बखैर हो जाये। हम ईसाई लोग तमाम अहले-मज्हब की खिदमत में अर्ज करते हैं कि हम सब लोगों की नीयत बखैर है इस बात से गर्ज नहीं कि किस मज्हब और किस आदमी और कौन सी बातों के वसीले से हमारा अंजाम बखैर हो सकता है। मक्सद ये है कि अंजाम बखैर हो। तो अब आओ हम सब के सब बहुत प्यार और उल्फत से अपने अपने खयालों का मुकाबला करें और सब मिलकर सोचें कि कौन से वसाइल अंजाम बखैर कर सकते हैं और कौन-कौन खयाल दुरुस्त और वाजिब मालूम होते हैं। अगर सब के सब बिला तरफ-दारी मकसूद-ए-असली को नज़र के सामने रखकर ये काम करें तो ज़रूर है कि हिदायत पाएं दुनिया के लोग तहकीकात के वक़्त मकसूद-ए-असली को छोड़कर और ग़ैर-मकसूद को पेश-ए-नज़र कर के गुमराही के गिर्दाब (पानी का चक्कर, भंवर) में जा हैं।

मौत का बयान जो मुहम्मद साहब ने किया है हम इस को काज़ी सना-उल्लाह साहब मर्हूम की किताब तज़किर-तुल-मौत से नक़ल करते हैं जो मुसलमानों में एक मोअतबार (काबिल-ए-एतबार) किताब समझी जाती है। और वो ये है, अहमद ने मुजाहिद से रिवायत की कि जब खुदा ने आदम को पैदा किया तो कहा *ابن الخراب دولد الموت* आबाद हो, खराब होने के वास्ते, बच्चे जने मौत के वास्ते। ये बिल्कुल ग़लत है क्योंकि खुदा किसी आदमी की मौत नहीं चाहता क्योंकि वो आदिल और मुंसिफ़ है ना उसने आदम को इसलिए पैदा किया कि वो मर जाये बल्कि आदम आप खताकार हो के मौत का सज़ावार हुआ।

ये हदीस का मज़मून कलामे इलाही के बरखिलाफ़ है। एक हदीस में है कि जब गुर (क़ब्र) में दफ़न किया जाता है। तो ज़मीन चार तरफ़ से सिरक कर उसे खूब ज़ोर से दबाती है। और उसे दुख देती है जिसको ज़फ़ता कहते हैं। साद बिन मुआज़ को जो बड़ा मुसलमान था और ज़ैनब वर्का और मुहम्मद साहब की लड़कीयों को ज़मीन ने दुख दिया था। क्योंकि हर मोमिन व काफ़िर को ये अज़ाब होता है ये बयान भी ग़लत है। क्योंकि जो लोग आग में जलाए जाते हैं या डूब मरते हैं या जिनको शेर खा जाता है उनकी निस्बत ये बयान सरीह ग़लत है। अता बिन यसार से रिवायत है कि मुहम्मद साहब ने कहा जब आदमी क़ब्र में जाता है तो उस के आमाल बशक़ल इन्सान आकर उस से मुलाक़ात करते हैं और क़ब्र में उस के हम-नशीन हो कर उस के साथ रहते हैं। और उस

से बातें किया करते हैं। मैं कहता हूँ कि गो आमाल इन्सान की रूह के लिए मुफ़ीद या मुज़िर हों लेकिन ये बयान कि वो आदमी बन कर क़ब्र में मुलाक़ात करें अक्लन व नक़लन तर्गीबन बातिल (झूट) है। अबु सईद मुहम्मद साहब से रिवायत करता है कि जब नेक आदमी दफ़न होता है तो क़ब्र कहती है। शाबाश मर्हबा ख़ूब आया कल तक तू मुझ पर चला करता था आज मैं तुझ पर हूँ। देख मैं तेरे साथ क्या सुलूक करती हूँ। फिर खुद बख़ुद बड़ी चौड़ी हो जाती है और बहिश्त का एक दरवाज़ा खुल जाता है और वहां से इस को हवा आती है।

जब काफ़िर दफ़न होता है तो कहती है बुरा आया तो फिर इस पर तंग हो कर उसे दबाती है। ऐसा कि उस की सब हड्डियां टूट जाती हैं और सत्तर साँप ऐसे ज़हरीले कि अगर एक साँप फूँकार मारे तो सारी ज़मीन पर कभी कुछ सब्ज़ी पैदा ना हो उस के काटने को बैठ जाते हैं। भला कोई पूछे तो कि जब रूह बदन से निकल गई और आलम-ए-अर्वाह में जा पहुंची फिर बदन को जो बिल्कुल ख़ाक है साँप के काटने से क्या ज़रर (नुक़सान) है। कोई दाना आदमी इस मज़मून को कभी कुबूल ना करेगा और साफ़ जान लेगा कि झूटा ख़ौफ़ दिलाया जाता है। बरा इब्ने आज़िब की एक बड़ी सी रिवायत में ये भी लिखा है कि क़ब्र में फ़रिश्ते आकर मुर्दे को बिठाते हैं और कहते हैं, कि तेरा ख़ुदा कौन है अगर सही जवाब दिया तो बहुत वर्ना लोहे की मोगरी (कूटने का आला) से मारते हैं। फिर कहते हैं तेरा रसूल कौन है अगर मुहम्मद साहब का नाम लिया तो बेहतर वर्ना उसी मोगरी से उस का सर तोड़ डालते हैं। फिर कहते हैं तेरा ईमान किस किताब पर है अगर कुरआन का नाम लिया तो बेहतर वर्ना वही मार पड़ती है जब मुर्दा दफ़न किया जाता है। उसी वक़्त ये धींगा मुश्ती (हाथा पाई) शुरू हो जाती है।

यही वजह है कि अक्सर देखने में आता है कि जब एक शख्स को दफ़न कर के चले जाते हैं। तो एक शख्स क़ब्र पर अकेला बाकी रह जाता है ताकि चंद बार अज़ान देने से शख्स मदफ़ून की मदद करे। भला कौन अक्लमंद इन बातों को बावर (यक़ीन, एतिमाद) कर सकता है। अम्मार बिन हरम कहता है कि मुहम्मद साहब ने फ़रमाया कि क़ब्र से नीचे उतर क्योंकि मुर्दे को तकलीफ़ होती है। बाअज़ हदीसों से ज़ाहिर है कि मक़बरों में बोल व बराज़ ना करना चाहिए क्योंकि मुर्दे तकलीफ़ पाते हैं। ऐसी ऐसी सदहा बातें हैं जो मुहम्मद साहब की ताअलीम से अहले इस्लाम में जारी हैं। लेकिन इन पर गौर करने से मालूम होता है, कि मुहम्मद साहब ने लोगों को जिस्मानी मौत के बातिल

खौफ़ से डराया है। अगर वो मौत की कैफ़ीयत से वाक़िफ़ होते तो ऐसे मज़मून जो सरीह बातिल (साफ़ झूट) हैं। जिनको हरगिज़ कोई दाना आदमी कुबूल नहीं कर सकता बयान ना करते। और ये भी ज़ाहिर है कि जिस शख्स ने ऐसे-ऐसे ग़लत मज़मून अपनी उम्मत को सिखाए ज़रूर उसने और मज़मून भी जो बाइबल के बरखिलाफ़ सिखलाए हैं सही ना होंगे। अब देखना चाहिए कि कलामे इलाही मौत का हाल क्या कुछ बयान करता है।

जिस्मानी मौत का बयान

पैदाइश 3:19 में है तू खाक है और फिर खाक में जाएगा। मगर पैदाइश 2:17 से ज़ाहिर है कि ये मौत उस गुनाह का नतीजा है जो आदम से सरज़द हुआ। ये मौत हर आदमी पर इसी आदम की ग़लती के बाइस वारिद हो गई है। वाइज़ 8:8 में है किसी आदमी को रूह पर इक़्तिदार नहीं कि उसे पकड़ रखे और मरने के दिन उस का कुछ बस नहीं। ये मौत खुदा के हुक्म और कब्ज़े कुद्रत में है। इस्तिस्ना 22:29 में है कि मैं ही मारता हूँ और मैं ही जिलाता (ज़िंदा करता) हूँ। जब ये मौत आती है तो तमाम दुनियावी मंसूबे बातिल हो जाते हैं। वाइज़ 9:10 में है कि जो काम तेरे हाथ करने पाए उसी को अपने मक्दूर (ताक़त) भर कर क्योंकि वहां गुर (क़ब्र) में जहां तू जाता है ना काम ना मन्सूबा ना आगाही ना हिक्मत है। अय्यूब 1:21 में है कि अपनी माँ के पेट से मैं नंगा निकल आया और फिर नंगा वहां जाऊँगा। खुदावन्द ने दिया और खुदावन्द ने लिया खुदा का नाम मुबारक हो। ये मौत सबको बराबर कर है।

अय्यूब 3:19 में है कि छोटे बड़े वहां एक साथ हैं और गुलाम अपने आका से आज़ाद है एक दिन ऐसा आएगा। कि इस मौत से सब के सब मखलिसी (छुटकारा) पाएँगे। और फिर कभी इस मौत से ना मरेंगे। अगरचे बाअज़ के लिए एक मौत तैयार है लेकिन ये आमाल 24:15 में है कि और खुदा से उसी बात की उम्मीद रखता हूँ जिसके वो खुद भी मुंतज़िर हैं कि रास्तबाज़ों और नारास्तों दोनों की क्रियामत होगी। और इस मौत से हम जब मखलिसी (छुटकारा) पाएँगे। तो फिर कभी ना मरेंगे। लूका 20:36 में है, क्योंकि वो फिर मरने के भी नहीं इसलिए कि फ़रिश्तों के बराबर होंगे। और क्रियामत के फ़र्ज़न्द हो कर खुदा के भी फ़र्ज़न्द होंगे। इस जिस्मानी मौत को भी खुदावन्द येसू मसीह ने मग़्लूब (हराया) कर के दिखलाया। क्योंकि वो मुर्दा में जी उठा और मौत के कब्ज़े में ना रहा और आखिरुल-अम्र हमें भी वही उस के पंजे से मखलिसी (छुटकारा) देगा।

होसेअ 13:14 में है कि पाताल के काबू से फ़िदया में लूंगा। मैं उन्हें मौत से छुड़ाऊंगा। ऐ मौत तेरी मरी (वबा) कहाँ है ऐ पाताल तेरी हलाकत कहाँ। इन पाक बयानों से ये बात ज़ाहिर है, कि ये जिस्मानी मौत जिसका आना ज़रूरी है कुछ खौफ़ और अंदेशे की मौत नहीं क्योंकि ये एक तरह का इंतिकाल मकान है। अगरचे इस के बाइस हम बदन को छोड़कर एक पर्दे में हो जाते हैं तो भी ख्वाह हम भले हों या बुरे इस के नीचे से ज़रूर मख़िलसी (रिहाई) पा कर उठ खड़े होंगे और ये भी ज़ाहिर है कि इन बयानों में ना झूटी तर्गीब (आमादा करना, लालच दिलाना) है ना बनावट ना मुबालगा (बढ़ा-चढ़ा) कर बयान करना बल्कि वाकई अम्र है।

अलबत्ता ये ज़रूर है कि इस मौत को याद कर के अपने फ़राइज़ और वाजिबात को अदा कर के कुच (रवानगी) के मुंतज़िर रहें। ख़ुदावन्द ईसा मसीह जो मौत पर ग़ालिब आया है। उस के वसीले से बाअज़ आदमी इस मौत से भी मख़िलसी पाएँगे। यानी उस को भी ना देखेंगे। यानी वो लोग कि जिनके ज़माने में वो आस्मान से आ जाएगा। सिर्फ़ उनके जिस्म तब्दील हो जाएँगे। क्योंकि फ़ानी और गुनेहगार जिस्म का बर्बाद होना ज़रूर है। इसलिए ये तब्दीली भी एक तरह का इंतिकाल है और इसी इंतिकाल (एक जगह से दूसरी जगह मुंतक़िल होना) का नाम जिस्मानी मौत है। ये जवाब है उन लोगों के लिए जो कहते हैं कि इल्य़ास (एलियाह) और हनोक क्यों ना मरे और क्यों वो ज़िंदा आस्मान पर उठाए गए।

पस जानना चाहिए कि वो लोग अगरचे मौत मुतआरिफ़ा (ज़ाहिरी मौत) से बच गए पर तब्दील जिस्म उनके लिए भी ज़रूर है। क्योंकि नापाक और खाकी जिस्म ख़ुदा के सामने खड़ा होने के लायक नहीं है। यसअयाह 6:5 में लिखा है कि तब मैं बोल उठा कि हाय (अफ़सोस) मुझ पर मैं तो बर्बाद हुआ कि मैं नापाक हॉट वाला आदमी हूँ। और नजिस लब (नापाक हॉट) लोगों के दर्मियान बस्ता हूँ। क्योंकि मेरी आँखों ने रब-उल-अफ़वाज को देखा। उस दम एक उन सराफ़ीम (फ़रिशते) में से एक सुलगता हुआ कोयला जो उसने दस्त पनाह से मज़बह पर से उठा लिया अपने हाथ में ले के मेरे पास उड़ा। और उसने मेरे मुँह को छुवा और कहा कि देख उसने तेरे लबों को छुवा सो तेरा गुनाह दफ़ाअ हुआ। कि मज़बह की आग से जो मसीह की कुर्बानी का निशान है। यसअयाह को पाक कर के सामने खड़े रहने के लायक बनाया।

ऐसे बयानों से ज़ाहिर है कि जब तक इन्सान के गुनाह दफ़ाअ ना हों और जब तक वो अपने गुनाहों को धो ना डाले दरगाह (बारगाहे) इलाही में रसाई नहीं हो सकती। अब अगरचे इल्यास (एलियाह) व हनोक ने जिस्मानी मौत को ना देखा तो क्या हुआ मौत की गर्ज और मुराद पूरी हो गई। जैसे कि अब मसीह की आमद सानी में उन ईसाईयों से जो उस वक़्त ज़िंदा होंगे। मौत की मुराद पूरी की जाएगी। यानी मौत के सबब को दूर करना या गुनाह के ज़हर को धो डालना और जब किसी के जिस्म से गुनाह दफ़ाअ हुए तो अब वो शख्स नए जिस्म में है। पस उसने बड़े आराम के साथ इंतिकाल मकान किया। या मआनन जिस्मानी मौत को देखा यहां से साबित है कि हर आदमी जिस्मानी मौत को देखेगा। उस का आना ज़रूर है और जो ज़रूरी अम्र है इस से डरना और डराना नादानी है। क्योंकि इस का दफ़ाअ करना मुम्किन नहीं। हाँ एक और मौत है। जिससे खौफ़ करना निहायत ज़रूर है और जिस्मानी आदमी इस को नहीं जानते हम लोग जो ईसाई हो जाते हैं। और जाहिलों की तरह तरह की लअन तअन सह लेते हैं। इसी मौत से डर कर ईसा मसीह के पास पनाह लेते हैं क्योंकि उस के सिवा कोई नहीं। जो हमें इस बड़ी मौत से बचाए। बहुत से लोग इस मौत से नावाक़िफ़ जिस्मानी मौत पर आह किया करते हैं। और क़ब्रों और जनाज़ों और वीरान मकानों और क़दीम आसारों को देखकर अफ़सोस करते हैं। और कहते हैं कि एक दिन हमें भी इस जहान को छोड़ना है उनको खयाल करना चाहिए, कि इस तरह के अफ़सोस जो दीन-ए-मोहम्मदी वगैरह में आदात-ए-महमूदा (काबिले तारीफ़ आदतें) खयाल किए गए हैं, निहायत मकरूह बात है। क्योंकि ये जहान जिस पर खुदा की लानत पड़ी जो शैतान का घर है जिसकी हर चीज़ फ़ानी और बेवफ़ा जिसमें हर तरह के दुख हमारे लिए तैयार हैं। अगर हम इस को छोड़ दें तो खुशी की बात है। ना अफ़सोस की अलबत्ता उनके लिए अफ़सोस की बात है जिनके दिलों में इस जहान की मुहब्बत ज़ोर मार रही है। पस इस मौत से जो जिस्मानी है हरगिज़ खौफ़ ना करना चाहिए। बल्कि इस मौत को जो जी उठने के बाद आने वाली है और जिसका तदारुक (इंतिज़ाम, दुरुस्ती) भी मुम्किन है। क्योंकि वो बला जिसका दफ़ाअ करना मुम्किन था अगर हमारी ग़फ़लत से हम पर आ जाए तो बड़े अफ़सोस की बात है। खासकर ऐसी बला जिसका अंजाम नहीं यानी ना तमाम है।

पस ऐ भाइयो। आओ और खुदा के कलाम में इस मौत का हाल और तदारुक दर्याफ़्त कर के सई (कोशिश) करें कि वो मौत हम पर ना आ पड़े।

दूसरी मौत

इस के बहुत से नाम कलाम-उल्लाह में मुन्दरज हैं। और शरह बयान इस का खुदा ने अपने कलाम में इसलिए किया है कि उस रोज़ लोग यूँ ना कहें, कि हम इस से नावाक़िफ़ थे।

पहला नाम : खुदा के चेहरे की सज़ा। (2 थिस्सलुनीकियों 1:9) में है कि वो खुदावन्द के चेहरे और उस की कुदरत के जलाल से दूर हो कर अबदी हलाकत की सज़ा पाएँगे।

दूसरा नाम : शैतानी मुसाहबत (साथ रहना) मत्ती 25:41 में है कि फिर वो बाएं तरफ़ वालों से कहेगा, ऐ लानतियों ! मेरे सामने से इस हमेशा की आग में चले जाओ जो इब्लीस और उस के फ़रिश्तों के लिए तैयार की है।

तीसरा नाम : आग की झील। (मुकाशफ़ा 19:20) में है कि और वो हैवान और उस के साथ वो झूटा नबी पकड़ा गया। जिसने उस के साथ ऐसे निशान दिखाए थे। जिससे उसने हैवान की छाप लेने वालों और उस के बुत की परस्तिश करने वालों को गुमराह किया था। वो दोनों आग की उस झील में ज़िंदा डाले गए जो गंधक से जलती है। और 21:8 में है कि ये दूसरी मौत है।

चौथा नाम : हमेशा का कीड़ा। (मर्कुस 9:44) में है कि जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।

पांचवां नाम : बाहर का अंधेरा। (मत्ती 25:30) में है कि इस निकम्मे नौकर को बाहर अंधेरे में डाल दो।

छटा नाम : हमेशा का अंधेरा। (2 पतरस 2:17) में है कि उनके लिए हमेशा की तारीकी की स्याही धरी है। क़हर ग़ज़ब मुसीबत और तंगी भी इसी का नाम है। रोमीयों 2:9) में है कि और मुसीबत और तंगी हर एक बदकारी जान पर आएगी। आने वाला ग़ज़ब भी इसी का नाम है।

(1 थिस्सलुनीकियों 1:10) में है कि येसू ने जो हमें आने वाले ग़ज़ब से छुड़ाया है।

सज़ा की क्रियामत। (यूहन्ना 29) में है कि जिन्होंने ने बदी की है सज़ा की क्रियामत के लिए निकलेंगे।

शर्मिंदगी की क्रियामत। (दानीएल 12:2) में है कि जाग उठेंगे बाअज़ हयात-ए-अबदी के लिए और बाज़ अबदी रुस्वाई यानी ज़िल्लते अबदी के लिए यानी जहन्नम के अज़ाब के लिए।

(मती 23:33) में है कि ऐ साँप के बच्चो तुम जहन्नम के अज़ाब से क्योंकर बचोगे? ऐसे ऐसे बहुत से नाम इस मौत के हैं जो उस की सिफ़्तों को ज़ाहिर करते हैं। इस अम्र में मुहम्मदी बयान बेजा, तहरीफ़ (तब्दीली) और दहशत ज़ाहिर करता है मगर कलाम इलाही इस का हकीकी बयान कर के नफ़स-उल-अम्र (हकीकत) पर रहनुमाई करता है।

अब कई अम्र दर्याफ़्त के लायक़ हैं।

अव्वल ये कि इस मौत का यकीन हमें क्योंकर हुआ कि ज़रूर आने वाली है? वाज़ेह हो कि जब आदमी इस बात पर खयाल करे कि खुदा ज़रूर आदिल और मुंसिफ़ है। तो अक्ल चाहती है कि जो लोग उस की रहमत से दूर जा पड़े अलबत्ता उनके लिए ऐसी सज़ा चाहिए।

दूसरी ये बात है कि कलामे इलाही जो अपनी सदाक़त (सच्चाई) बहुत बातों में ज़ाहिर कर चुका है। इसलिए ये बयान भी इस का ज़रूर सच्चा है। देखो कलाम-उल्लाह में सदहा पेशीन गोईयाँ मज़कूर हैं। जो अपने मौक़े पर पूरी हो गईं और होती जाती हैं। जिससे कलाम की मोअतबरी (काबिल-ए-एतबार) साबित हो गई। इस के सिवा जिनके ज़रीये से वो कलाम हमें इनायत हुआ है। वो लोग भी उसी ख़ालिक़ की कुद्रत से साहिबे एतबार साबित हो गए हैं इसलिए ज़रूर ये बयान उनके रास्त और दुरुस्त हैं। और ये बात भी याद रखना चाहिए कि इस दूसरी मौत का मुकाबला इन्सान के अंजाम से इलाका रखता है और अंजाम आदमी के सिवा खुदा-ए-कादिर के कोई नहीं जान सकता।

इस की कैफ़ीयत दर्याफ़्त करना अक़ल से बाहर है पस इस की तहकीक़ अक़ल से बल्कि उसी के कलाम से करनी ज़रूर है। हाँ अक़ल ये कहती है कि कुछ ना कुछ इन्सान का अंजाम होना चाहिए। और ये भी कहती है कि बदी का अंजाम बद होना चाहिए। पस जहां तक अक़ल की रसाई हुई वहां तक अक़ल से और जहां अक़ल लाचार हो वहां पर कलामे इलाही की हिदायत से इस मौत का यकीन हमारे दिलों में पैदा हुआ है। देखो दुनिया में हम हर एक आने वाली मुसीबत का यकीन मोअजिज़ों और अलामात से दर्याफ़्त करते हैं। इसी तरह इस मौते सानी (दूसरी मौत) का हाल हमने निहायत बड़े मोअतबर मोअजिज़ों से जिनके बराबर कोई भी सच्चा और मोअतबर जहान में ज़ाहिर नहीं हुआ। सुना है और इस के आने की अलामात भी हमने अक़ल की आँख से देखी हैं। इसलिए हम यकीन रखते हैं कि बेशक ये मौत बदकारों पर आएगी।

दुवम ये कि इस के आने का क्या सबब है कलाम-उल्लाह से ज़ाहिर है, कि ये मौत गुनाह का नतीजा है। रोमीयों 6:23 में है कि गुनाह की मज़दूरी मौत है। याकूब 1:15 में है कि ख्वाहिश हामिला हो के गुनाह पैदा करती है। और गुनाह जब इतिहा तक पहुंचता है तो मौत को जनता है। हम सब आदमी मौरूसी गुनाह में फंसे हुए हैं। आदम की खता (गलती) के बाइस सब गुनेहगार हैं। और गुनाह इक़तिसाबी (ज़ाती मेहनत से हासिल) करना भी हम में भरे हुए हैं। इसलिए हम बड़े खौफ़ के मुक़ाम में हैं। क्योंकि इस आइन्दा मौत का सबब हम में मौजूद है। इस के सिवा ये बात है कि अगर हम अपने आमाल पर तकिया कर के इस मौत से बचना चाहें तो बादियुन्नज़र (सरसरी नज़र) में ये राह मखलिसी (छुटकारे) की दिखाई देती है।

मगर अम्साल 14:13 में यूं मज़कूर है कि एक राह है जो इन्सान को सीधी दिखलाई देती है। पर उस के इतिहा में मौत की राहें हैं। रोमी 6:21 में है कि पस तुमने उन कामों से जिनसे अब शर्मिदा हो क्या फल पाया। क्योंकि इनका अंजाम मौत है। देखो भाइयो आदमी कैसी ग़लती में फंसे हुए हैं अपने आमाल पर भरोसा कर के खुदा के ग़ज़ब से बचना चाहते हैं। अगरचे हम कैसे ही अच्छे काम करें तो भी हमारे ज़ईफ़ (कमज़ोर) काम खुदा के क़वी (ज़ोर-आवर) काम का मुबादला व मुक़ाबला नहीं कर सकते। यहां से ज़ाहिर है आने वाली मौत के दो सबब हैं गुनाह और आमाल पर भरोसा रखना सो दोनों सबब इन्सान में मौजूद हैं।

सोड़म ये कि ये मौत किस के वसीले और किस के हाथ से दी जाएगी। खुदा के कलाम में लिखा है कि खुदावन्द ईसा मसीह जिसका इख्तियार कुल आस्मान व ज़मीन पर है। जो हर ईमानदार को नजात बख़्शता है उसी के हाथ से ये मौत गुनेहगार बदकारों बेईमानों को दी जाएगी। मती 25:3 है कि जब इब्ने आदम अपने जलाल में आएगा और सब फ़रिश्ते उस के साथ आएँगे। तो उस वक़्त वो अपने जलाल के तख़्त पर बैठेगा। आयत 41 में है कि फिर वो बाएं तरफ़ वालों से कहेगा, ऐ मलऊनो (लानतियों) मेरे सामने से इस हमेशा की आग में चले जाओ। जो इब्लीस और उस के फ़रिश्तों के लिए तैयार की गई है। 2 थिसलिनिकियो 1:6 में है कि उस वक़्त जब कि खुदावन्द येसू अपने क़वी फ़रिश्तों के साथ भड़कती हुई आग में आस्मान से ज़ाहिर होगा। और जो खुदा को नहीं पहचानते और हमारे खुदावन्द येसू की खुशख़बरी को नहीं मानते उनसे बदला लेगा। कि वो खुदावन्द के चेहरे से और उस की कुद्रत के जलाल से दूर हो के अबदी हलाकत की सज़ा पाएँगे।

बात ये है कि हम क्योँकर इस मौत से मख़लिसी पाएँगे। अगर आदमी इस मौत से बचना चाहे तो उस को लाज़िम है कि खुदावन्द ईसा मसीह पर ईमान लाए। बग़ैर इस ईमान के किसी तरह ख़लासी (रिहाई) नहीं हो सकती। यूहन्ना 3:16 में है कि खुदा ने जहान को ऐसा प्यार किया कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़्शा। ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िंदगी पाए। यूहन्ना 4:9 में है कि खुदा की मुहब्बत जो हमसे है इस से ज़ाहिर हुई कि खुदा ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा ताकि हम उस के वसीले से ज़िंदगी पाएं। यूहन्ना 11:25 में है कि येसू ने उस से कहा कि क्रियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ जो मुझ पर ईमान लाता है। गो वो मर जाये तो भी ज़िंदा रहेगा।

अगले रसूलों के नविशते अगर कोई आदमी गौर से पढ़े तो उसे मालूम हो जाएगा, कि यही खुदावन्द येसू मसीह नजातदिहंदा और भरोसे के लायक़ है। उसी पर ईमान लाकर सब मुक़द्दस जन्नत के वारिस हुए हैं। पस उसी पर ईमान लाना इस मौत से बचाता है।

आइंदा रिसाले में ईमान का कुछ अहवाल नाज़रीन पर रोशन हो जाएगा, कि ये ईमान कैसा क़वी और पाक हकीक़ी ईमान है। और सिर्फ़ यही नजात की जड़ है। आमाले

हसना (नेक काम) इस का समरा (फल, फायदा) है ना नजात का सबब बल्कि बाइसे ज़ीनत (ख़ूबसूरती, सजावट) है। यानी आमाल नेक से हमारी ख़ूबसूरती और खुदा की बुजुर्गी ज़ाहिर होती है अगर वह मसीही ईमान का समरा (फल) हो वर्ना सब हीच (नाकारा) हैं। मौते अक्वल और मौते दोम का मुख्तसर ज़िक्र सुनने से कई बातें गौर व तलब हैं।

अक्वल ये कि जिस्मानी मौत अबदी नहीं है इस के अंजाम में सज़ा या जज़ा के लिए फिर ज़िंदगी है। इतनी तकलीफ़ है कि इस खाकी खेमे को छोड़ना पड़ेगा। लेकिन हकीकत में तकलीफ़ नहीं बल्कि राहत (आराम) है। क्योंकि तरह तरह की तकालीफ़ और मसाइब से इस मौत के वसीले से हम रिहाई पाते हैं। पस दुनिया के मदरिसे से जिसमें ताअलीम और इम्तिहान के लिए भेजे गए हैं वही रुख्सत का वक़्त है इस मौत को याद करके हमें शौक और चुसती पैदा होना चाहिए, कि हम बहुत जल्द इस मदरिसे में ताअलीम पा कर और फ़ज़ीलत हासिल कर के वो नेक-नामी का सर्तीफ़िकेट हासिल करें। जिससे हम अपने हकीकी वतन में जा कर अच्छा ओहदा पाएं। लेकिन छुट्टी के वक़्त के मुंतज़िर रहें ऐसा ना हो कि रुख्सत का वक़्त आ जाए और हम वही जाहिल के जाहिल बदनामी की छुट्टी लेकर यहां से निकलेन। और छुट्टी में तमाम-तर ठोकर खाते दुख उठाते फिरें।

पस जो कोई इस जिस्मानी मौत में सिवाए ऐसे फ़ाइदों और नुक़सान के और तरह की तकालीफ़ बयान करे और क़ब्र के बिच्छू साँप वगैरह से डराए वो मुअल्लिम खुदा के भेदों से नावाक़िफ़ और खुद ताअलीम पाने के लायक़ है। दूसरी मौत पर फ़िक्र करने से ये नताइज निकलते हैं कि बेशक़ वो ख़ौफ़ के लायक़ है। इसलिए कि अबदी है और इस में इन्सान मादूम (नाबूद, नेस्त) किया गया नहीं बल्कि मौजूद रह कर बराबर दुख में फंसा रहता है। और वहां जा कर फिर कोई शख्स इस से छूट नहीं सकता है।

इस के सिवा वो ऐसी मौत है कि इस का तदारुक (ईलाज) भी हम कर सकते हैं। अगर हमारी ग़फ़लत (ग़लती, लापरवाही) से वो मौत हम पर आ जाए। तो इलावा इस की तकलीफ़ के कितनी पशेमानी (शर्मिंदगी) हमको उठानी पड़ेगी। फिर हम अपनी तदबीर और सारी अक्ल और होशयारी को लेकर क्या खुश होंगे। दुनियावी इल्म और सारे शान व शौक़त और माल व मताअ (पूँजी, असासा) औलाद और रिश्तेदार और दुनिया की

इज्जत हमारे किस काम आयेंगी। हमारा इल्म जहल और हमारी अक्ल बेवकूफी से तब्दील हो जाएँगी। दुनिया पर फ़रेफ़ता (फ़िदा, आशिक) हो कर लड़कों कैसी तार गा रहे हैं खुदा की हिक्मत उन्हें पुकारती है और वो नहीं सुनते नूह पैगम्बर ने दुनिया के लोगों को बहुत समझाया लेकिन इस मेय मदमस्ती (शहवत परस्ती) में उसकी ना सुनी आखिर सब बर्बाद हो गए। लूत ने सदोम और अमोरह के लोगों को बदी से कैसे मना किया लेकिन उन्होंने नहीं माना और तबाह हुए।

ये कैसे नमूने हमारे सामने मौजूद हैं। इब्तदा-ए-दुनिया से इस मौत का चर्चा रसूलों ने दुनिया में किया है। इसी तरह ये भी एक दिन आ जाएगी क्या हम इस का बंदो बस्त बहुत जल्द इसी जहान में ना करें। और ये भी याद रखना चाहिए, कि जीते-जी जिसकी तसल्ली इस जहान में इस मौत से नहीं हुई उस का अंजाम हरगिज़ भला ना होगा सब झूटे मज़हब वालों की रूह या तो फ़रेब खा कर या सिर्फ इस उम्मीद से कि शायद बख़शा जाऊँगा। बे तसल्ली इस जहान से निकल जाती है। हमारा खुदावन्द येसू मसीह और मुर्शिदों के मानिंद सिर्फ़ झूटी तसल्ली नहीं देता है। बल्कि सच्ची और आस्मानी तसल्ली जिस की कैफ़ीयत हम बयान नहीं कर सकते रूह को इनायत (अता करना, बख़शना) फरमाता है।

हाँ इस की बाबत इतना कह सकते हैं कि वो पाक आराम और वो हकीकी खुशी खास मुनासबत से एक पाक रूह को देकर रहमते इलाही के साये में कर देता है। इस वक़्त ख़ौफ़ और तरदुद (सोच, फ़िक्र) गम और सुस्ती रूह से यकलख़्त दूर हो जाती हैं। और रूह देखती है कि पहले मैं किसी बोझ के तले दबी हुई थी। और मुर्दा पड़ी थी। लेकिन अब ज़िंदा और बहाल हो कर हकीकी हिमायती के साथ राहत की सवारी में उड़ती हुई आस्मान की तरफ़ चली जाती हूँ। और अपने हिमायती की दस्त-गीरी (मदद, हिमायत) से मैदान में कूद कर मुश्किलात के पहाड़ों को हँसती हुई ठोकर से उड़ाती है अगरचे मुहालिफ़ों के मुहासिरे में (अपने) आपको देखती है पर नहीं घबराती बल्कि बड़ी भारी फ़ल्ह की उम्मीद में शुक्रगुज़ारी और सताइश के मज़मून दुआओं में लपेटे हुए आस्मान को उड़ाती है और जब पीछे मुड़ कर देखती है कि मसीह मुझे कहाँ से निकाल लाया तो अपनी पहली हालत को देखकर काँप उठती है पास ऐ मेरे भाइयो हम तुम्हें भी इतिला देते हैं कि खुदावन्द ईसा मसीह के पास जीने आओ तुम्हें उस हमेशा की मौत से कामिल मख़लिसी (छुटकारा) इनायत करता है आइंदा तुम्हें इख़्तियार है फ़क़त।

रिसाला नहम (9)

ईमान के बयान में

गुजश्ता रसाइल में खुदावन्द येसू मसीह का कुछ हाल बयान हुआ और इस बात का भी जिक्र हुआ कि येसू मसीह पर जब तक कोई शख्स ईमान ना लाए। उस वक़्त तक हरगिज़ नजात नहीं पा सकता है। अब इस अम्र का जिक्र ज़रूर है कि ईमान क्या चीज़ है और क्योंकर हो सकता है। इस से पहले ये जानना चाहिए कि ईमान खुदा और इन्सान के दर्मियान सुलह का बाइस है। यानी बग़ैर ईमान के खुदा के साथ सुलह नहीं हो सकती। इस की तौज़ीह (वाज़ेह करना) यूँ है कि जिस शख्स में ईमान नहीं वो बेशक खुदा का दुश्मन और उस के क्रहर के मातहत (नीचे) है। क्योंकि अदम ईमान ऐन मुखालिफ़त है और गोया खुदा की खुदाई और उस का बंदा होने का सरीह (साफ़) इन्कार है। और जो शख्स अपनी अबूदीयत (बंदगी) और उस की उल्हियत (खुदाई) का मुन्किर है। ख्वाह उम्दन (जानबूझ कर) ख्वाह जहालतन किसी सूरत से हो वो हर तरह खुदा का मुखालिफ़ और दुश्मन है।

इस के सिवा आदमे अक्वल की खता के सबब हर इन्सान खुदा के ग़ज़ब के मातहत है। जिसका जिक्र हो चुका इसलिए ज़रूर है कि हम किसी तरह अपने खालिक व मालिक से मेल और सुलह पैदा कर लें। क्योंकि ये बात बग़ैर ईमान के दूसरी चीज़ से हासिल नहीं हो सकती। इसलिए ईमान की तलाश हर फ़र्द बशर पर वाजिब और लाज़िम है। ईमान के आम मअनी ये हैं कि किसी ख़ास मज़्मून या ख़ास अक़ीदे का दिल में यक़ीन और ज़बान में इक़्रार करना। मगर ईमान हक़ीक़ी के ये मअनी नहीं हैं उस के कुछ और ही मअनी हैं जो ज़ेल में आए हैं। ईमान के आम मअनी की रु से इस जहान में देखो। कि किस क़द्र अलैहदा-अलैहदा (अलग-अलग) ईमान हैं जो मुर्व्वज (रिवाज) हो रहे हैं। चुनान्चे हिंदूओं का एक जुदा ईमान है जिसका एक बड़ा हिस्सा इस वक़्त ये भी है कि ग़ैर-अक़्वाम के हाथ से ना खाना और अपनी ज़ात की हिफ़ाज़त ज़्यादातर करना मुसलमानों का ये ईमान है, कि मुहम्मद साहब की नबुव्वत का यक़ीन और इक़्रार करना और खुदा को वाहिद जानना।

इसी तरह हर एक मज़हब का जुदा-जुदा ईमान है और अहल-ए-अक़ल के सदहा किस्म के अकाइद मुख्तलिफ़ गोया उनके मुख्तलिफ़ ईमान हैं। इनके सिवा बाअज़ लोग इस मुल्क में ऐसे ही हैं कि कुछ तो इल्म की रोशनी के सबब से और दीने हनूद और दीने इस्लाम के बे-बुनियाद होने के बाइस अपने-अपने दीन से नाराज़ हैं। लेकिन ईसाई मज़हब को तो शर्म के मारे या दुनियावी तकालीफ़ के बाइस कुबूल करने की जुआत नहीं करते। या इसलिए कि मज़हब ईस्वी पर भी उनके कुछ एतराज़ात हैं और तुनदही (तंग-नज़री) से इस का तस्फ़ीया (फ़ैसला, सुलह) नहीं कर सकते हैं। और अपने ज़हन में दबाए बैठे हैं ऐसे लोगों ने भी जुदा-जुदा खयालात पैदा कर के उनको अपना अपना ईमान करार दे लिया है।

यही वजह है कि इन तरह-तरह ईमान और अकाइद को देखकर इन्सान घबरा जाता है। लाज़िम ये है कि इन तमाम मुरवज्जह अकाइद की छानबीन करे। और जो ईमान बाइस-ए-नजात हो उस को कुबूल करे। इसलिए अब मैं ईमाने हकीकी की बाबत कुछ अर्ज़ करना चाहता हूँ वाज़ेह हो कि ये बात तो साबित हो चुकी है कि खुदा तआला ने इस ज़मीन पर लोगों को ज़रूर इल्हाम दिया है यानी कुतुबे इल्हामियाह ज़मीन पर मौजूद हैं। जिसका ज़िक्र मुख्तसर बंदे ने हिदायत-उल-मुस्लिमीन के बाब अक्वल में भी लिखा है।

पस जब कि कलामे इलाही ज़मीन पर आ चुका तो अब हमें क्या हाजत (ज़रूरत) है, कि आदमीयों के बताए हुए ईमान को कुबूल कर के हमेशा के अज़ाब में गिरफ़्तार हों। हमें ज़रूर है कि उस ईमान को जो खुदा-ए-क्वदिर के कलाम में मज़कूर है हासिल करें। क्योंकि इस ईमान के सामने जहान के ईमान और इन अकाइद के सामने तमाम जहान के अकाइद हीच और नाकाबिले इल्तिफ़ात (बेकार और तवज्जोह के काबिल ना होना) हैं। मख़फ़ी (छिपी) ना रहे, कि कलाम-ए-इलाही में ईमान का ज़िक्र यूँ आया है कि ईमान मुतलाशी है। रोमीयों 12:3 में है कि एक तालिबे हक़ को खुदा की तरफ़ से बतौर बख़्शिश के मिलता है बल्कि जैसा खुदा ने हर एक को अंदाज़े के मुवाफ़िक़ ईमान तक़सीम किया है एतिदाल (दरमियाना दर्जा) के साथ रहे अपने आपको वैसा समझे।

इस से ज़ाहिर है कि ईमान सिर्फ़ खुदा की तरफ़ से इनायत होता है शायद कोई कहे कि ईमान जब कि एक बख़्शीश-ए-इलाही है। तो हर इन्सान उस के हासिल करने या

ना करने में माज़ूर है। जवाब ये है, कि ईमान जो मूजिबे नजात है, वह तो बेशक खुदा की बख्शिश है मगर इन्सान की तरफ़ से इस की तलाश और तलब शर्त है। अगर उस की तरफ़ से तहरीक ना हो तो वो ईमान हासिल ना होगा। यानी ईमान तो ज़रूर बख्शिशे इलाही है पर इस बख्शिश का तलब करना और इस की तलब में जान बल्ब (मरने के करीब) होना इंसानों पर फ़र्ज़ है इसलिए ऐसा शख्स जो अपने फ़र्ज़ को तर्क करता है। माज़ूर नहीं हो सकता बल्कि बेईमान मर जाता है। और ये जो कहा करते हैं कि खुदा पर ईमान ला इस के ये मअनी हैं कि तू उस की जुस्तजू कर कि वो बख्शिश-ए-इलाही यानी ईमान खुदा की तरफ़ से तुझे इनायत हो। ईमान खुदा की तरफ़ रुजू करने का वसीला है।

(आमाल 11:2) में है कि और बहुत से लोग ईमान ला के खुदावन्द की तरफ़ रुजू होते। यहां से ज़ाहिर है कि बग़ैर ईमान के खुदा की तरफ़ फिर ना मुश्किल है पस ईमान रूह का वसीला भी है। या यूं कहें कि ईमान एक सही यक़ीन है जो रूह-उल-कुद्स के वसीले से दिल पर इलका (वो बात जो खुदा दिल में डाले) होता है। चुनान्चे (1 कुरंथियों 2:9) में है कि किसी को इसी रूह से ईमान अलीख (आख़िर का मुखफ़फ़) यानी रूह-उल-कुद्स का ये भी काम है कि उस के वसीले से आदमीयों को ईमान इनायत होता है। और चूँकि हम देखते हैं कि कलाम-ए-इलाही में जगह-जगह ईमान लाने के वास्ते सबको हुक्म होता है और हमारी तरफ़ से ज़्यादातर कोशिश व सई (जददो जहद) तलब करता है फिर उन आयात को भी हम देखते हैं जिनसे ज़ाहिर होता है कि ये ईमान सिर्फ़ खुदा की बख्शिश और इनायत से हासिल होता है तो हमारे दिल में ख्वाह-मख्वाह ये खयाल पैदा हो जाता है कि शायद इन दोनों बयानात में कुछ इख़्तिलाफ़ है। हालाँकि इस के मअनी यही नहीं, कि इन्सान पर जुस्तजू करना और सई (कोशिश) करना फ़र्ज़ है। और इस कोशिश और सई और इल्तिजा के बाइस जो सच्चा रूहानी यक़ीन खुदा तआला दिल पर इलका करता है। वही बख्शिश-ए-एज़दी (खुदा की बख्शिश) है। और ये सच्चा यक़ीन उन मुक़द्दमात से मुक्कब (दो चीज़ों का मिलाप) नहीं है, जो आदमीयों की अक्ल ने पसंद कर के तर्कीब दी है। बल्कि उन सही मुक़द्दमात से मुक्कब है, जो कादिरे मुतलक़ ने आस्मान से इन्सान की बेहतरी के लिए नाज़िल फ़रमाए।

और यही सबब है कि इस ईमान के मुक़द्दमात ना अक्ली हैं और ना अक्ल के बरख़िलाफ़ बल्कि अक्ल से बाला और बरतर जिनके नीचे अक्ले इन्सानी खड़ी हुई अपनी नारसाई (इस तक पहुंच ना पाना) का इकरार कर के इन मज़ामीन को अपने सर का

ताज बयान करती है। अब इस अम्र का जानना ज़रूरी है कि इस ईमान के कितने अरकान हैं। यानी सही ईमान में किस-किस चीज़ का यकीन लाज़िम है, कि अक्वल खुदा की ज़ात पर ईमान लाना लाज़िम है। मर्कुस 11:42 में है और येसू ने जवाब में उनसे कहा कि खुदा पर भरोसा रखो। यानी खुदा को पहचानो यहां शनाख्त से मुराद इन्सान की शनाख्त नहीं है बल्कि वो शनाख्त मुराद है, कि जिस तरह खुदा ने (अपने) आपको अपने कलाम में बयान किया है।

दोम मसीह पर ईमान लाना वाजिब है। यूहन्ना 14:1 में है कि तुम्हारा दिल ना घबराए तुम खुदा पर ईमान रखते हो मुझ पर भी ईमान रखो। मुझ पर ईमान लाने के ये मअनी हैं जिस तरह मैं ज़ाहिर हुआ हूँ, उसी तरह मुझ पर यकीन लाओगे। खुदा का बेटा और गुनाहों का कफ़ारा और बाइस-ए-ईजादे आलम और कामिल इन्सान और खुदा भी जानो। और मेरे मरने और जी उठने और आस्मान पर जाने का इक्लरार करो। और जानो कि क्रियामत और ज़िंदगी में ही हूँ। खैर जो जो बयान मसीह के मुताल्लिक इन्जील में मज़कूर हैं उन सबको मानना मसीह पर ईमान लाना है ना सिर्फ़ ये यकीन करना कि वो एक रसूल था, और बस ये उस पर ईमान लाना नहीं कहलाता है।

सोम इन्जील पर ईमान लाना वाजिब है। मर्कुस 1:15 में है कि वक़्त पूरा हो गया है खुदा की बादशाहत नज़दीक आ गई है। तौबा करो और इन्जील को मानो। इन्जील पर ईमान लाने के ये मअनी हैं कि वो खुशखबरी जो गुनाहों की माफ़ी की बाबत मसीह के कफ़ारे के वसीले आस्मान से नाज़िल हुई कुबूल करो। न ये कि इन्जील सिर्फ़ एक किताब है जो हज़रत ईसा पर आस्मान से नाज़िल हुई है। और चुप कर रहो जैसे मुसलमानों का अक़ीदा है। ये इन्जील पर ईमान नहीं हो सकता है।

चहारुम खुदा के वादों पर ईमान लाओ। रोमीयों 4:21 में है कि जो कुछ उसने वाअदा किया है वो उस के पूरा करने पर भी कादिर है यानी खुदा तआला के सब वाअदे जो कलामे इलाही में मज़कूर हैं बहुत सच्चे और दुरुस्त हैं जो शख्स उस के वादों में से एक वाअदे का मुन्किर या दिल में शक रखता है वो काफ़िर है।

पंजुम मूसा के नविशते पर ईमान लाना वाजिब है। आमाल 18:4 में है कि लेकिन तेरे सामने ये इक्लरार करता हूँ कि जिस तरीक़ को वो बिद्अत (मज़हब में नई

बात निकालना) कहते हैं उसी के मुताबिक मैं अपने बाप दादों के खुदा की इबादत करता हूँ और जो कुछ तौरत और नबियों के सहीफों में लिखा है उस सब पर मेरा ईमान है।

शश्म पैगम्बरों के सहीफों पर ईमान वाजिब है। तवारीख 20:2 में है कि उस के नबियों पर ईमान लाओ तो तुम कामयाब होगे। और आमाल 26:27 में है कि ऐ अग्रपा बादशाह क्या तू नबियों का यकीन करता है मैं जानता हूँ कि तू यकीन करता है। गरज़ कि इन सब बातों के यकीन का मजमूआ जो मुख्तसर फ़िक्ह में शामिल है कि तू खुदावन्द येसू मसीह पर ईमान ला इन्सान की नजात का मौक़ूफ़ अलैहि (वो शख्स जिस पर किसी काम का फ़ैसला मुन्हसिर किया गया हो) है। और जब किसी इन्सान के दिल में खुदा की तरफ़ से ये ईमान ना सिर्फ़ अक़ल की मदद से बल्कि रूह-उल-कुदूस की मार्फ़त नाज़िल हो कर मुक़ाम पज़ीर होता है तो उस के सबब से वो आदमी फ़वाइद ज़ेल का मुस्तहिक़ (हकदार) हो जाता है क्योंकि इन फ़वाइद मुन्दरिजा ज़ेल का मुबिना इसी हकीकी ईमान में मुन्दरज है। इस ईमान को हम ईमान मुदल्लिल कहते हैं यानी वो ईमान जो अपनी सदाक़त पर आप ही दलील भी है क्योंकि इस की बुनियाद मसीह के कफ़ारे पर है और वह ये बात बतलाता है कि जो कोई इस ईमान को अपने आप में रखे ज़रूर गुनाहों की मुआफी पाएगा क्योंकि इस का रुक्न-ए-अज़ीम कफ़ारा है जो गुनाहों के एवज़ वकूअ में आया और कोई दुनियावी ईमान अपनी ज़ात में कोई ऐसा रुक्न नहीं रखता जिससे वो मूजिबे नजात हो मुहम्मदी ईमान भी दो जुज़ (हिस्से) रखता है चुनान्चे मुहम्मदियों का क़ौल है कि अल्लाह एक है और मुहम्मद उस का रसूल है और इस ईमान को वो लोग मूजिब नजात जानते हैं पर इस में कौन सा जुज़ (हिस्सा) है जो मूजिबे नजात हो सकता है पहला जो अल्लाह एक है। बहुत अच्छा जुज़ (हिस्सा) है मगर बग़ैर किसी और जुज़ (हिस्से) के लायक़ नजात नहीं क्योंकि शैतान भी इस बात का काइल है हालाँकि ये अकेला जुज़ (हिस्सा) उस की नजात को मुफ़ीद नहीं है। दूसरा ये कि मुहम्मद उस का रसूल है अद्वल तो इस का सबूत कहीं से नहीं मिलता। दूसरा गुनाहों की माफी के लिए इस में कौन सी मुहब्बत कायम हो सकती है बरखिलाफ़ इस के कि मसीह गुनाहों का कफ़ारा है ये रुक्न नजात की कामिल उम्मीद रखता है इसी तरह मसीही मज़हब के अरकान-ए-ईमान कामिल अरकाने नजात हैं।

दूसरा फ़ायदा इस ईमान से ये है कि इन्सान इस ईमान के सबब से खुदा के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहरता है यानी वो रास्तबाज़ी जो नजात के लिए मुफ़ीद हो जिसको

इन्सान अपने आमाल से हासिल नहीं कर सकता सिर्फ इस हकीकी ईमान से इन्सान को हासिल हो जाती है क्योंकि इस ईमान का ये भी एक रुकन है कि मसीह ने शरीअत की तमाम रास्तबाज़ीयों को पूरा कर दिया पस इस ईमान का लाने वाला मसीह की रास्तबाज़ी के बाइस रास्तबाज़ हो जाता है क्योंकि उसने ईमान लाके मसीह को पहन लिया। आमाल 12:9-2 में है, कि और मूसा की शरीअत के बाइस जिन बातों से तुम बरी नहीं हो सकते थे उन सबसे हर एक ईमान लाने वाला इस के बाइस बरी होता है और रोमीयों 3:21, 22 में है कि मगर अब शरीअत के बगैर खुदा की एक रास्तबाज़ी ज़ाहिर होती है जिसकी गवाही शरीअत और नबियों से होती है यानी खुदा की वो रास्तबाज़ी जो येसू मसीह पर ईमान लाने से सब ईमान लाने वालों को हासिल होती है क्योंकि कुछ फ़र्क नहीं। अब देखो तमाम दुनियावी ईमान आदमी को रास्तबाज़ नहीं बना सकते मुहम्मदी ईमान से कोई रास्तबाज़ नहीं हो सकता क्योंकि जिस पर ईमान लाते हैं खुद उसने भी तमाम रास्तबाज़ियां पूरी नहीं कीं।

तीसरा खास्सा इस ईमान का ये है कि जिसमें ये ईमान आता है उस को खुदा की फ़र्ज़दी का हक मिल जाता है यानी इस ईमान से इन्सान खुदा का बेटा हो जाता है यूहन्ना 1:12 में है कि लेकिन जितनों ने उसे कुबूल किया उसने उन्हें खुदा के फ़र्ज़न्द बनने का हक बख़शा यानी उन्हें जो उस के नाम पर ईमान लाते हैं। और ग़लतियों 3:26, 27 में है कि क्योंकि तुम सब इस ईमान के वसीले से जो मसीह येसू में है खुदा के फ़र्ज़न्द हो और तुम सब जितनों ने मसीह में शामिल होने का बपतिस्मा लिया मसीह को पहन लिया। मतलब ये है कि इस ईमान का एक ये भी बड़ा रुकन है कि मसीह खुदा का बेटा है पस जब हम मसीह पर ईमान लाए जो खुदा का बेटा है। और वो हमारा लिबास और हमारी रूह का ताज हुआ तो हम भी उस के बाइस खुदा के बेटे हो गए चुनान्चे यूहन्ना 17:23 में है कि मैं उनमें और तू मुझमें ताकि वो कामिल हो कर एक हो जाएं पस सब ईमानदार जो मसीह में हो के खुदा से मेल करते हैं सब खुदा के फ़र्ज़न्द होते हैं फ़र्क इतना रहता है कि मसीह खुदा का इकलौता बेटा है पर ये लोग उस में हो के और उस के सबब से खुदा के ले पालक फ़र्ज़न्द होते हैं। देखो जो फ़ायदा इस ईमान से निकलता है उसी फ़ायदे का एक रुकन इस ईमान में शामिल है बल्कि सारी मसीही ताअलीम इस ईमान में मुन्दरज है।

चौथा फ़ायदा इस ईमान से ये है कि जिस किसी में ये ईमान आता है उस में एक रूहानी रोशनी और बातिनी बसीरत ऐसी पैदा हो जाती है जिसके सबब से उस की रूहानी और बातिनी आँखें खुल जाती हैं और वो शख्स कलाम-ए-इलाही से मुस्तफ़ीद (फ़ायदा उठाना) और अपने बातिनी उयूब (ऐब की जमा) से जो ख़फ़ी (छिपे) होते हैं ख़बरदार होने लगता है और हर वक़्त चौकन्ना रहता है। यूहन्ना 12:26 में है कि जब तक नूर तुम्हारे साथ है नूर पर ईमान लाओ ताकि नूर के फ़र्ज़न्द हो। और आयत 46 में है कि मैं नूर होके दुनिया में आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर ईमान लाए अंधेरे में ना रहे। चूँकि वो खुद नूर है सिर्फ़ उस पर ईमान लाने से इन्सान तारीकी में नहीं रहता बल्कि एक रूहानी रोशनी अपने चाल चलन में पाता है जिस किसी ने ये रोशनी नहीं पाई वो याद रखे कि अब तक मसीह पर ईमान नहीं लाया।

पांचवाँ फ़ायदा ये है कि इस आस्मानी ईमान से रूहानी ज़िंदगी हासिल होती है यानी हर इन्सान जो मौरूसी (बाप दादा की तरफ़ से) और किसी गुनाहों के बाइस मुर्दा दिल और मुर्दा रूह रखता है उस ईमान के सबब उस की रूह और उस का दिल जी उठता है। यूहन्ना 20:21 में है कि लेकिन ये इसलिए लिखे गए यानी मोअजज़ात कि तुम ईमान लाओ कि येसू ही ख़ुदा का बेटा मसीह है और ईमान ला के उस के नाम से ज़िंदगी पाओ। यानी मसीह पर ईमान लाने से रूहानी ज़िंदगी मिलती है। ग़लतीयों 2:20 में है कि मैं मसीह के साथ मस्लूब हुआ हूँ और अब मैं ज़िंदा ना रहा बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा है अब मैं जो जिस्म में ज़िंदगी गुज़ारता हूँ तो ख़ुदा के बेटे पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ जिसने मुझसे मुहब्बत रखी और अपने आपको मेरे लिए मौत के हवाले कर दिया। यानी वो रूहानी ज़िंदगी उस पर ईमान लाने से मुझे मिल गई है।

छटा फ़ायदा इस ईमान से ये है कि ना सिर्फ़ रूहानी ज़िंदगी बल्कि हमेशा की ज़िंदगी भी इसी ईमान से मिलती है जो कोई हकीकी या आस्मानी ईमान रखता है वह अबद-उल-आबाद ज़िंदा रहेगा। यूहन्ना 2:15 में है कि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िंदगी पाए।

सातवाँ फ़ायदा इस हकीकी ईमान से ये है कि ईमान मुहब्बत की राह से असर करता है। बुग़ज़ और अदावत और लड़ाई झगड़े से मुहम्मदी ईमान ज़बरदस्ती और जुल्म से है। इस सबब से वो कुछ असर भी नहीं रखता ये मसीही ईमान है जो मोअस्सर है

गलतियों 5:6 में है कि मगर ईमान जो मुहब्बत की राह से असर करता है। 1 तमथीस 1:5 में है कि हुक्म का मकसद ये है कि पाक दिल और नेक नीयत और बेरिया (खालिस) ईमान से मुहब्बत पैदा हो।

आठवां फ़ायदा ये है कि इस ईमान के बाइस तसल्ली और शैतान पर ग़लबा और शैतान का मुकाबला करने की ताकत हासिल होती है। 1 तिमथियुस 4:10 में है कि क्योंकि हम मेहनत और जाँ-फ़िशानी इसी लिए करते हैं कि हमारी उम्मीद उस ज़िंदा खुदा पर लगी हुई है जो सब आदमीयों का खासकर ईमानदारों का मुनज्जी (नजात देने वाला) है यानी ईमान के सबब तसल्ली और बर्दाश्त की ताकत हमें मिली है। यूहन्ना 1 खत 5:4, 5 में है कि जो कोई खुदा से पैदा हुआ है वो दुनिया पर ग़ालिब आता है। और वो ग़लबा जिससे दुनिया मग़्लुब (हारना) हुई है हमारा ईमान है दुनिया का मग़्लूब करने वाला कौन है। सिवा उस शख्स के जिसका ये ईमान है कि येसू खुदा का बेटा है। यानी ईमान से हम लोग दुनिया पर फ़त्हयाब हो सकते हैं। इफिसियों 6:16 में है कि और इन सब के साथ ईमान की सिपर लगा कर कायम रहो जिससे तुम इस शरीर के सारे जलते हुए तीरों को बुझा सको। यानी ईमान के सबब शैतान के हर हमले पर फ़त्हयाब हो सकते हैं। इस के सिवा और बहुत से फ़ायदे इस हकीकी ईमान से हासिल होते हैं जो किसी दुनियावी ईमान से हासिल नहीं होते दुनियावी ईमान की बड़ी खूबी अगर कहीं हो तो ये हो सकती है कि वो अक़ल के मुवाफ़िक़ बनाया जाये। लेकिन ये ईमान जो आस्मान से आया है ऐसे ऐसे उम्दा फ़ायदे बख़शता है जिसका बयान नहीं हो सकता है इसलिए अब हम अपने हिन्दुस्तानी भाईयों की खिदमत में अर्ज़ करते हैं कि इस हकीकी ईमान की तलाश से बे-ख़बर ना रहें। इस की शनाख़्त यूं है कि हर एक आदमी फ़िक्र करे कि हमने ये ईमान हासिल किया है या नहीं अगर नहीं किया तो उस खुदा-ए-रहीम की मिन्नत और समाजत करें और सज्दा कर के आजिज़ी से अपनी सब दुआओं में शौक़ के साथ ये ईमान तलब करते रहें यहां तक कि उस की तलब में जान बल्ब (मरने के करीब) हो जाएं यकीन है कि वो रहीम खुदा अपने सच्चे तालिबों को इनायत करेगा। और अगर किसी को ये ईमान इनायत हो चुका है तो वो आदमी खुदा का लाख लाख शुक्र करे और हमेशा उस की हिफ़ाज़त और तरक्की की दुआएं किया करे। ना सिर्फ़ दुआएं बल्कि रोज़ रोज़ अपने आप को जांचे कि मेरी दुआओं के मुवाफ़िक़ मेरे ईमान की तरक्की रोज़ बरोज़ हुई है या नहीं अगर होती है तो शुक्र के साथ हमेशा इसी तरह सरगर्म रहें और अगर बावजूद दुआओं के ईमान में तरक्की नहीं होती तो निहायत मुज़्तरिब (परेशान)

और बेचैन हो जाये। यहां तक कि उस का फ़ज़ल जोश मारे और हम अपने ईमान में तरक्की देखें यानी अपने चाल चलन में फ़र्क पाएं और वो ज़िंदा व मोअस्सर ईमान जो हमारे अंदर है इसका फल और इस की तासीर अपनी रोज़ मर्राह की हरकात व सकनात में नमूदार देखें क्योंकि मसीही ईमान मिस्ल दुनियावी ईमानों के मुर्दा ईमान नहीं है बल्कि जहां ये ईमान होता है वहां उस के आसार भी होते हैं वर्ना झूटा दावा होगा।

सिवाए इस बात के हर एक ईमानदार को ये भी लाज़िम है कि उन मसीही ईमानदारों के नमूनों को जो कलाम-ए-इलाही में इसी गर्ज़ से मज़कूर हुए हैं हमेशा अपने पेश-ए-नज़र रखे ताकि इस के पास ईमान के जांचने को एक मीज़ान (पैमाना) भी मौजूद रहे और हर वक़्त अपने ईमान को उन लोगों के ईमान से मुकाबला कर के फ़िक्र या शुक़ करता रहे। मसलन हाबिल, रास्तबाज़ का ईमान जिसका ज़िक्र इब्रानियों 11:4 में है कि ईमान ही से हाबिल ने काइन से अफ़ज़ल कुर्बानी खुदा के लिए गुज़रानी इसी के बाइस उस के रास्तबाज़ होने पर गवाही दी गई कि खुदा ने उस की नज़र पर गवाही दी और उसी के वसीले से अगरचे वो मर गया है अब तक बोलता है। ये अच्छा नमूना खासकर उनके लिए है जो खुदा के सामने दुआएं या नमाज़ में या सदकात व ख़ैरात लेकर हाज़िर होना चाहते हैं उनको चाहिए कि पाक व साफ़ नीयत से हाज़िर हों। इसी तरह हाबिल व काइन दोनों के ईमान को याद रखीए और अपना दिल रियाकारी घमंड गुरुर से बचाएं अगर ना करें तो अपने ईमान को आप ही इन दोनों शख्सों के ईमान से मुकाबला कर के जान सकते हैं कि हम में कौन सा ईमान है और हनोक को भी याद करें जिसका ज़िक्र आयत 5 में है। ईमान ही से हनोक उठाया गया ताकि मौत को ना देखे। और चूँकि खुदा ने उस को उठा लिया था। इसलिए उस का पता नहीं मिला।

आयत 7 में है कि ईमान ही के सबब नूह ने उन चीज़ों की बाबत जो उस वक़्त नज़र ना आई थीं इल्हाम पाकर खौफ़ से कश्ती घराने के बचाओ के लिए बनाई इसी से उसने दुनिया को मुजरिम ठहराया और उस रास्तबाज़ी का जो ईमान से मिलती है वारिस हुआ। आयत 8 में है ईमान से अबराहम जब बुलाया गया फ़रमांबदार हुआ कि उस जगह चला गया जिसे वो मीरास में लेने वाला था और बावजूद ये कि ना जाना कि किधर जाता है। आयत 17 में है अबराहाम जब ईमान से आजमाया गया इज़हाक़ को कुर्बानी के लिए गुज़राना। हाँ इकलौते को उसने छुड़ाया जिसने वादों को पाया था। आयत 20 में है ईमान से इज़हाक़ ने आने वाली चीज़ों की बाबत याक़ूब और एसाओ को बरकत दी।

आयत 21 में है ईमान से याकूब ने मरते वक्त यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपने असा का सर थाम कर सजदा किया।

आयत 22 में है, ईमान से यूसुफ़ ने जब वो मरने पर था बनी-इस्राईल के खुरुज का ज़िक्र किया और अपनी हड्डीयों की बाबत हुक्म दिया। आयत 24 में है। ईमान से मूसा ने सियाना हो के फिरऔन की बेटी का बेटा कहलाने से इन्कार किया कि उसने खुदा के लोगों के साथ दुख उठाना इस से ज़्यादा पसंद किया कि गुनाह के मज़ा को जो चंद रोज़ा है हासिल करे कि उसने मसीह की लान तान को मिस्र के खज़ानों से ज़्यादा कीमती दौलत जाना क्योंकि उस की निगाह बदले पर थी। ईमान से उसने बादशाह के गुस्से से खौफ़ ना खा कर मिस्र को छोड़ दिया कि वो गोया अनदेखे को देखकर कायम रहा। उसने ईमान से फ़सह करने और खून छिड़कने पर अमल किया ऐसा ना हो कि पहलोठों का हलाक करने वाला उन्हें छूए। ईमान से वो लाल समुंद्र से यूं गुज़रे जैसे खुशकी पर से लेकिन जब मिस्रियों ने इस राह का क़सद किया तो वो डूब गए।

ईमान से यरीहू की शहर-ए-पनाह जब उसे सात दिन तक घेर रखा था गिर पड़ी। ईमान से राहिब फ़ाहिशा बेईमानों के साथ हलाक ना हुई उसने जासूसों को सलामत अपने घर में उतारा इसी ईमान से कालिब ने कहा कि हम लोग चढ़ेंगे, और मुल्क ले लेंगे। मती 13:31 अय्यूब के ईमान का ज़िक्र किताब अय्यूब 19:25 में है लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा बचाने वाला जीता है। सदरक, मिसक, व अब्दनजो के ईमान का ज़िक्र दानीएल 3:13 से 30 तक यूं लिखा है कि नबूकद-नज़र ने उनको आग की जलती भट्टी में डाल दिया और फिर देखा कि ये चारों शख्स आग में सही सलामत फिरते हैं जिनमें से एक की सूरत खुदा के बेटे की सी है। देखो उनके ईमान के सबब खुद खुदावन्द मसीह उनकी मदद को आग में आया और उनको बचाया।

पतरस ने ईमान से मसीह को खुदा का बेटा कहा जिसके बाइस वो बड़े दर्जे का मुस्तहिक्र हुआ जिसका ज़िक्र मती 16:16 में है। ईमान से एक गुनेहगार औरत ने इत्र ला कर मसीह के पांव पर मला और अज़्र पाया। तेरे ईमान ने तुझे बचाया सलामत चली जा। इब्रानियों 11:33 से 40 तक लिखा है, क्या कहीं फ़ुर्सत नहीं कि जिदहोन और बर्क व सेमसोन और अफ़ताह और दाऊद और समुएल और नबियों का अहवाल बयान करूँ कि उन्होंने ईमान के वसीले से बादशाहों को जीत लिया रास्ती के काम किए वादों को पहुंचे

शेर बब्बर के मुँह-बंद किए। आग की तेज़ी को बुझाया। तलवारों की धारों से बच निकले। कमज़ोरी में ज़ोर-आवर हुए। लड़ाई में बहादुरी के साथ गैरों की फ़ौजों को हटा दिया। औरतों ने अपने मर्दों को जी उठे पाया। पर बाअज़ मार खाते खाते मर गए और छुटकारा कुबूल ना किया ताकि अफ़ज़ल क्रियामत तक पहुँचें और बाअज़ ठट्ठों में उड़ाए गए। उन्होंने कोड़े खाए और जंजीरों और कैद में भी फंसे संगसार किए गए। आरे से चीरे गए। शिकंजे में खींचे गए। तलवार से मारे गए भेड़ों और बकरों की खाल ओढ़े हुए तंगी। मुसीबत और दुख में मारे मारे फिरे। दुनिया उनके लायक ना रही। जंगलों, पहाड़ों गारों और ज़मीन के गढ़ों में आवारा फिरा किये। ऐ भाइयो देखो, ये जफ़ाकशी और बर्दाशत सिर्फ उस आस्मानी ईमान की ताक़त से हुई जिसकी मुनादी हम लोग मुल्क-ए-हिन्दुस्तान में कर रहे हैं। क्या कोई ईमान जहान में ऐसी तदबीरें रखता है हरगिज़ नहीं मुहम्मदी लोग जान बचाने के लिए झूट बोलना दुरुस्त बतलाते हैं। इस से उनके ईमान की बातिनी तासीर ज़ाहिर हुई है और आस्मानी ईमान की तासीर ईसाईयों की जफ़ा कुशी से हुवैदा (ज़ाहिर) है। ईमानदारों को लाज़िम है कि अपने ईमान में मज़बूती तलाश करें और गुज़रे हुए नमूनों से अपनी ताक़त देखें और ईमानदारों का ज़िक्र खुदा के कलाम में मुन्दरज है इस का अक्सर मुतालआ किया करें। मैं यहां पर चंद मुक़ामों की फ़ेहरिस्त लिख देता हूँ ताकि नाज़रीन कलामे इलाही में खुद देख लें। दानीएल 6:10, 23 गुनेहगार औरत (लूका 7:50) नथनीएल (यूहन्ना 1:41) सामरिया के लोग (यूहन्ना 4:39) मार्था (यूहन्ना 11:27) शागिर्द (यूहन्ना 16:30) तोमा (यूहन्ना 20:28) स्तिफ़नुस (आमाल 6:25) काहिन (6:7) हब्शी (आमाल 8:27) बर्नबास (आमाल 11:24) सिर्गियोसपूस (आमाल 13:12) फिलिप्पी का दारोगा (आमाल 16:31,34) दिक्सी के लोग (कुलस्सियों 1:4) रूमी (रोमीयों 1:8) थिस्सलुनीकियों (थिस्सलुनीकियों 1:3) लूईस (2 तिमुथियुस 1:5) पौलुस (2 तिमुथियुस 4:7) वगैरह मुक़ामात ईमानदारों और बेईमानों के मज़कूर हैं। खुदावन्द हम सभों पर अपना फ़ज़ल करे कि सबको हकीकी ईमान नसीब हो और सब लोग झूटे ईमान से मखलिसी (छुटकारा) पाएं मसीह के वसीले से।

रिसाला दहुम (10)

इस अम्र के बयान में कि नजात क्या चीज़ है?

क्योंकि इसी मतलब के लिए तमाम दीनी तकलीफ़ात और सब झगड़े और मुबाहिसे जहान में जारी हुए हैं। हर अहले-मज्हब को लाज़िम है कि अपने-अपने मज्हब में भी नजात के मुताल्लिक ग़ौर करें। और इस बयान पर जो इस रिसाले में कलामे इलाही से लिखा जाता है फ़िक्र करें, कि कौन सा बयान करीन-ए-कियास (वो बात जिसे अक़ल कुबूल करे) है। और एक मुज्तरिब (बेचैन, बेकरार) रूह को तसल्ली देने वाला और मिंजानिब अल्लाह मालूम होता है। मुहम्मदी मज्हब में नजात का ये हाल है कि कुरआन में अद्वल से आख़िर तक ख़ूब ग़ौर से देखा। कहीं नजात का पता नहीं लगता। क्योंकि इस में सिवाए नेक-आमाल के और कोई सूरत नजात की नहीं लिखी है। मगर इस में ये लिखा है कि खुदा सादिकुल-क़ौल और आदिल है। और ये भी लिखा है कि बदकार को सज़ा और नेकोकार को जो मुतीअ शराअ हो जज़ा (अज़्र) भी देता है। और ये बात तो सब पर ज़ाहिर है कि कोई आदमी बेगुनाह नहीं है। अगर कोई मुतकब्बिर (मगुरुर) शैतान का पैरौ ये कहे, कि मैं बेगुनाह हूँ तो भी ज़रूर उस का दिल अंदर से गवाही देगा कि वो भी गुनेहगार है और चूँकि हर गुनेहगार को अगर खुदा सच्चा है सज़ा तो ज़रूर होगी।

पस नतीजा ये निकला है कि हर मुसलमान को और हर एक उस शख्स को जो आमाल पर भरोसा रखता है ज़रूर सज़ा मिले। अगर कहो कि खुदा रहीम है मुम्किन है कि रहम करे तो इस का जवाब ये है कि फिर अदल (इन्साफ़) कहाँ जाएगा? क्योंकि वो आदिल भी है पस आमाल से हम किसी तरह बच नहीं सकते। जब तक कोई हमारी शफ़ाअत (गुनाहों की माफ़ी की सिफ़ारिश) ना करे ताकि रहम भी हो जाये। और अदालत व सादिकुल-क़ौल भी बहाल रहे। और इस का नाम नजात है जो बग़ैर इस किस्म की शफ़ाअत के हासिल नहीं हो सकती।

अब कुरआन में देखता हूँ कि कहीं मुहम्मद साहब ने इस का ज़िक्र किया है, या नहीं। बकरह 34 रूक़अ में है, **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا انْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمَ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خُلُقَهُ**, ऐ मुसलमानो हमारा दिया खर्च करो उस दिन से पहले जिसमें ना कुछ ज़ोर **وَلَا شَفَاعَةَ**

चलता है ना दोस्ती काम आती है ना शफ़ाअत चलती है। (2:254) इस मुक़ाम पर मुसलमानों से खिताब है और शफ़ाअत से इन्कार। इसी रूकूअ में है, *من ذالذی یشفع عنده*, *لا یأذیه*। ख़ुदा के सामने कौन है जो शफ़ाअत कर सके। मगर उस के हुक्म से। इस आयत से शफ़ाअत साबित की जा सकती है मगर ज़ोफ़ (कमज़ोरी) के साथ क्योंकि मुहम्मद साहब ने जो अहले-ए-इस्लाम के गडरीए (चरवाहे) हैं कहीं कुरआन में ये इक्कार नहीं किया कि मैं शफ़ाअत करूँगा। या वो कौन है जो अदालत को पूरा कर के शफ़ाअत करेगा। हालाँकि ये मज़मून कुरआन में कस्रत से आना चाहिए था इस पर *(لا یأذنه)* की कैद से कौन सा करीना (अंदाज़) है, कि मुहम्मद साहब को शफ़ी (शफ़ाअत करने वाला) समझें। एक और कुरआन में आयत है जिस पर मुसलमानों ने भरोसा कर रखा है, *ولسوف یعطیک ایلث فرحسنى*। ख़ुदा तुझे देगा तू राज़ी होगा। कुरआन में कहीं इस बात का ज़िक्र नहीं मिलता कि वो क्या चीज़ है जो देगा। जिससे मुहम्मद साहब राज़ी हो जाएँगे।

जलालैन में है कि आख़िरत में बहुत सी अच्छी चीज़ें देगा। बैज़ावी में है कमाल नफ़स और ग़लबा-ए-दीन और बुलंदी अद्दीन देगा। हुसैनी में है कि देगा तुझे रुतबा शफ़ाअत। मदारिक में है देगा तुझे सवाब व मकामे शफ़ाअत वग़ैरह। अब देखना चाहिए कि ये सब मुफ़स्सिरीन की बातें हैं। इस आयत में किसी ख़ास बात का ज़िक्र नहीं और अगर कोई आदमी ग़ौर से देखे तो सारी सूरत में कोई ऐसा करीना (बहमी ताल्लुक) पा ना सकेगा जिससे शफ़ाअत मुराद हो सके। सारी सूरत का तर्जुमा ये है। चढ़ती धूप की कसम काली रात की तो ख़ुदा ने तुझे छोड़ा ना, तुझसे बेज़ार हुआ ज़रूर पिछली पहली से तेरे लिए बेहतर है। तेरा ख़ुदा तुझे देगा तू राज़ी होगा। तू यतीम था तुझे जगह दी। तू गुमराह था तुझे हिदायत की। तू फ़कीर था तुझे मालदार किया यानी खदीजा मालदार औरत से तेरी शादी हो गई। पस यतीम को ना दबा साइल (मांगने वाला) को ना झिड़क। ख़ुदा की नेअमत का बयान करना कि देखो यहां शफ़ाअत का कोई ज़िक्र नहीं है।

ज़बरदस्ती मुफ़स्सिरीन ने बे-एतिबार हदीसों की बिना पर शफ़ाअत का खयाल कर लिया है यहां दुनिया की नेअमत का ज़िक्र है। हदीसों में लिखा है कि चंद रोज़ मुहम्मद साहब को इल्हाम ना हुआ ऐसे परेशान हुए कि रात की तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने को भी ना उठे काफ़िरों ने चर्चा किया कि अब मुहम्मद को उस के ख़ुदा ने छोड़ दिया। और इस से नाराज़ हो गया क्योंकि कई दिन से कोई आयत नहीं उतरी यहां से ज़ाहिर है, कि मुहम्मद साहब इस मुक़ाम पर अपने दुनियावी ग़लबे के ज़िक्र से जिसके उम्मीदवार थे

मुसलमानों की तसल्ली की है। यहां शफ़ाअत के ज़िक्र का कहीं नाम व निशान नहीं है सिर्फ वहम (शक) है।

कुरआन में एक और आयत है जिस पर अहले-इस्लाम बड़ा फ़ख़र करते हैं और हता कि शायर अपने शेरों में इस का ज़िक्र करते। और सब मुसलमानों का इस पर भरोसा है। नाज़रीन ज़रा इन्साफ़ से इस पर गौर करें कि भरोसे के लायक है या नहीं बनी-इसाईल के 9 रूकूअ में लिखा है, **ومن الليل فتهجد به نافلة لك عيسى ان يتعثك ربك مقاماً**, ऐ तर्जुमा, ऐ **محمود وقل موب ادخلني مدخل صدق و كخرجني مخرج صدق وجعل بي نذك سلطاناً نصيراً** मुहम्मद खासकर तू कुछ रात को उठ कर नमाज़ पढ़ शायद तेरा खुदा तुझे तारीफ़ के मकासिद में खड़ा करे और कह ऐ खुदा मुझे दाखिल कर सच्चा दाखिल होना। और मुझे निकाल अच्छा निकालना। और दे मुझे अपने पास से एक हुकूमत की मदद। तारीफ़ के मुकाम से जिसको मुकाम-ए-महमूद (तारीफ़ किया गया) कहते हैं।

लोगों ने ये खयाल कर लिया है कि वो शफ़ाअत का मुकाम है हालाँकि कुरआन में कोई आयत इस की ताईद (हिमायत) में नहीं है। तफ़सीर बैज़ावी में लिखा है कि, **وهو مطلق في كل مقام يضيهر كرامة** यानी मुकामे महमूद आम है हर मुकाम को जिसमें इज़ज़त हो। **والمشهوانه مقام الشفاعة لهاروي ابوهريرة** और मशहूर ये है कि वो मुकाम शफ़ाअत है। जैसा कि अबू हरैरा ने रिवायत की है देखो एक बड़े आलिम ने मान लिया कि वो लफ़ज़ आम है ना खास और ये भी कह दिया, कि हदीस की वजह से लोगों ने उस को मुकामे शफ़ाअत मान लिया है। पस जिसे हदीसों पर एतबार हो वो इस को मान ले हालाँकि जो हदीस कुरआन के बरखिलाफ़ हो वो काबिले तस्लीम नहीं हो सकती है।

चुनान्चे इस तफ़सीर में इस के मअनी यूं लिखे हैं कि रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा कर उम्मत के सिवा तुझ पर खास ये नमाज़ फ़र्ज़ है शायद खुदा तुझे शफ़ाअत के मुकाम में खड़ा करे। और कह ऐ रब दाखिल कर मुझे मदीना में अच्छा दाखिल होना और निकाल मुझे मक्का से अच्छा निकालना और मुझे मेरे दुश्मनों पर कुव्वत दे।

पस इस से मुराद ये है कि मुझे वहां जा कर इज़ज़त का मर्तबा मिले। इसी को मुकाम-ए-महमूद कहा है यानी रात को खुदा से दुआएं मांगा कर। ताकि ये ज़िल्लत जो मक्का में है ना रहे। मदीना में जा कर हुकूमत मिल जाये। और बैज़ावी भी इस मतलब

की ताईद करता है। पस अब इन्साफ़ करो कि शफ़ाअत का यहां क्या ज़िक्र है? अब देखना चाहिए कि ईसाई मज़हब में नजात की बाबत क्या लिखा है? कलाम-ए-इलाही में नजात के कई एक नाम हैं :-

1. फ़तह (1 कुरिन्थियों 15:57) में है, पर शुक्र खुदा का जो हमें हमारे खुदावन्द येसू मसीह के वसीले फ़तह बख़्शता है।

2. शहर-पनाह और क़िला (यसअयाह 26:1) में है कि हमारा तो एक मुहक्कम शहर है उस की दीवारों और बुरुजों के बदले वो नजात ही को मुकर्रर करेगा।

3. चश्मे (यसअयाह 12:3) में है कि सो तुम खुश हो के नजात के चश्मों से पानी भरोगे।

4. पियाला (116 ज़बूर आयत 13) में है कि नजात का पियाला उठाऊंगा और खुदावन्द का नाम पुकारंगा।

5. चिराग़ (यसअयाह 62:1) में है कि दम ना लूंगा जब तक कि उस की सदाक़त नूर के मानिंद ना चमके। और उस की नजात चराग़-ए-रौशन की तरफ़ जलवागर ना हो।

6. ढाल (समूएल 22:36) में है कि तू ही ने मुझे नजात की सिपर बख़्शी है।

7. सींग (लूका 1:69) में है कि और अपने खादिम दाऊद के घराने में हमारे लिए नजात का सींग निकाला।

8. पहाड़ (इस्तिस्ना 32:15) में है कि अपनी नजात के पहाड़ को हकीर जाना। और बहुत से नाम इस के मज़कूर हैं। नीज़ इस नजात के बयान के सारे पहलू कलामे इलाही में मुफ़स्सिल (तफ़सील) से मिलते हैं।

मसीही नजात का बयान

ये बेश-क़ीमत चीज़ जिसकी मानिंद जहां में कोई चीज़ हमारे लिए अच्छी नहीं हो सकती है अपने सब पहलू हमें यूं दिखलाती है। पहली बात कोई आदमी इस नजात को

अपनी ताकत से हासिल नहीं कर सकता जब तक कि खुदा की तरफ़ से मर्हमत (करम, मेहरबानी) ना हो।

इफ़िसियों 2:8 में है कि क्योंकि तुमको ईमान के वसीले फ़ज़ल ही से नजात मिली है और ये तुम्हारी तरफ़ से नहीं। तीतुस 3:5 में है कि :-

तो उस ने हम को नजात दी मगर रास्तबाज़ी के कामों के सबब नहीं जो हमने खुद किए बल्कि अपनी रहमत के मुवाफ़िक़ नई पैदाइश के गुस्ल और रूह-उल-कुद्स के तई नया बनाने के वसीले।

दूसरी बात ये है कि खुदा ने ये काम क्यों किया कि हमें दोज़ख़ से बचा लिया क्या हम कुछ इस के हक़दार थे? हरगिज़ नहीं बल्कि इस के पाँच सबब हैं अद्वल ये कि खुदा में जो एक नफ़स की सिफ़त है ये उस का ज़हूर है। तीतुस 2:11 में है कि क्योंकि खुदा का फ़ज़ल जिससे सब आदमीयों के लिए नजात है ज़ाहिर हुआ है।

दूसरा सबब ये कि उस के रहम का ज़हूर हुआ है। 6 ज़बूर 4 में है कि ऐ खुदावन्द फिर आ मेरी जान को मख़लिसी दे अपनी रहमत के सबब मुझे नजात बख़्श।

तीसरा सबब ये कि खुदा को हमसे मुहब्बत है अगरचे हम गुनेहगार और बदकार हैं और उसे भूल गए हैं पर वो नहीं भुला वो सच्चा दोस्त है। रोमीयों 5:8 में है कि :-

लेकिन खुदा अपनी मुहब्बत की ख़बी हम पर यूँ ज़ाहिर करता है कि जब हम गुनेहगार ही थे तो मसीह हमारी खातिर मुआ। यूहन्ना का पहला ख़त 4:9, 10 में है कि जो मुहब्बत खुदा को हमसे है वो इस से ज़ाहिर हुई कि खुदा ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा है ताकि हम उस के सबब से ज़िंदा रहें। मुहब्बत इस में नहीं कि हमने खुदा से मुहब्बत की। बल्कि इस में है कि उस ने हम से मुहब्बत की। और हमारे गुनाहों के कफ़ारे के लिए अपने बेटे को भेजा। यानी नजात जो ज़ाहिर हुई है वो खुदा की मुहब्बत के सबब से है।

चौथा सबब ये है कि उसने अपनी कुद़्रत ज़ाहिर करने के लिए ये काम किया है यानी इन्सान जो मौरूसी (बाप दादा से) गुनाह और इक्तिसाबी (खुद अमल करने के) गुनाह की वजह से नजात से दूर जा पड़ा था और अपने आमाल से इस को हासिल ना

कर सकता था। और इन्सान के सामने नजात हासिल करना गैर-मुम्किन था तब खुदा ने अपनी कुद्रत से मुम्किन कर दिखलाया। चुनान्चे यसअयाह 50:2 में है कि क्या मेरा हाथ ऐसा कोताह (छोटा) हो गया है कि छुड़ा ना सकता या नजात देने का मेरा ज़ोर नहीं देखो में अपनी एक घुरकी (झड़की) से समुंद्र को सुखा देता हूँ और नहरों को सहारा कर डालता हूँ।

पांचवां सबब ये है कि उसने हमारी बर्दाश्त की यानी उस सिफ़त के बाइस हम बच गए। 2 पतरस 3:15 में है कि और हमारे खुदावन्द की बर्दाश्त को अपनी नजात जानो।

2 बात खुदावन्द का इरादा इस नजात की निस्बत क्या है? आया वो लोगों को देना चाहता है या नहीं। 1 तिमथियुस 2:4 में है कि वो चाहता है कि सारे आदमी नजात और सच्चाई की पहचान तक पहुंचें। यहां से ज़ाहिर है कि नजात देने में उस की रजामंदी है मगर चूँकि इन्सान फ़ाइल मुख्तार (वो काम करने वाला जिसको कामिल इख्तियार हासिल हो) है। इसलिए ज़बरदस्ती से गले डाली नहीं जा सकती अगर कोई लेता है तो हमारा खुदावन्द बहुत खुशी से उसे देता है।

चौथी बात ये है कि आदमी नजात किस तरह हासिल कर सकता है। अगर कोई शख्स अम्बिया-ए-साबक़ीन के नविशते को पढ़े तो उसे अच्छी तरह मालूम हो सकता है कि सिर्फ़ खुदावन्द येसू मसीह पर ईमान लाने से नजात हासिल होती है इस के सिवा और कोई ज़रीया दुनिया में नजात हासिल करने का नहीं है। और ना आइंदा को होगा। एक ही नाम है जिससे हर कोई जो ईमान लाए नजात पाता है। मर्कुस 16:16 में है कि जो कोई ईमान लाए और बपतिस्मा ले वो नजात पाएगा और जो ईमान ना लाए वो मुजरिम ठहराया जाएगा। रोमीयों 10:9 में है कि अगर तू अपनी ज़बान से येसू के खुदावन्द होने का इकरार करे और अपने दिल से ईमान लाए कि खुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया (जिंदा किया) तो नजात पाएगा।

इन्जील मुकद्दस में इस किस्म की बहुत सी आयात मौजूद हैं जो इस वाक़ई (हकीकत) पर गवाही देती हैं। यसअयाह 35:4 में कहता है कि उनको जो कम दिले हैं कहो कि हिम्मत बाँधो मत डरो देखो तुम्हारा खुदा सज़ा और जज़ा साथ लिए हुए आता है। और खुदा ही आएगा और तुम्हें बचाएगा।

ज़करयाह 9:16 में कहता है कि और ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा अपनी क़ौम को नजात देगा। वो उन्हें भेड़ों की तरह उसी दिन बचाएगा।

पांचवीं बात ये है कि दुनिया में जितने मज़हब जारी हैं किसी मज़हब में सिवाए मसीही मज़हब के अद्वल तो शफ़ाअत का दावा नहीं किया गया। और किसी ने ब-गुमान उस के मोअतक्रिदों (एतिक्राद रखने वाले) के कुछ ज़ईफ़ (कमज़ोर) सा दावा किया भी हो तो अपनी शफ़ाअत का इस्तिहक्राक़ (कानूनी हक़) दावा नहीं दिखला सकता मसलन मसीह ने दावा किया कि मैं शफ़ाअत करूँगा तो उसने ये भी कहा देखो इस दावे का इम्कान बल्कि जवाब इस बात से ज़ाहिर है कि मैंने तुम्हारे लिए अपना ख़ून दे दिया है।

आमाल 20:8 में है कि ताकि ख़ुदा की कलीसिया की गल्लाबानी करो जिसे उसने अपने खास ख़ून से मोल लिया। इब्रानियों 9:12 में है कि वो बकरों और बछड़ों का ख़ून लेकर नहीं बल्कि अपना ही ख़ून लेकर पाक मकान में एक ही बार दाख़िल हो गया और अबदी ख़लासी कराई। क्या ऐसा किसी मुद्दई शफ़ाअत ने किया है? हरगिज़ नहीं।

छठी बात ये है कि ये नजात जो मसीह ने हमारे लिए तैयार की है। ये उफ़ी (रस्मी, मशहूर) नजात नहीं है जैसा कि मुसलमानों और और मज़हब वालों में मशहूर है। बल्कि इस का मतलब सिर्फ़ ये नहीं है कि क्रियामत के रोज़ छुटकारा मिल जाएगा बल्कि मसीही नजात चूँकि हकीकी नजात है। इसलिए इस का शुरू इसी जहां से होता है जिससे उस आइंदा नजात को जो बमंज़िला इस शुरू के इंतिहाई है ऐनुलयकीन के साथ देखते हैं मतलब ये है कि जो जो चीज़ें इस दुनिया में मूजिब सज़ा हैं जिनके सबब आदमी दोज़ख़ के लायक़ हो गया है जिसके क़ब्ज़े में रहना दोज़ख़ में जाने की कामिल अलामत है उन्हीं के क़ब्ज़े से इसी जहान में हमारा ख़ुदावन्द येसू मसीह इन्सान को नजात देता है और उस के तमाम बोझों को उस के सर पर से इस तरह उतार फेंकता है कि फिर इनका तर्क करना हमारे लिए बाइस तकलीफ़ नहीं रहता है।

इस की मिसाल यूं है कि अगर कोई गरीब आदमी किसी ज़बरदस्त का कर्ज़दार हो और रुपया अदा करने की ताक़त ना रखता हो तो ये कर्ज़ख़वाह उसे पकड़ कर अपना गुलाम बनाए और उस को तरह तरह की तकलीफ़ दे और कहे कि तेरे लिए इस क़द्र मीयाद मुक़रर है इस के अंदर या तो कर्ज़ अदा करो, वर्ना आखिर को तुझे खूब कोड़े मार कर कैदखाने में बंद करूँगा और हरगिज़ ना छोड़ूँगा। इस अस्ना में कोई बड़ा दौलतमंद

इस गरीब के हाल पर रहम कर के इस का ज़िम्मेदार हो जाये और कहे कि जाएं उसने अपनी तरफ से तुझे पर रहम कर के तेरा कर्ज़ अदा कर दिया है तेरा कर्ज़ख्वाह अब तुझे सज़ा ना देगा। अब बतलाओ कि ये गरीब उस की बात का क्योकर यकीन करे कि उसने मेरा कर्ज़ अदा कर दिया है और वो मुझे अब दुख ना देगा क्योकि उस के सामने कर्ज़ अदा नहीं हुआ और ना कर्ज़ख्वाह ने उस को रूबरु बुला कर कुछ कहा? उस का यकीन यूं होगा कि उस पर से कर्ज़ख्वाह की तकलीफ़ उठ जाये और कैद से आज़ादगी हो जाये और फिर उस की गुलामी ना रहे खुशी खुशी अपने वतन और अपने घर की तरफ़ और अपने अकारिब (रिश्तेदारों) से मुलाकात करने की इजाज़त हासिल करे। अगर ऐसा ना हो तो इस दौलतमंद का ये क़ौल कि मैंने तेरा कर्ज़ अदा कर दिया है उस के हक़ में यकीन के लायक़ ना होगा।

पस जब कि हमारे खुदावन्द ने हमारे लिए नजात को हासिल कर लिया हमें खुदा के ग़ज़ब से बचा लिया हमारा कर्ज़ अदा कर दिया। तो अब हम उस की नजात के सबब आज़ाद हो गए हैं हमारे जिस्म और हमारी जानों ने कई तरह की मुसीबतों से मखलिसी (नजात) पाई। अद्वल शरीअत की कैद से। (ग़लतियों 4:4, 5) में है कि लेकिन जब वक़्त पूरा हो गया तो खुदा ने अपने बेटे को भेजा जो औरत से पैदा हुआ और शरीअत के मातहत पैदा हुआ ताकि शरीअत के मातहतों को मोल लेकर छुड़ाए और हमको ले-पालक होने का दर्जा मिले। यहां से ज़ाहिर है कि शरीअत की कैद से हमारी मखलिसी (रिहाई) इस तरह से नहीं हुई जिस तरह शरीर (बुरे) लोग अपने फ़र्ज़ को छोड़कर गुमराह हुए हैं। बल्कि हमारा खुदावन्द आप शरीअत के ताबे हुआ ताकि उस के हुक्क़ अदा कर के इस से हमें मखलिसी (छुटकारा) दे। इस सूरत में शरीअत के अहक़ाम भी पूरे हो कर अपनी मीयाद को जा पहुंचे और हमने मखलिसी भी पाई। अब उस के तर्क से हम गुनेहगार नहीं हो सकते। 1 पतरस 1:8, 9 में है कि क्योकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल चलन जो बाप दादों से चला आता था इस से तुम्हारी खलासी फ़ानी चीज़ों यानी सोने चांदी के ज़रीये से नहीं होती बल्कि एक बेऐब और बेदाग बर्रे यानी मसीह के बेशकीमत खून से। 3, गुनाह की हुक्मत से अगरचे इन्सान कादिर-ए-मुतलक़ नहीं हो सकता तो भी इस मसीही नजात के सबब से गुनाह का मन्सूबा हरगिज़ नहीं रह सकता। शायद किसी वक़्त मौक़ा पा कर गुनाह इस पर हमला करे मगर वो शख्स मुकाबले से पेश आता है और मज़हब वालों की तरह गुनाह का गुलाम नहीं रहता। रोमीयों 6:22 पर

अब गुनाह से छूट कर और खुदा के बंदे हो कर पाकीजगी का फल लाते हो। 4, शैतान से इस नजात के सबब मखलिसी होती है।

इस से ये मुराद नहीं कि अब हमें शैतान फ़रेब नहीं दे सकता बल्कि ये मतलब है कि मसीह ने बहुतों को शैतान के हाथ से बचा लिया। और उस की आम सलतनत में खलल डाल दिया और हम भी मसीह के वसीले से शैतान पर ग़ालिब आते हैं। इब्रानियों 2:14 में है कि वो भी इसी तरह उनमें शरीक हुआ ताकि मौत के वसीले उस को जिसे मौत पर कुद़त हासिल थी यानी इब्लीस को तबाह करे। 5, हमारे दुश्मनों से उसने हमें मखलिसी दी है। और ये मखलिसी दो तरह पर है :-

अव्वल उन चीज़ों और उन आदमीयों वगैरह से जो हमारे जान के दुश्मन थे जो हमको दोज़ख के लायक बनाते थे। खलासी (रिहाई) दी है।

दुवम, ये कि आमदे सानी में ज़मीन पर से हमारे सारे दुश्मन और मुखालिफ़ नाबूद किए जाएंगे। लूका 1:71 में है कि हमको हमारे दुश्मनों से और सब कीना रखने वालों के हाथ से नजात बख़शी। ये सब बातें उस आने वाली नजात के आसार हैं जो हम पर ज़ाहिर हुए हैं मसीह ने हमें आज़ाद करा दिया।

अब हम अपने हकीकी वतन की तरफ़ और घर की सिम्त अपने अहबाब के शौक में खुशी खुशी अपनी रूह में सफ़र करते हुए चले जाते हैं। और अपने मुहसिन (एहसान करने वाले) के शुक्रगुज़ार हैं। गर्ज़ कि नजात के आसार बचशम रूह (रुहानी आँख) हमने दुनिया में देखे और आइंदा जहां में बहुत बहुत कुछ देखेंगे। पस ज़ाहिर है कि मसीह की नजात ऐसी बड़ी भारी नजात है कि जिसकी शाखें हर चहार तरफ़ शामिल-ए-हाल हो जाती हैं जिनसे हम कामिल उम्मीद रखते हैं, कि हकीकी कामयाबी यकीनन हमको मिल जाएगी।

6. छटी बात ये है कि इस मसीही नजात के लिए चंद खुसूसीयतें भी हैं जो उस के अहल में पैदा हो हैं :-

1. ये कि वो शख्स इस के सबब इलाही रास्तबाज़ी से मुलब्स (लिबास पहनना) हो जाता है। मगर उस के फ़ज़ल के सबब इस में मखलिसी के वसीले से जो मसीह येसू में है। मुफ़्त रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं।

2. ये कि तमाम गुनाहों की माफ़ी हो जाती है। इफ़िसियों 1:7 हमको इस में उस के खून के वसीले से मखलिसी (नजात) यानी कुसूरों की माफ़ी उस के उस फ़ज़ल की दौलत के मुवाफ़िक़ हासिल है।

3. ये कि इसी नजात के सबब हम खुदा के ले-पालक भी हो जाते हैं। इफ़िसियों 1:5 में है कि और उसने अपनी मर्ज़ी को नेक इरादे के मुवाफ़िक़ हमें अपने लिए पेशतर से मुकर्रर किया कि येसू मसीह के वसीले उस के ले-पालक बेटे हों।

4. ये है कि इसी नजात के सबब हम लोग एक नई पैदाइश हासिल करते हैं 1 पतरस 1:3 में है कि हमारे खुदावन्द येसू मसीह के खुदा और बाप की हम्द हो। जिसने येसू मसीह के मुर्दों में से जी उठने के बाइस अपनी बड़ी रहमत से हमें ज़िंदा उम्मीद के लिए अज सर-ए-नौ पैदा किया।

5. ये कि इसी नजात के सबब इन्सान का खुदा से मेल हो जाता है। मत्ती 5 में है कि क्योंकि जब बावजूद दुश्मन होने के खुदा से उस के बेटे की मौत के वसीले से हमारा मेल हो गया। तो मेल होने के बाद तो हम उस की ज़िंदगी के सबब से ज़रूरी जियेंगे।

6. ये है कि इस के सबब पाकीज़गी की चाल चलते हैं। शरीरों की चाल नहीं चल सकते। हिज़्कीएल 36:29 में है मैं तुम्हें तुम्हारी नापाकियों से बचाऊंगा।

7. ये कि इन्सान के दिल में ये नजात सताइश और मदह-सराई (हम्द) का शौक पैदा करती है। 71 ज़बूर 23 में है, कि मेरे हॉट जिस वक़्त कि मैं तेरी मदह-सराई (हम्द) करूंगा निहायत खुश होंगे। और ऐसे मेरा जी जिसे तू ने खलासी बख़्शी। ये हाल इस जहान में नजात याफ़ताह लोगों का है और इस जहान में ज़्यादातर इस का इन्किशाफ़ होगा।

8 वो कि जो लोग इस नजात को पाते हैं उनको लाज़िम है कि दूसरे की जान बचाने का एक बड़ा शौक दिल में पैदा हो जाये।

देखो हमारे भाई इसी सबब से कैसी कैसी तकलीफ़ें उठाते हैं और कलाम-ए-इलाही और मसीह की नजात का चर्चा करते फिरते हैं कि किसी दूसरे से ऐसा काम नहीं होता।

रोमीयों 11:14 में है कि ताकि किसी तरह से अपने क्रौम वालों को गैरत दिला कर उनमें से बाज़ों को नजात दिलाऊँ। नाज़रीन किराम मुत्लाअ (बाखबर) रहें कि नजाते इलाही का हाल आपके भी गोश गुज़ार (आगाह करना) हो चुका है ग़फ़लत को दूर करें क्योंकि अब कोई उज़्र (बहाना) बाकी नहीं रहा है। पस सबकी ख़िदमत में अर्ज़ है कि हमारे खुदावन्द येसू मसीह के पास चले आओ कि उस की नजात आम है जो कोई ईमान लाता है नजात पाता है आइंदा इख़्तियार है।

रिसाला याज़दहुम (11)

आस्मानी मुहब्बत के बयान में

हमारे खुदावन्द के कलाम-ए-मुक़द्दस में से एक ताअलीम मुहब्बत की भी है। जो इन्सान के लिए दो जहान में निहायत फ़ाइदाबख़्श है। और मुहब्बत की ये ताअलीम जो खुदावन्द मसीह ने दी है अपनी खुसूसियात के बाइस कुछ और ही कैफ़ीयत दिखलाती है। जिससे ये मालूम होता है, कि ये इलाही ताअलीम है। जिन अशखास ने इल्म-ए-अख़लाक की किताबों में मुहब्बत का बयान देखा है। और जिन लोगों ने अहले तसव्वुफ़ (सूफ़ियों का अक्रीदा) और तअशशुक (इश्क, मुहब्बत) की सोहबत (दोस्ती) में मुहब्बत का जाम पी कर उस का दावा किया है। और जिन लोगों ने हिंदू मुसलमानों के मज़हब के उस्तादों और उनकी किताबों से मुहब्बत की ताअलीम पाई है उन सबकी ख़िदमत में अर्ज़ है, कि इन्साफ़ की आँख और तजुर्बे के दिमाग़ से इस मसीही मुहब्बत को अपने अपने खयालों की मुहब्बत से मुक़ाबला कर के देखें। और जो सच्चा हो इस को कुबूल करें।

अगर कोई शख्स मुहब्बत का पूरा बयान कलामे इलाही से निकाल कर सुनाए तो बहुत मुश्किल है क्योंकि ये एक ऐसा बड़ा बयान है कि जिसके लिखने को दफ़्तर दरकार है लेकिन इस रिसाले में इस के बाअज़ मज़ामीन की तरफ़ इशारा किया जाता है। ताकि इस की कैफ़ीयत दर्याफ़्त कर के इस में बसैं। मुहब्बत की दो किस्में हैं :-

अव्वल वो कि जिससे खुदा का जलाल और उस की बुजुर्गी ज़ाहिर होती है। मसलन खुदा की हमसे मुहब्बत जिससे खुदा का जलाल और बुजुर्गी ज़ाहिर हो। दूसरी मुहब्बत दुनियावी जिसमें दुनिया के सरदार यानी शैतान का जलाल और उस की बुजुर्गी

ज़ाहिर होती है। ये मुहब्बत मुर्दूद और लानत के लायक है पस जहां कहीं इस मुहब्बत का जुज़व (हिस्सा) पाया जाये इस से नफ़रत करना वाजिब होता है। ताकि पहली मुहब्बत हाथ से जाती ना रहे और हम शैतान के दोस्त हो कर खुदा के दुश्मन ना हो जाएं।

यहां से ज़ाहिर है कि अगर कोई आदमी खुदा की इबादत और उस से मुहब्बत इस सबब से करता है, कि मुझे मी जन्नत में हूर और फुलां और शराब और अच्छे अच्छे लिबास मिलेंगे। और मैं मज़े उड़ाऊंगा। उस में खुदा की मुहब्बत नहीं। उस के काम नफ़रती हैं ये दूसरी मुहब्बत नफ़सानी आदमीयों में और झूटे मज़हब वालों में बकस्रत पाई जाती है। लेकिन इस नालायक मुहब्बत को जो मर्दूद है और जिसे शहवत-परस्तों ने मुहब्बत इलाही समझा है छोड़कर हम सिर्फ हकीकी मुहब्बत का बयान करना चाहते हैं। जिसमें खुदा की बुजुर्गी ज़ाहिर होती है।

इस में चंद ज़िक्र हैं। पहला ज़िक्र खुदा उस मुहब्बत के बयान में जो उस की तरफ़ से हमारे हक़ में है। 2 कुरिन्थियों 13:11 में है कि खुदा मुहब्बत और मेल मिलाप का चश्मा तुम्हारे साथ होगा। यूहन्ना 1 खत 4:8 में है कि जो मुहब्बत नहीं रखता वो खुदा को नहीं जानता क्योंकि खुदा मुहब्बत है। इन आयात से ज़ाहिर है कि मुहब्बत एक सिफ़त है और इस सिफ़त का अहवाल कलामे इलाही में यूं मिलता है।

अव्वल कि ये निहायत बड़ी मुहब्बत है। इफ़िसियों 2:4 में है कि मगर खुदा ने अपने रहम की दौलत से उस बड़ी मुहब्बत के सबब जो उसने हमसे की।

2. मुहब्बत दाइमी (हमेशा के लिए) है। सफ़नियाह 3:17 में है कि खुदावन्द तेरा खुदा जो तेरे दर्मियान है कादिर है वही बचा लेगा। वो तेरे सबब से शादमान हो कर खुशी करेगा। अपनी मुहब्बत के बाइस वो इल्ज़ाम देने के बदले खामोश रहेगा। यसअयाह 49:16 में है कि देख मैंने तेरी तस्वीर अपनी हथेलियों पर खोदी है और तेरी शहर-पनाह हमेशा तक मेरे सामने है।

3. ये कि मुहब्बत इलाही बे-लुत्फ़ नहीं बल्कि इस में दिलकशी और फ़र्हत भी है। होसीअ 11:4 में है कि मैंने उन्हें इन्सान की तरह रस्सियों से और मुहब्बत की डोरियों से खींचा।

4. कोई चीज़ हमें उस की मुहब्बत से जुदा नहीं कर सकती। रोमीयो 8:39 में है कि ना बुलंदी ना पस्ती ना कोई और मख्लूक हमको खुदा की मुहब्बत से जो हमारे खुदावंद येसू मसीह में है जुदा कर सकेगा।

5. ये कि बगैर हमारी लियाकत (काबिलीयत) के ये मुहब्बत उस को हमसे है। यर्मियाह 31:3 में है कि खुदावन्द क़दीम से मुझ पर ज़ाहिर हुआ और कहा कि मैंने बड़े अबदी इश्क से तुझे प्यार क्या इसलिए मैंने अपनी शफ़क़त तुझ पर बढ़ाई।

6 ये कि इस सिफ़ते इलाही का ज़हूर खास हज़रत मसीह में है वही उस का मज़हर (ज़ाहिर करने वाला) भी है। यूहन्ना 15:9 में है कि जैसा बाप ने मुझसे मुहब्बत की वैसा ही मैंने तुमसे मुहब्बत रखी तुम मेरी मुहब्बत में कायम रहो। 19:26 और मैंने उन्हें तेरे नाम से वाकिफ़ किया और करता रहूँगा। ताकि जो मुहब्बत तुझको मुझसे थी वो उनमें हो और मैं उन में हूँ।

7. ये कि इस मुहब्बत में खुदावन्द येसू मसीह कायम रहता है यानी वो उस का मस्कन है। यूहन्ना 15:10 में है कि अगर तुम मेरे हुक्मों पर अमल करोगे तो मेरी मुहब्बत में कायम रहोगे। जैसा मैंने अपने बाप के हुक्मों पर अमल किया है और उस की मुहब्बत में कायम हूँ। शायद कोई कहे कि ये मुहब्बत इलाही जिसमें ऐसी ऐसी सिफ़ात हैं तुम पर क्योंकर ज़ाहिर हुई? जानना चाहिए कि चंद ऐसी बातें हैं जिनसे दर्याफ़्त होता है कि ज़रूर खुदा की मुहब्बत हमारी निस्बत इसी तरह जोश मार रही है।

1. अक्वल ये कि उसने मसीह को भेज दिया। यूहन्ना पहला ख़त 4:9 में है कि जो मुहब्बत खुदा को हमसे है वो इस से ज़ाहिर हुई कि खुदा ने अपने इकलौते बेटे को ना सिर्फ़ भेज दिया बल्कि हमारे वास्ते सलीब पर खींच दिया।

2. यूहन्ना पहला ख़त 4:10 में है कि मुहब्बत इस में नहीं कि हमने खुदा से मुहब्बत की बल्कि इस में है कि उसने हमसे मुहब्बत की और हमारे गुनाहों के कफ़ारे के लिए अपने बेटे को भेजा।

3. ये कि उसने जो हमें मुफ़्त नजात इनायत फ़रमाई इस से उस की मुहब्बत ज़ाहिर होती है। तीतुस 3:4, 5 में है कि मगर जब हमारे मुनज्जी खुदा की मेहरबानी और इन्सान के साथ उस की उल्फ़त ज़ाहिर हुई तो उसने हमको नजात दी। मगर

रास्तबाज़ी के कामों के सबब नहीं जो हमने खुद किए बल्कि अपनी रहमत के मुताबिक नई पैदाइश के गुस्ल और रूह-उल-कुद्स के हमें नया बनाने के वसीले से।

4. ये कि इसी जहान में उसने हमें एक ऐसी रूहानी ज़िंदगी मर्हमत (बख्शिश) की है जिससे हम जानते हैं कि खुदा हमें प्यार करता है। क्योंकि हम पहले मुर्दा थे अब अपनी रूहों में उस के कलाम से एक नई ज़िंदगी देखते हैं। जो हमने पहले देखी और हम देखते हैं कि हमारे चारों तरफ़ बहुत से मुर्दे फिरते हैं अगर कोई आदमी इस का यकीन ना करे तो हम सिवा इस के और कुछ इस का सबूत नहीं दे सकते कि वो खुद मसीह के पास आकर देख ले।

5. ये कि उसने हमें मोअस्सर बुलाहट से बुलाया यानी जिस आवाज़ से उसने हमें पुकारा है वो आवाज़ ऐसी मोअस्सर है, कि हकीकी तालिब इस का असर दिल पर देखता है और गैर-क़ौमों के भी दिल छिद जाते हैं। इसी वास्ते मसीह ने फ़रमाया कि मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ पहचानती हैं।

6. ये कि खुदावन्द अपने लोगों को उनकी ग़फ़लत में उन्हें तंबीया देता है। इस से उस की मुहब्बत ज़ाहिर होती है। इब्रानियों 12:6 में है कि क्योंकि जिससे खुदावन्द मुहब्बत रखता है उसे तंबीया भी करता है और जिसको बेटा बना लेता है इस के कोड़े भी लगाता है। शायद कोई कहे काफ़िरों पर भी दुख और मुसीबत आती है तो क्या खुदा उनको भी प्यार करता है जवाब ये है कि बेशक खुदा उनको भी प्यार करता है लेकिन वो महसूस नहीं करते ताकि तौबा करके ईमान लाएं। अगर उनकी ये ग़फ़लत देर तक रहे और बार-बार तंबीया पर होशियार ना हो जाएं तब उन्हें छोड़ देता है फिर वो अपने किए की सज़ा भुगतेंगे। ये उमूर और इनके सिवा और दीनी और दुनियावी नेअमतें और मददगारियाँ और खबरगीरीयाँ और हिफ़ाज़त वगैरह भी उस की आम मुहब्बत का इकरार करते हैं।

पस इसलिए हम कहते हैं कि हमारा खुदा-ए-बरतर ज़रूर हमसे मुहब्बत रखता है। यहां तीन बातें ज़ाहिर होती हैं :-

अव्वल खुदा को हमसे मुहब्बत है।

दुवम वो मुहब्बत मसीह में ज़ाहिर होती है।

सोइम हम अपने आपको और इस जहान को उस की मुहब्बत में घिरा हुआ देखते हैं।

दूसरा ज़िक्र मसीह की हमसे मुहब्बत के बयान हैं। अगरचे वही मुहब्बत है जो खुदा बाप से बयान में ज़ाहिर होती तो भी इस का ज़हूर चूँकि खास तौर पर हुआ है और ताल्लुक इस का उक़नूम सानी यानी बेटे से है। जो इन्सान बन कर हमारे दर्मियान रहा। और हमें प्यार किया ज़रूर है कि इस का भी मुख़्तसर बयान करें ऊपर के बयान से ज़ाहिर है कि खुदा की मुहब्बत का मौजूं खास खुदावन्द येसू मसीह है और उस की ज़ात में इस मुहब्बत ने ज़हूर (ज़ाहिर होना) पाया है।

अगरचे इस की शाखें चारों तरफ़ फैल गई हैं लेकिन सब कुछ उसी के वसीले से है क्योंकि अज़ल से उस के साथ है और इसी से सब कुछ पैदा हुआ। पर हम मसीह की मुहब्बत में खासकर चार बातें देखते हैं :-

1. ये कि उस को खुदा से मुहब्बत है। यूहन्ना 14:21 में है कि लेकिन ये इसलिए होता है कि दुनिया जाने कि मैं बाप से मुहब्बत रखता हूँ और जिस तरह बाप ने मुझे हुक्म दिया मैं ऐसा ही करता हूँ।

2. ये कि उस को तमाम कलीसिया यानी अपनी उम्मत के सब लोगों से मुहब्बत है। यूहन्ना 15:9 में है कि जैसे बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी वैसे ही मैंने तुमसे मुहब्बत रखी। इफिसियों 5:25 में है कि मसीह ने कलीसिया को प्यार किया।

3. ये कि वो खास लोगों को जो सच्चे ईसाई हैं खास मुहब्बत रखता है। और ना सिर्फ़ मुहब्बत बल्कि अपने आपको उन पर ज़ाहिर भी करता है। यूहन्ना 14:21 में है कि जिसके पास मेरे हुक्म हैं और वो उन पर अमल करता है वही मुझसे मुहब्बत रखता है और जो मुझसे मुहब्बत रखता है। वो मेरे बाप का प्यारा होगा। और मैं उस से मुहब्बत रखूँगा और अपने आपको उस पर ज़ाहिर करूँगा।

4. ये है कि वो अपने दुश्मनों से भी मुहब्बत रखता है तौबा की मोहलत देता है। लूका 23:34 में है कि ऐ बाप इनको माफ़ कर क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या करते हैं। ये चार बातें मसीह की मुहब्बत में ख़ूब ज़ाहिर हैं जिस क़द्र उसने खुदा को प्यार किया और उस के हुक्मों से ज़रा इधर-उधर ना मुड़ा और उस की मर्जी का मुतलाशी (तलाश

करने वाला) रहा। जैसा खुशी के वक़्त वैसा ही मुसीबत और दुख के वक़्त खुदा से मुहब्बत और प्यार करता रहा। ऐसा कोई आदमी दुनिया की चारों हदों में नज़र नहीं आता, कि खुदा को इस तरह प्यार करे और अपनी जमाअत को उसने ऐसा प्यार किया। कि कोई सच्चा रसूल भी बमुश्किल करता है। खास लोगों को उस ने ऐसा प्यार किया कि आस्मान पर उनका आला मन्सब और ज़मीन पर उनका मददगार होकर आखिरी ज़माने तक उनके साथ रहने का वाअदा किया दुश्मनों को ऐसा प्यार किया कि किसी ने ऐसा कर के ना दिखलाया। अब ये जानना चाहिए कि ये क्योंकि हुआ कि मसीह ने हमें ऐसा प्यार किया।

अव्वल, ये कि वो गुमशुदों (खोए हुआओं) को ढूँढता फिरा। लूका 19:10 में है कि क्योंकि इब्ने-आदम खोए हुआओं को ढूँढने और नजात देने आया है।

दोम, ये कि उसने अपनी जान हमारी खातिर दे दी। यूहन्ना 15:13 में है कि इस से ज़्यादा मुहब्बत कोई शख्स नहीं करता कि अपनी जान अपने दोस्तों के लिए दे।

सोम, ये कि हमारे गुनाहों को अपने खून से धोता है। मुकाशफ़ा 1:5 में है कि जो हमसे मुहब्बत रखता है और जिसने अपने खून के वसीले से हमको गुनाहों से खलासी (रिहाई) बख़्शी।

चहारुम, ये कि वो हमारे लिए जो बेकस और बेबस थे आस्मान पर सिफ़ारिश करता है। इब्रानियों 7:25 में है कि इसी लिए जो उस के वसीले से खुदा के पास आते हैं वो उन्हें पूरी पूरी नजात दे सकता है क्योंकि वो उनकी शफ़ाअत के लिए हमेशा ज़िन्दा है।

पंजुम, ये कि अगरचे खुद आस्मान पर चला गया लेकिन हमारी तसल्ली के लिए एक तसल्ली देने वाले यानी रूह-उल-कुद्स का वाअदा किया। यूहन्ना 15:26 में है कि लेकिन जब वो मददगार आएगा। जिसको मैं तुम्हारे पास बाप की तरफ़ भेजूँगा। यानी सच्चाई का रूह जो बाप की तरफ़ से निकलता है तो वो मेरी गवाही देगा। मगर इस मसीही मुहब्बत की भी चंद सिफ़तें हैं।

अव्वल, ये कि ये मुहब्बत दिलों को खींचती है। 2 कुरिन्थियों 5:14 में है कि क्योंकि मसीह की मुहब्बत हमको मजबूर कर देती है। इसलिए कि हम ये समझते हैं कि जब एक सब के वास्ते मुआ तो सब मरेंगे।

दोम, ये कि ये मुहब्बत बे-तब्दील है। यूहन्ना 13:1 में है कि तू अपने उन लोगों से जो दुनिया में थे जैसी मुहब्बत रखता था आखिर तक मुहब्बत रखता रहा।

सोइम, ये कि ये मुहब्बत जुदा होने वाली नहीं है। रोमीयों 8:35 कौन हमको मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा। मुसीबत या तंगी या जुल्म या काल या नंगा-पन या खतरा या तलवार।

चहारुम, ये कि मुहब्बत मुकद्दसों की निस्बत रोज़ बरोज़ तरक्की पर है। यहां तक कि अबद-उल-आबाद उस के साये में रहें लेकिन बेईमानों की निस्बत अगरचे इस जहान में ये मुहब्बत हाथ पसारे हुए है कि मुझमें आओ लेकिन एक ऐसा वक़्त आएगा कि अगर वो इस मुहब्बत को कुबूल ना करें। तो ये मुहब्बत उन की तरफ़ से मुँह मोड़ कर फिर उनकी तरफ़ तवज्जह ना करेगी। और यही मसीह जो इस वक़्त मुहब्बत से बुलाता है उस वक़्त उनके हक़ में जो कुबूल नहीं करते क़हरे इलाही हो कर उनके सामने हो जाएगा। यहां तक खुदा की मुहब्बत और मसीह की मुहब्बत मुख्तसर तौर पर बयान हुई। इन बातों से ये नतीजा निकलता है कि अव्वल खुदा से मुहब्बत निकली ना हमारे किसी इस्तिहकाक (हक़) के बाइस बल्कि मुफ़्त उस से सादिर हुई। और मसीह में उसने ज़हूर पकड़ कर चारों तरफ़ अपना ज़हूर दिखला दिया। अब अगर हम मसीह पर ईमान लाते हैं और उस के वसीले खुदा की मुहब्बत से हमने कुछ हिस्सा पाया है तो ज़रूर है कि हमारे अंदर भी ये मुहब्बत उसी तरह ज़हूर पाए जैसी मसीह में ज़ाहिर हुई है। यूहन्ना 13:33 में है, कि मैं तुम्हें एक नया हुक़म देता हूँ कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। अगले पैग़म्बरों की किताबों में भी मुहब्बत करने का हुक़म लिखा है। मगर मसीह ने फ़रमाया कि मैं नया हुक़म देता हूँ और बेशक ये नया हुक़म है क्योंकि अगलों पर इस तरह की मुहब्बत करना ज़ाहिर भी ना हुआ था। क्या इस मुहब्बत की सूरत और अगलों की मुहब्बत की शक़ल यकसाँ है हरगिज़ नहीं बल्कि ये बड़ा हुक़म बड़ी तरक्की के साथ ज़ाहिर है।

अगले लोग दुश्मनों से दुश्मनी करते थे। और इन्सान की तबीयत का मीलान (रुझान) भी यही है। लेकिन इस आस्मानी मुहब्बत में दुश्मनों से दोस्ती करने का हुकम है अगरचे अगले ज़माने के लोग भी इन्सानियत के इक़्तिदार से बाहम कुछ ना कुछ मुहब्बत करते थे। लेकिन एक मुकम्मल सूरत में ये आस्मानी मुहब्बत आस्मानी ताक़त से हज़रत मसीह के वसीले हमारे अंदर आई है। इसलिए अगली मुहब्बत और इस में बहुत बड़ा फ़र्क है वो एक तरह का मुबादला (अदला बदली) था ये मुफ़्त की जाती है। वो इन्सानी इक़्तिज़ा (तक्राज़ा, ख़्वाहिश) का नतीजा था और ये इलाही मंशा का समरा (हासिल, फल) है। मगर कोई आदमी इस नए हुकम पर अमल करना चाहे तो खयाल करे कि मैं मसीह की मानिंद चारों तरफ़ प्यार के दरवाज़े खोले रखता हूँ या नहीं यानी ख़ुदा से कलीसिया से ख़्वास से अवाम से मेरी मुहब्बत है या नहीं पर ये मुहब्बत इसी गर्ज़ से ख़ुदा बाप ने इस का ज़हूर किया या कोई और गर्ज़ है। अगर वही गर्ज़ और उसी तौर पर ये है तो नए हुकम पर अमल है। वर्ना वही अक़ली और दुनियावी इन्सानी मुहब्बत है जो पुराने चीथड़े हैं। और किसी काम की नहीं है।

पस ख़ुदा-ए-बरतर से हम किस तरह मुहब्बत रखें। मती 22:7 में है कि येसू ने उसे कहा कि ख़ुदावंद अपने ख़ुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपनी सारी अक़ल से मुहब्बत रख पहला और बड़ा हुकम यही है। इस जहान में बहुत से लोग ऐसे हैं जो ये समझते हैं कि हम ख़ुदा से मुहब्बत रखते हैं हालाँकि उनमें मुहब्बते इलाही नहीं होती वो अपने दिल से फ़रेब-ख़ुर्दा होते हैं। पस जानना चाहिए, कि जिसमें ख़ुदा की मुहब्बत है उस में ये अलामात होते हैं :-

अव्वल खुशी। 5 ज़बूर 11 में है कि तब वो सब जो तुज़ पर भरोसा रखते हैं खुश रहेंगे। क्या ख़ुदा के कलाम के सुनने और पढ़ने और दुआ करने में हम खुशहाल रहते हैं या तंगदिल?

दूसरी अलामत, दिलेरी है जो कोई ख़ुदा की मुहब्बत अपने दिल में रखता है वो दिलेरी होता है। किसी आदमी और चीज़ से और किसी नुक़सान से नहीं डरता क्योंकि वो कादिर-ए-मुतलक़ का दोस्त है। 1 यूहन्ना 4:18 में है कि मुहब्बत ख़ौफ़ को दूर कर देती है क्योंकि ख़ौफ़ से अज़ाब (मुसीबत) होता है और कोई ख़ौफ़ करने वाला मुहब्बत में

कामिल नहीं हुआ। देखो इस मुल्क के लोग जाहिलों के लान तान से डरते हैं। क्योंकि इनमें खुदा की मुहब्बत नहीं है।

सोम अलामत, गुनाह से नफ़रत। चूँकि खुदा कुद्दूस है इसलिए गुनाह से नफ़रत रखता है। पस अगर कोई उस का दोस्त बनना चाहे तो पहले गुनाह को छोड़ दे वर्ना उस की दरगाह (बारगाह) में दाखिल ना होने पाएगा। 97 ज़बूर 10 में है कि तुम जो खुदा के चाहने वाले हो बदी से कीना (दुश्मनी) रखो वो अपने मुक़द्दसों की जानों का निगहबान है वही उनको शरीरों (बेदीनों) के हाथ से छुड़ाता है।

चहारूम अलामत, खुदा की फ़रमांबदारी है क्योंकि मुहब्बत के मअनी ये नहीं हैं कि मैं अपने दोस्त का हुक्म ना मानूँ। यूहन्ना 1 ख़त 5:30 में है कि खुदा की मुहब्बत ये है कि हम उस के हुक्मों पर अमल करें और उस के हुक्म सख़्त नहीं। हर एक आदमी जब तक इन चार बातों को अपने अंदर ना देखे हरगिज़ खयाल ना करे कि मुझमें खुदा की मुहब्बत है।

दूसरी हज़रत मसीह की मुहब्बत है जैसी खुदा की मुहब्बत हम पर फ़र्ज़ है वैसी ही मसीह की मुहब्बत भी हर फ़र्द बशर को वाजिब और फ़र्ज़ है। क्योंकि वो मुहब्बत-ए-इलाही का महबत (उतरने की जगह) है। कोई आदमी उस से जुदा हो के खुदा से मुहब्बत हरगिज़ नहीं कर सकता। उसने हमसे मुहब्बत की हम भी उस से मुहब्बत करें जैसी खुदा ने उस से मुहब्बत की। ऐसी उसने खुदा से मुहब्बत की। बाअज़ लोग उस से बिल्कुल मुहब्बत नहीं रखते वो लोग हकीकत में खुदा से मुहब्बत नहीं रखते ना खुदा उनसे राज़ी होगा। बाअज़ लोग उस के साथ जिस्मानी तौर पर मुहब्बत रखते हैं मसलन उस की तस्वीर का इश्क़ या उस के नाम की तस्बीह या उस की सलीब की तस्वीर गले में या उस के बाअज़ बरकात को गैर-मुनासिब प्यार करते हैं। मगर ये सब बुत परस्ती के अजज़ा (हिस्से) हैं और मसीह ने भी इन बातों को ना पसंद फ़रमाया है। लूका 11:27 में से कि एक औरत ने कहा मुबारक है वो पेट जिसमें तू रहा और वो छाती जिससे तूने दूध पिया। ईसा ने जवाब दिया हाँ मगर ज़्यादा मुबारक वह हैं जो खुदा का कलाम सुनते और उस पर अमल करते हैं। मसीह की मुहब्बत के ये निशान हैं :-

1. निशान, मसीह को रूह में तलाश करना क्योंकि अगर हम उस के हैं तो वो हम में बस्ता है। ग़ज़ल-उल-ग़ज़ालात के 3:2 में इस मज़मून का ज़िक्र है।

2. निशान, अपनी सलीब उठा के उस की पैरवी करना यानी ऐसी पैरवी करना कि अगर उस के लिए जान भी जाये तो मंज़ूर हो। मती 10:38 में है कि और जो कोई अपनी सलीब ना उठाए और मेरे पीछे ना चले वो मेरे लायक नहीं।

3. निशान, तमाम चीज़ों से ज़्यादा उस को प्यार करना। मती 10:37 में है कि जो कोई माँ या बाप को मुझसे ज़्यादा अज़ीज़ रखता है, वो मेरे लायक नहीं। और जो कोई बेटे या बेटी को मुझसे ज़्यादा अज़ीज़ रखता है वो मेरे लायक नहीं।

4. निशान, मसीह की खिदमत करना और उस की खिदमत यूँ है कि उस के लोगों की खिदमत की जाये। मती 25:20 में है कि तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ ये किया उसने मेरे ही साथ किया।

5. निशान, उस के हुक्म को बे-कम व कासित (बगैर कमी बेशी) के बजा लाना। यूहन्ना 14:15 में है कि अगर तुम मुझसे मुहब्बत रखते हो तो मेरे हुक्मों पर अमल करो।

पस ये पाँच निशान मसीह की मुहब्बत के हैं जिसमें ये नहीं हैं उस में मसीह की मुहब्बत नहीं और जिसमें मसीह की मुहब्बत नहीं उस में खुदा की मुहब्बत नहीं। फिर देखो मसीह ने दुनिया के लोगों से तीन तरह की मुहब्बत की है आम कलीसिया से और खास मुक़द्दसों से और अपने दुश्मनों से भी इसी तरह मगर वो आस्मानी मुहब्बत हम में है तो हम भी इसी तरह करें और मसीह और खुदा ने हमसे इसलिए मुहब्बत की है, कि हमारी जान बच जाये पस इस रिआयत से हम पर भी मुहब्बत करना फ़र्ज़ है।

अव्वल, तमाम जमाअत से। ग़लतीयों 6:10 में है कि सब के साथ नेकी करें खासकर अहले ईमान के साथ।

दुवम, खादिमाने दीन से जो मसीह की तरफ़ से जमाअतों का बंदो-बस्त और कलाम की खिदमत और भाईयों की खिदमत के लिए मुकर्रर हैं जिनको खुदा की रूह ने इस ओहदे के लिए चुन लिया है। जिन्होंने खुदा के लोगों से इस मन्सब की इज़ज़त पाई है, कि रसूलों और नबियों के ताइब हो कर खुदा का कलाम सुनाएँ। और दुनिया के सब कारोबार करके इसी में अपनी उम्र तमाम करें तुम उनसे मुहब्बत करो देखो खुदा ने और मसीह ने उनसे मुहब्बत की है कि ये ओहदा बख़शा है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:13 में है कि

और उनके काम के सबब मुहब्बत से उन की बड़ी इज़्जत करो और आपस में मेल मिलाप रखो।

सोइम, मुकद्दसों से मुहब्बत रखो यानी उन आदमीयों से जो खुदा की जमाअत में ईमानदार हैं और नेकी के काम किया करते हैं और कलाम के मुतीअ (ताबे) और फ़रमांबर्दार रहते हैं। 1 पतरस 3:17 में है कि सबकी इज़्जत करो बिरादरी से मुहब्बत रखो, खुदा से डरो बादशाह की इज़्जत करो।

चहारुम, हर किसी से मुहब्बत रखो और दुश्मनों को भी प्यार करो क्योंकि हम खुदा के दुश्मन थे उसने हमको प्यार किया और मुफ़्त हमारे लिए हज़रत मसीह को भेज दिया। मती 5:44 में है कि अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और अपने सताने वालों के लिए दुआ माँगो। ये उस आस्मानी मुहब्बत की तासीर है जिसको मसीह ने ज़ाहिर किया। अब ये जान लेना चाहिए कि प्यार किस तरह किया जाता है। प्यार सिर्फ़ ज़बानी नहीं होता बल्कि अमल और ख़िदमत से ज़ाहिर होता है मसलन किसी के दुख दर्द के शरीक होना और उस की खुशी में खुश और ग़म में ग़म-ज़दा होना।

उनकी ख़ताओं को बख़्शना। कमाल खाकसारी और फ़िरोतनी से उनकी ईज़ा को सब्र के साथ बर्दाश्त करना और हम्दर्दी के साथ मलामत (नसीहत) भी करना, भूकों को खाना देना, नंगों को कपड़े पहनाना, प्यासों को पानी पिलाना, बीमारों की ख़बर लेना, मुसाफ़िरों का मकान में उतारना, मीठी ज़बान से बातें करना लेकिन ना अपनी तारीफ़ और शौहरत की ग़र्ज से बल्कि सब कुछ महज़ खुदा की खातिर और खुशनुदी के लिए करना। क्योंकि खुदा ने हमसे बेरिया (खालिस) मुहब्बत की है और हम भी ये सब कुछ उसी के जलाल और बुजुर्गी के लिए करें। तब हम इस आस्मानी मुहब्बत से हिस्सा पाएँगे, वर्ना हरगिज़ नहीं। खुदावन्द तआला हम पर और सब नाज़रीन पर अपना फ़ज़ल करे कि इस मुहब्बत में हिस्सा लेकर अपने अंदर इस का असर देखें खुदावन्द मसीह के फ़ज़ल से आमीन।

रिसाला दवाज़दहुम (12)

खुदा की बुजुर्गी और जलाल के बयान में

अगर इन्सान ख्वाब-ए-गफलत से ज़रा बैदार हो कर देखे तो उसे मालूम हो जाएगा कि हमारे खुदावन्द येसू मसीह से और उस के लोगों से और उस के कलाम-ए-मुकद्दस से जिस कद्र खुदा-ए-बरतर का जलाल और उस की बुजुर्गी ज़ाहिर होती है। किसी और के कलाम से हरगिज़ ज़ाहिर नहीं होती है और ना कोई शख्स और मज़हब इस को ज़ाहिर कर सकता है। और ये भी एक कामिल रूहानी दलील है इस बात पर कि ज़रूर ये दीन खुदा ही की तरफ़ से है। इलावा कलाम-ए-इलाही के क्या अक्ल भी इस बात पर गवाही नहीं देती कि हम सब उस के बंदे हैं लिहाज़ा अपने खालिक और मालिक की ताज़ीम और बुजुर्गी ज़ाहिर करना हम पर फ़र्ज़ है जिसकी हिक्मत के आगे तमाम हुकमा की हिक्मत हीच (निकम्मा, नाकारा) है और जो अपनी कुद्रते कामिला से तमाम दुनिया और माफिहा को अदम से ख़ैर वजूद में लाया।

और जिसने अपने फ़ज़ल व करम से अन्वा व अक्साम की चीज़ें हमारे क्रियाम और बका (ज़िंदा रहना) के लिए पैदा कीं। और जिसने इतनी बड़ी ज़मीन को बगैर सहारे के खड़ा कर दिया है और अज़ामे समावी को बाहमा शान व शौकत बिखेर दिया है और जिसका इल्म इतना वसीअ है कि ज़र्रे से लेकर आफ़ताब तक और तमाम जहान की हर चीज़ को अहाता (घेरा) किया हुआ है। क्या हम ऐसे बड़े खालिक और मालिक की ताज़ीम और बुजुर्गी बयान ना करें और उस की हम्द व सना का तज़िकरा करते हुए उस का जलाल ज़ाहिर ना करें। ज़रूर हमारा फ़र्ज़ है कि हमेशा जब तक जीते हैं इस जहान में शुक्र गुज़ारी के साथ उस के कामों को देखकर उस के फ़ज़ल और हिक्मत और कुद्रत की तारीफ़ से अपनी नापाक ज़बान को पाकीज़गी दिया करें और अपनी बेहतरी के लिए ये सच्चा कायदा पेश-ए-नज़र रखें कि जो ताअलीम और जो मुअल्लिम हमारे ऐसे खालिक और मालिक की बुजुर्गी और जलाल को कमा-हक्का (जैसा उस का हक़ है) तस्लीम ना करे उस से नफ़रत और परहेज़ करें। जो कलाम और ताअलीम और जो मुअल्लिम सबसे ज़्यादा और अक्ल से भी बाला बुजुर्गी और जलाल के साथ उस की कुद्रत और शौकत का इज़हार करे उस को तलाश कर के अपनी आखिरत का ज़खीरा पैदा करें।

देखो इस नेक और ज़रूरी कायदे के मुताबिक़ तमाम झूटे मज़हब और बातिल तालीमें रद्द हो जाती हैं क्योंकि अगर इन्सान सही अक्ल और साफ़-दिल से और उस की बुजुर्गी की रियायत से दुनिया के सब मज़हबों को मुलाहिज़ा करे तो सिवाए कलाम-ए-इलाही के यानी बाइबल के, दूसरी ताअलीम ऐसी ना पाएगा। जिससे खुदा का जलाल और उस की बुजुर्गी ज़ाहिर होती हो। अहले हनूद के मज़हब की तरफ़ देखो कि उन्होंने गुनेहगार आदमीयों को जिनके चाल-चलन भी अच्छे ना थे। खुदा के अवतार (खुदा का इन्सान की शकल में आना) मान लिया और वो बदीयाँ जो उन्होंने दुनिया में कीं उनको खुदा पर जायज़ रखा। बुरे हुक्म और असनाम-परस्ती (पत्थर वगैरह के बुत की पूजा) और अशजार परस्ती (दरख्तों की पूजा) और पाती परस्ती और ज़र परस्ती (दौलत की पूजा) से उस के नाम की इज़ज़त दूसरों को दी। और उस के कलाम से दूर जा कर अपने शाइरों और राजाओं की तसानीफ़ (तहरीरों) को कलाम-ए-इलाही बना लिया। और उनकी ताज़ीम की और तरह तरह की बदकारीयाँ करना उस के हुक्म से बतलाया। और उस के नाम की हिकारत की। बाअज़ ने उस की सिफ़ात का इन्कार किया। और बाअज़ ने बावजूद इकरार के मख्लूक़ात को अपना ख़ालिक़ समझ लिया। और सज़ा के लायक़ हुए अहले-इस्लाम की तरफ़ देखो जो कहते हैं नेकी और बड़ी खुदा की तरफ़ से है उस की बुजुर्गी और जलाल को दाग़ लगाते और उस को बदी का बानी बतलाते वो जो नेकी का मम्बा है उसी को मुआविन शर (शरारत का मददगार) कहते हैं। और आप पाक बनते हैं।

हालाँकि पाकीज़गी सिर्फ़ उसी की ज़ात का ख़ास्सा है ना उनके इमामों और नबियों की लेकिन वो लोग बिला दलील (सबूत के बगैर) खुदा को बानी शर और अपने बुजुर्गी को इस से मासूम जान कर उस मुबारक़ खुदा-ए-बरतर की कुददुसियत पर ऐब लगाते हैं। हकीक़त ये है कि जब इन्सान से इस किस्म के नाकर्दनी (नाजायज़) और नाशाइस्ता (बुरे अफ़आल) सरज़द होते हैं। जिनकी माकूल वजह वो नहीं बतला सकता है तब वो ये कहता है कि ये सब कुछ खुदा की तरफ़ से है। और इस तरह खुदा को वो बानी शर बतलाता है।

इलावा बरीं ये दोनों फ़िर्के यानी हिंदू मुसलमान और इनके सिवा और वो सब फ़िर्के जो इन्सान की नजात उस के अफ़आल पर मौकूफ़ रखते हैं। वो भी उस की ताज़ीम में बंद लगाते हैं। और अपने गंदे और नापाक कामों को जो हकीक़त में नाक़िस हैं लायक़ जानते हैं। कि उस की पाक व कामिल नजात को इस के मुबादले (बदले) में हासिल

करेंगे। और मज़हबों को देखो कि वो हकीकत ही के मुन्किर (इंकारी) हैं। उन के नज़दीक कुछ हक़ और दुरुस्त हे ही नहीं। और खुदा के कामों को लगू (फुज़ूल) और बेहिक्मत जानते हैं। ये भी उस की ज़ात पर ऐब लगाते हैं। हमा औसत (हर चीज़ खुदा है) वालों को देखो कि कैसे सरकश और बागी हो गए, कि खुदा की इज़ज़त और जलाल को ना जाना बल्कि हर एक चीज़ को वो इज़ज़त और बुजुर्गी जो उसी के लायक है दे बैठे।

अक़ल परस्तों को देखो कि इल्हाम के मुन्किर हो कर उस की हिदायत और रहनुमाई को नाचीज़ जाना अपनी नाक़िस अक़ल को जो नापाक और बद-दिल के साथ उनके अंदर है ऐसी इज़ज़त और बुजुर्गी दी, कि गोया वो आप अपने ख़ालिक की हिदायत की हाजत (ज़रूरत) ही नहीं रखते। इसी तरह तमाम बातिल मज़हब और बुरी चाल के चलने वाले उस की ज़ात-ए-पाक पर ऐब (नुक़्स) लगाते हैं। अगरचे वो उम्दन (जानबूझ कर) और ब-गुमान खुद ऐसा काम ना करें। पर उनकी ताअलीम ऐसी ऐसी बातों से ये नुक़सान पैदा कर रही है और वो इन पर गौर नहीं करते और ये भी बड़ी दलील (वजह) है। इस बात पर कि उनका तरीक़ा खुदा की तरफ़ से नहीं है।

अब बाइबल की तरफ़ देखो कि इस से खुदा का कैसा आलीशान जलाल ज़ाहिर होता है। यसअयाह 6:4 में लिखा है कि, कि और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा कुददूस कुददूस कुददूस रब-उल-अफ़वाज है और सारी ज़मीन उस के जलाल के बरख़िलाफ़ और उस के सामने गुस्ताख़ी करते हैं। तो भी उस का हुलुम और बुर्दबारी (बर्दाश्त, तहम्मूल) और तौबा की मोहलत देने के लिए उस का चुप-चाप रहना उस का जलाल ज़ाहिर करता है। पाँच बातों का ज़िक़्र कलाम-उल्लाह में पाया जाता है जिनसे उस की बुजुर्गी और जलाल ज़ाहिर है :-

अव्वल, उस के नाम से उस का जलाल ज़ाहिर है क्योंकि उस का नाम दबदबा और शौक़त वाला और ख़ौफ़ और उम्मीद वाला है। और वो इन सब सिफ़तों को दिखलाता है। इस्तिस्ना 28:58 में है, कि अगर तू ध्यान रख के उस की शरीअत की सब बातों पर जो इस किताब में लिखी हैं अमल ना करेगा कि उस के जलाली और होलनाक नाम यहोवा अपने खुदा से ना डरे। तब खुदावन्द तेरी आफ़तें और तेरी औलाद की आफ़तें अजीब तरह से बढ़ा देगा।

पस ऐ भाइयो खुदावन्द का नाम बड़ा बुजुर्ग और जलाल का नाम है मुनासिब ये है कि जब हम उस का नाम लें तो उसी वक्त उस के रोब दाब से हमारे दिल लर्जा (काँप जाएं) हो जाएं। क्योंकि वो सारे नामों से बुलंद और बाला और क़वी तर (निहायत ताक़तवर) है। लोगों ने कस्रत इस्तिमाल के सबब इस पाक नाम की ताअलीम छोड़ दी है। हर वक्त का तकिया कलाम कर के कुछ उस का खौफ़ और दबदबा दिलों में नहीं देखते। बाअज़ लोग अक्सर उस के नाम की कसमें खाया करते हैं और नहीं जानते कि किस के नाम की बेइज़्ज़ती करते हैं।

राक़िम ने जब खुदावन्द मसीह की ख़िदमत में हाज़िर नहीं हुआ था। उस वक्त एक मुहम्मदी आलिम से सुना था कि खुदावन्द के नाम की ताज़ीम जैसी ईसाई लोग करते हैं ऐसी दुनिया में कोई नहीं करता। लेकिन अब मुझ पर इस आलिम की बात का भेद ज़ाहिर हुआ कि उसने सच्च कहा था। नहमियाह 9:5 में है कि खड़े हो जाओ और खुदावन्द अपने खुदा को अबद-उल-आबाद (हमेशा से हमेशा तक) मुबारक कहो। बल्कि तेरा जलाली नाम मुबारक हो जो सारी मुबारकबादी और हम्द पर बाला है। चूँकि उस का नाम जलाली है। इसलिए ख़ुरूज 20:7 में हमें हुक्म दिया है कि तू खुदावन्द अपने खुदा का नाम बेफ़ाइदा मत ले क्योंकि जो उस का नाम बेफ़ाइदा लेता है। खुदावन्द उसे बेगुनाह ना ठहराएगा।

चंद आयतों से ज़ाहिर है कि खुदा ने अपने पाक नाम को रोब के तौर पर कई जगह बयान किया है। ख़ुरूज 6:2 में है कि फिर खुदा ने मूसा को फ़रमाया और कहा मैं खुदावन्द हूँ। और यही हकीकी तफ़ाखुर (फ़ख़) ख़ुरूज 3:14 में है कि मैं वो हूँ जो मैं हूँ और उसने कहा तूम बनी-इस्राईल से यूँ कहो कि वो जो है उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। देखो कलाम-उल्लाह में ये नाम रोब के साथ मज़कूर हुआ है चाहिए जहां ये नाम मज़कूर हो फ़ौरन खौफ़ और दहशत और उम्मीद के साथ इस पर तवज्जोह करें। वर्ना नाम की बेइज़्ज़ती के बाइस सज़ा के लायक हो जाएंगे। जो लोग ऐसा नहीं करते बगावत और शैतान का तुख़्म (बीज) उनके दिलों में मौजूद रहता है। बाअज़ मुहम्मदी हदीसों में लिखा है कि मुहम्मद साहब का नाम पाक जगह में लेना मगर खुदा का नाम जहां चाहो लो कुछ डर नहीं है। देखो ये कैसी बड़ी बात है।

दोम, उस की अज़मत से उस का जलाल ज़ाहिर है। अय्यूब 37:22 में है कि और सिम्त शुमाल से सोने की सी तजल्ली (रोशनी) आती है खुदा का हैबतनाक जलाल है कादिर-ए-मुतलक जो है हम उस के भेद तक पहुंच नहीं सकते उस की कुदरत और अदालत अज़ीम हैं और उस का इन्साफ़ भी फ़िरावाँ है। यानी उस की बड़ाई जो उस की ज़ात का ख़ास्सा है उस की बुजुर्गी और जलाल को ज़ाहिर करती है। 93 ज़बूर 1 में है कि खुदावन्द सलतनत करता है। वो शौकत का ख़िलअत (लिबास) पहने हुए है उसने अपनी कमर कुव्वत से कसी (बाँधी) इसलिए जहां कायम है कि वो टलता नहीं। 104 ज़बूर 1 में है कि ऐ मेरी जान खुदावन्द को मुबारक कह ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तू निहायत बुजुर्ग है तो हश्मत और जलाल का लिबास पहने हुए है।

सोइम, खुदावन्द का जलाल उस के कामों से ज़ाहिर है यानी जो काम उसने किए या जो काम लोगों ने किए और खुदा ने उनके कामों की निस्बत उनसे कोई मुआमला बरता उन सबसे उस की अज़मत और बुजुर्गी ज़ाहिर है। 19 ज़बूर 1 में है कि आस्मान खुदा का जलाल बयान करते हैं और फ़िज़ा उस की दस्तकारी दिखलाती है। 111 ज़बूर 3 में है कि उस का काम जाह व जलाल है उस की सदाक़त अबद तक कायम है उस की कुदरत उस का जलाल ज़ाहिर करती है। ख़ुरूज 15:1 में है कि मैं खुदावन्द की हम्द व सना गाऊँगा कि उसने बड़े जलाल से अपने तई ज़ाहिर किया कि उसने घोड़े को उस के सवार समेत दरिया में डाल दिया। आयत 6 में है कि ऐ खुदावन्द तेरा दहना हाथ ज़ोर में मशहूर हुआ है ऐ खुदावन्द तेरे दहने हाथ ने बैरियों (दुश्मनों) को चूर चार किया।

चहारूम, उस की सिफ़्तों से उनकी तासीरों से उस का जलाल ज़ाहिर है रसूलों से और नबियों और मुक़द्दसों से और पेश गोइयों से और मोअजज़ात से उस की बंदगी ज़ाहिर होती है।

पंजुम, खुदावन्द ईसा मसीह से उस के जलाल ने ज़हूर पाया। यूहन्ना रसूल ने अपनी इन्जील के 1:14 में यूं ज़िक्र किया है। और मसीह की निस्बत यूं लिखा है कि कलाम यानी (खुदावन्द येसू जो अज़ल से बाप के साथ था) मुजस्सम हुआ और फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर हो कर हमारे दर्मियान रहा और हमने उस का ऐसा जलाल देखा जैसे बाप के इकलौते बेटे का जलाल। 2 कुरिन्थियों 4:6 में है कि इसलिए कि खुदा ही है जिस ने फ़रमाया कि तारीकी में से नूर चमके और वही हमारे दिलों में चमकाता कि

खुदा के जलाल की पहचान का नूर येसू मसीह के चेहरे से जलवा गर हो। इब्रानियों 1:3 में है, कि वो उस के जलाल का परतो (अक्स) और उस की ज्ञात का नक्श हो कर सब चीजों को अपनी कुद्रत के कलाम से संभालता है। वो गुनाहों को धो कर आलम-ए-बाला पर किबरिया (खुदा) की दाहिनी तरफ जा बैठा।

पस ये पाँच बातें हैं जिनसे उस का जलाल ज़ाहिर है और कोई बात इनसे बाहर नहीं है यानी उस का नाम उस का कलाम उस की अज़मत और कुद्रत उस की सिफ़ात और खुदावन्द येसू मसीह। चंद मज़मून इस इलाही जलाल के मुत्तफ़िक़ हैं।

अव्वल, ये कि उस का ये जलाल अबदी और अज़ली है। 104 ज़बूर 3 में है कि खुदावन्द का जलाल अबदी है खुदावन्द अपनी सुनअतों से खुश है।

दोम, ये कि जलाल मुस्तग़नी (आज़ाद) और बे-परवाह है। इफ़िसियों 3:16 में है कि वो अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ तुम्हें ये इनायत करे कि तुम उस की रूह से अपनी बातिनी इन्सानियत में बहुत ही ज़ोर-आवर हो जाओ यानी तुम्हारे कामों के सबब और ना किसी इस्तिहकाक़ (हक़) के बाइस बल्कि सिर्फ़ अपने जलाल के मुवाफ़िक़ ये बख़्शी।

सोइम, ये कि खुदावन्द अपने जलाल में ग़य्यूर है वो नहीं चाहता कि ये जलाल जो उस की ज्ञात-ए-पाक का ख़ास्सा है कोई दूसरा इस में दस्त अंदाज़ी करे इसी जलाल में शैतान ने दस्त अंदाज़ी की वो मलऊन (लानत किया गया) हो गया। इसी जलाल में बुत परस्तों और बे-ईमानों ने खलल डाला है कि वो जहन्नम के सज़ावार हुए इस दीनदारी का यही भेद है। और दुनिया इस से नावाक़िफ़ है जिस पर ये जलाल का भेद खुल जाता है वही दीनदार होता है। यसअयाह 42:8 में है कि यहोवा मैं हूँ ये मेरा नाम है और अपनी शौकत किसी दूसरे को ना दूंगा। और वो सताइश जो मेरे लिए होती है खोदी हुई मूरतों के लिए होने ना दूंगा।

यहां से ज़ाहिर है कि खुदा अपना जलाल किसी दूसरे को देना नहीं चाहता पस जो लोग उस का जलाल दूसरी चीजों के लिए उम्दन (जानबूझ कर) या ग़लती में पड़ कर या किसी के बहकाने से देते हैं वही सब के सब खुदा के दुश्मन और बागी हैं। मसलन माबूद होना उसी साहिब-ए-जलाल को लायक़ है। अगर कोई आदमी बुत-परस्ती या क़ब्र परस्ती

करे ख्वाह मुराक़बा (सब चीज़ों को छोड़ कर खुदा का ध्यान करना) से या ताज़ीम बेजा से या कोई शख्स फ़नानी शेख़ या फ़नानी अल-रसूल (फ़क्र का वो मर्तबा जिसमें मुरीद अपने मुर्शिद या रसूल के खयाल में डूबा रहे) होने बैठे वो खुदा का जलाल दूसरों को देता है वो खुदा की दरगाह से बागी हो कर भागा है ज़रूर वो ग़ारत हो जाएगा। जब तक वो तौबा करे और हाज़िर हो कर अपने गुनाह का इकरार ना करे। दूसरे ये कि वही कादिर-ए-मुतलक़ काबिल-ए-भरोसा है जिस का ऐसा जलाल है कि अगर कोई आदमी अपनी ताक़त या अपनी बुजुर्गी की ताक़त या रिश्तेदार भाईयों की ताक़त या किसी पीर फ़कीर की ताक़त और झूटे मज़हब पर भरोसा रखे या अमीरों का भरोसा दिल में आने दे ज़रूर खुदा का गुस्सा उस पर होगा उसने खुदा का जलाल दूसरों को दिया।

3. ये कि उसी खुदा की मुहब्बत और प्यार सबसे ज़्यादा दिल में रखना लायक़ है। क्योंकि वो साहिब-ए-जलाल है और अगर कोई आदमी दुनिया की चीज़ों को ज़्यादा प्यार करे और दुनिया के खौफ़ से उस की खिदमत में हाज़िर हो तो उसने भी खुदा का जलाल दूसरी चीज़ों को दिया अला हाज़ा-उल-क़यास इसी जलाल से इन्हिराफ़ (मुखालिफ़त) करने के बाइस हर एक गुनाह मौजूद होता है और सब तरह की बरकतें और नेअमतेँ इसी जलाल से इनायत होती हैं तमाम मुक़ददस इसी के शौक़ में सो गए और इसी पौड़ी (सीढ़ी) से फ़ज़ल की बुलंदी पर जा चढ़े। 63 ज़बूर में है कि ऐ खुदा तू मेरा खुदा है। मैं तड़के तुझे ढूँडूँगा मेरी जान तेरी प्यासी है। और मेरा जिस्म खुशक और धूप की जली हुई ज़मीन में जहान पानी नहीं तेरा मशशाकी (ख्वाहिशमंद) है ताकि तेरी कुद़्रत और तेरी हश्मत को देखे जैसा कि मैंने बैत कुददुस में देखा है। 90 ज़बूर 16 में है कि अपने काम अपने बंदों को और अपनी शौक़त उनके फ़रज़न्दों को दिखला।

चहारुम, ये कि कलीसिया ईसा खुदा के लोगों की जमाअत इसी इलाही जलाल से रोशन है। यसअयाह 60:1, 2 में है कि उठ रोशन हो कि तेरी रोशनी आई खुदावन्द तुझ पर तुलु होगा और उस का जलाल तुझ पर नमूदार होगा।

पंजुम, ये कि यही जलाल एक वक़्त में खास तौर पर ज़ाहिर होने वाला है कि तमाम ज़मीन उस से भर जाएगी। जब खुदावन्द ईसा मसीह आए। हबक़कूक़ 2:14 में है कि क्योंकि जिस तरह पानी से समुंद्र भरा हुआ है इसी तरह ज़मीन खुदावन्द के जलाल की शनासाई (वाक़फ़ीयत) से मामूर होगी।

शश्म, ये कि ये इलाही जलाल बाअज़ वक़्त इसी जहान में बाअज़ बंदों पर ज़ाहिर हुआ है मसलन मूसा पर और बाअज़ अम्बिया पर और मसीह के अहद में हवारियों पर और एक बड़ी भीड़ पर कोई शख्स ऐसा नहीं है कि उस का हकीकी जलाल देख सके हों उस की तजल्ली (रोशनी) देख सकते हैं लेकिन आखिरी वक़्त में जब मसीह आएगा। और इस जलाल के देखने के लायक बनाए तो देखेंगे। हमारे खुदावन्द येसू मसीह का जलाल इस जहान में ज़ाहिर हुआ है। और हम उस के बंदे और उस के लोग ऐसे जलाल के ज़ाहिर करने को मामूर हैं अगर कोई आदमी अपनी नजात चाहे वो हमारे खुदावन्द का जलाल ज़ाहिर करने में सई (कोशिश) करे और जनाबे मसीह के जलाल को हर वक़्त पेश-ए-नज़र रखे। देखो जनाबे मसीह का जलाल इस से ज़ाहिर है कि वो खुदा का बेटा भी था जो अज़ल में बाप से मौलूद है फिर वो बाप के साथ एक खुदा भी है खुदावंदो का खुदावन्द वो है। खुदा की माहीयत (असलियत) का नक़श वो ही है। खालिक है और वो ही मुबारक है हर नेकी का वसीला वो ही है पैगम्बर और सरदार काहिन भी वही है बादशाहों का बादशाह और हाकिमों का हाकिम और उम्मत का चौपान और कलीसिया का सरदार और इस की बुनियाद भी वो ही है सच्चाई और सच्चा नूर और सच्ची राह और हकीकी ज़िंदगी भी वही है। ये सब सिफ़तें उस के कलाम में मज़कूर हैं जिनसे उस का जलाल ज़ाहिर है और ये ज़मीन आस्मान और तमाम अम्बिया और रसूल और सब इबादात और सब दीन के मुआमलात और आदमी उस के नाकिस नमूने थे। उसी का ज़हूर अक्वल से आखिर तक है ये सब मज़ामीन भी उस का जलाल दिखलाते हैं इस के सिवा उस की पाक गुफ़्तगु और उस के सब काम और इस जहान की ज़िंदगी सब के सब उस का जलाल ज़ाहिर करते हैं। उस की जफ़ाकशी और ईज़ा की बर्दाश्त और मर के जी उठना और आदमीयों को बचाना उस का कामिल जलाल दिखलाते हैं। उस की रहमत और मेहरबानी जो उसने हम पर की है। और हम जो ग़ैर क़ौमों में से हैं। और खुदा की रहमत से दूर थे उसी ने अपने इस आली जलाल से हमें बुलाया। ये जहान उसी का है पस ऐ भाइयो आओ हम सब खुदा को जलाल दें ताकि उस के हकीकी बंदे और दोस्त बन जाएं मगर ये जलाल इलाही सिवाए कलाम इलाही के दूसरी ताअलीम से इन्सान पर ज़ाहिर नहीं हो सकता इसलिए सबकी ख़िदमत में अर्ज़ है कि मसीह के पास आओ ताकि इस इलाही जलाल से जो उस के ज़रीये ज़ाहिर हुआ है, खुदा को जलाल दें। ये आखिरी रिसाला हकीकी इफ़ान का जो फ़िल-हकीकत सच्ची शनासाई बतलाता है खुदावन्द के

जलाल और उस के नाम की अज़मत पर तमाम किया जाता है उसी का जलाल अबद-उल-आबाद हो। आमीन।